हुकूकुल इ़बाद

मुअ़ल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

हुक़ूक़ुल इबाद

मुअ़ल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

नाम किताब– हुक़ूकुल इ़बाद

मुअ़ल्लिफ़– डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

इशाअ़त– जनवरी–2026 (1447) हिजरी

कम्पोज़िंग– अमन & ज़ैनुल आ़बदीन
9897626182
9045442223

ISBN-NO- 978-93-344-4570-1

क़ीमत–250 रुपये

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

–: बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम :–

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊज़ूबिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फ़ुसिना वमिन सय्यिआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादियालहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू।

तमाम ख़ूबियाँ और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है कि जिसने अपनी रह़मत और मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ो तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्द व सना न करता हो और हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और जो अव्वल है किसी शैः से उसकी इब्तिदा नहीं हुई वो किसी शैः से मिलकर नहीं बना और वो लाज़वाल है वो हर ऐब से पाक है वो शह रग़ से भी ज़्यादा क़रीब तर है शक्लो सूरत में हर शैः से बईद तर है उसके बन्दों का कोई लम्हा उससे मख़्फ़ी नहीं इंतिहाई तारीक रात में भी ज़मीनो आसमान की जुमला अशिया उससे पोशीदा नहीं, बहुत सी आवाज़ों का जमाअ़ होना उसे–

परेशान व हैरान नहीं कर सकता मुख़्तलिफ़ ज़बानों का सुनना उसको किसी एक से मशगूल नहीं करता और जो बग़ैर आज़ा के सबकी सुनता है और वो कायनात की हर शैः का अ़ालिम है और वो हय्युल क़य्यूम ज़ात है तमाम आसमान व ज़मीन पर उसी की बादशाहत है और वो अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है।

दुरुदो सलाम हो रहमते दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर जो ज़ाहिर व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐबो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो अ़ालम में उजाला है जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तअ़ाला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर क़यामत के दिन प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे और अल्लाह तअ़ाला ने अपने हबीब को औसाफ़ो अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बियाकिराम अ़लैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुज़ूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है।

अल्लाह तअ़ाला की बेशुमार रहमत व सलामती हो अह्ले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो क़यामत के दिन मुहिब्बाने अह्ले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़तो मुसीबत के दरमियान ढाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुताह्रात और आपकी आल व असहाब और जुमला औलिया किराम व सूफ़िया इ़ज़ाम और उन पर जो अल्लाह के मुक़र्रब मख़सूस बन्दे हैं।

–: तम्हीद :–

अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हुकूकुल इ़बाद की अदायगी की हमें इस क़दर ताकीद फ़रमाई है कि बाअ़ज़ हुकूक़ हम पर फ़र्ज़ कर दिये हैं मगर अफ़सोस मुसलमानों की लाइ़ल्मी व नफ़्स की पैरवी के सबब अक्सर लोग हुकूकुल इ़बाद के अहकाम पर अ़मल पैरा नहीं अक्सर लोग दुनियावी मालो मताअ़ और दुनियावी ताअ़लीम हासिल करने की तरफ़ मुतावज्जै हैं मगर शरअ़ई अहकाम व मसाइल व दीनी उ़लूम से बेरग़बत हैं जिसके सबब से जिस क़दर कुरान व अहादीसे नबवी में हुकूकुल इ़बाद की ताकीद फ़रमाई गई उस क़दर उसकी अदायगी का इहतिमाम अ़ाम तो अ़ाम ख़ास भी नहीं करते

दीन इस्लाम में जो मुअ़तदिल व खूबसूरत हुकूक़ व फ़राइज़ की अदायगी रखी गई वो किसी और दीन में देखने को भी नहीं मिलती कुरानो सुन्नत में इस फ़रीज़े की अदायगी के मुताअ़ल्लिक़ बेशुमार अहकाम मज़कूर हैं मगर आज हालात ऐसे हैं कि लोग इस फ़रीज़े को अन्जाम नहीं देते दीन इस्लाम ने तरज़े ज़िन्दगी की जो ताअ़लीम हमें दी है वो सादगी परहेज़गारी और फ़राइज़ व हुकूक़ की अदायगी पर मुश्तमिल एक बेमिस्ल और निहायत ही बेहतरीन ज़िन्दगी है और जो शख़्स इस पर अ़मल पैरा हो जाये तो वो कामयाब शख़्स है और उसके लिये दुनिया व आख़िरत में ख़ैर और निजात है

फ़कीर
डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी
9897626182

वालिदैन के हुकूक़ कुरान की रौशनी में

–: वालिदैन से हुस्ने सुलूक :–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और हमने इन्सान को उसके वालिदैन से नेक सुलूक करने का हुक्म फ़रमाया है। (सूरह–अ़नकबूत–29/8)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और (याद करो) जब हमने औलादे याअ़क़ूब से पुख़्ता वाअ़दा लिया कि अल्लाह के सिवा (किसी की) इ़बादत न करना और माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करना और क़राबत दारों और यतीमों और मुहताजों के साथ भी (भलाई करना) और आ़म लोगों से (भी नरमी और खुश खुल्क़ी के साथ) नेकी की बात कहना और नमाज़ क़ायम रखना व ज़कात देते रहना फिर तुममें से चन्द लोगों के सिवा सारे (इस अ़हद से) रुगरदाँ हो गये। (सूरह–बक़राह–2/83)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और तुम अल्लाह की इ़बादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो और माँ बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों और नज़दीकी हमसाये व अजनबी पड़ोसी और हम मजलिस और मुसाफ़िर (के साथ भलाई करो)। (सूरह–निसा–4/36)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और हमने इन्सान को उसके वालिदैन के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म फ़रमाया है उसकी माँ ने उसको

तकलीफ़ से (पेट में) उठाये रखा और उसे तकलीफ़ के साथ जना और उसका (पेट में) उठाना व उसका दूध छुड़ाना (यानी ज़माना हमल व रज़ाअ़त) तीस माह पर मुश्तमिल है यहाँ तक कि वो अपनी जवानी को पहुँच जाता है और फिर चालीस साल (की पुख़्ता उ़मर) को पहुँच जाता है तो कहता है ऐ मेरे रब मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे एहसान का शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर किया है और ये कि मैं ऐसे नेक आअ़माल करूँ जिनसे तू राज़ी हो और मेरे लिये मेरी औलाद में नेकी और ख़ैर रख दे बेशक मैं तेरी तरफ़ रुजूअ़ करता हूँ और मैं यक़ीनन फ़रमां बरदारों में से हूँ (तो) यही वो लोग हैं कि जिनके नेक आअ़माल हम कुबूल करते हैं और उनकी कोताहियों से दरगुज़र करते हैं यही अह्ले जन्नत हैं ये सच्चा वाअ़दा है जो उनसे किया जा रहा है। (सूरह–अहक़ाफ़–46/15,16)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और हमने इन्सान को उसके वालिदैन के बारे में (नेकी करने का) ताकीदी हुक्म फ़रमाया है जिसे उसकी माँ तकलीफ़ पर तकलीफ़ की हालत में (वो अपने पेट में) बर्दाश्त करती रही व जिसका दूध छुड़ाना भी दो साल में है (व उसे ये हुक्म दिया) कि तू मेरा भी शुक्र अदा कर और अपने वालिदैन का भी (शुक्र अदा कर) तुझे मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है।
(सूरह–लुक़मान–31/14)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

तुम उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराओ और माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करो।
(सूरह–अनआ़म–6/151)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
आपके रब ने हुक्म फ़रमां दिया है कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इ़बादत न करो और वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक किया करो अगर तुम्हारे सामने दोनों में से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जायें तो उन्हें 'उफ़' भी न कहना न ही उन्हें झिड़कना और उन दोनों के साथ बड़े अदब से बात किया करो और उन दोनों के लिये नरम दिली से इ़ज्ज़ व इन्किसारी के बाजू झुकाये रखो और (अल्लाह के हुजूर) अ़र्ज़ करते रहो ऐ मेरे रब इन दोनों पर रहम फ़रमां जैसा कि इन्होंने बचपन में मुझे (रहमत व शफ़क़त से) पाला था (और) तुम्हारा रब उन बातों से खूब आगाह है जो तुम्हारे दिलों में है अगर तुम नेक सीरत हो जाओ तो बेशक वो (अल्लाह अपनी तरफ़) रुजूअ़ करने वालों को बड़ा बख़्शने वाला है। (सूरह–बनी इसराईल–17/23 ता 25)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
आप से पूछते हैं कि (अल्लाह की राह में) क्या ख़र्च करें फ़रमादें जिस क़दर भी माल ख़र्च करो (दुरस्त है) मगर उसके हक़दार तुम्हारे माँ बाप हैं और क़रीबी रिश्तेदार और यतीम हैं और मुहताज हैं और मुसाफ़िर हैं और जो नेकी तुम करते हो बेशक अल्लाह तआ़ाला उसे खूब जानने वाला है। (सूरह–बक़राह–2/215)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
ऐ मेरे रब मेरी औलाद को नमाज़ क़ायम रखने वाला बनादे ऐ हमारे रब तू मेरी दुआ़ा कुबूल फ़रमाले ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मेरे वालिदैन को बख़्श दे और दीगर सब मोमिनों को भी (बख़्श दे) जिस दिन हिसाब क़ायम होगा। (सूरह–इब्राहीम–4/41)

वालिदैन के हुकूक़ अहादीस की रौशनी में

-: वालिदैन से हुस्ने सुलूक :-

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम से दरयाफ़्त किया कि अल्लाह तआ़ला को कौन सा अ़मल ज़्यादा पसंद है तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वक़्त पर नमाज़ अदा करना और वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करना और राहे खुदा में जिहाद करना। (बुख़ारी–सहीह–5/571–ह०-5970)
(मुस्लिम–सहीह–1/189–ह०-252)
(नसाई–सुनन–1/260–ह०-614)

➡ हज़रत मुआ़ज़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अपने वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक किया तो उसको खुश ख़बरी हो अल्लाह तआ़ला उसकी उ़म्र लम्बी फ़रमाये।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/780–ह०-7257)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों की औ़रतों को पाक दामन रखो बदले में तुम्हारी औ़रतों को पाक दामन रखा जायेगा और तुम अपने वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करो बदले में तुम्हारी औलाद तुम्हारे साथ हुस्ने सुलूक करेगी (हाकिम–मुस्तदरक–5/780–ह०-7258)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से बयान फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझे कोई वसीयत फ़रमांयें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया नमाज़ क़ायम करो ज़कात अदा करो रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखो बैतुल्लाह का हज व उ़मराह करो और अपने माँ बाप के साथ हुस्ने सुलूक करो और सिला रहमी करो और मेहमानों की ख़िदमत करो भलाई का हुक्म दो बुराई से मनाअ़ करो और हमेशा अह्ले हक़ का साथ दो।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/790–ह०-7276)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अपनी माँ के साथ, अपने बाप के साथ, अपनी बहन के साथ व अपने भाई के साथ हुस्ने सुलूक करो और (रिश्तेदारी के कुर्ब के मरातिब का लिहाज़ करते हुये) जो ज़्यादा क़रीबी हो वो ज़्यादा हुस्ने सुलूक का मुस्तहिक़ है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/774–ह०-7245)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/68–ह०-47)

➡ हज़रत मिक़दाम बिन माअ़दी करब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सुना आप फ़रमां रहे थे कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें तुम्हारी माँओं के बारे में भलाई की वसीयत करता है ये दो बार फ़रमाया फिर तुम्हारे वालिदों के बारे में भलाई की वसीयत फ़रमाता है और बाद अज़ां दर्जा ब दर्जा क़रीबी लोगों के बारे में भलाई की वसीयत फ़रमाता है।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/76–ह०-60)

वालिदैन से अच्छा सुलूक करने वाले की दुआ़ कुबूल होती है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक बार तीन आदमी कहीं जा रहे थे कि उन्हें बारिश ने आ लिया तो वो पहाड़ की ग़ार में घुस गये फिर ग़ार के मुँह पर एक बहुत बड़ी चट्टान आ गिरी जिससे उसका मुँह बन्द हो गया फिर उन्होंने एक दूसरे से कहा तुमने जो नेक काम किये हैं उनमें से जो ख़ालिस अल्लाह के लिये किये है उसे ज़हन में लाओ फिर उसके वसीले से अल्लाह तआ़ला के हुजूर दुआ़ करो मुम्किन है कि अल्लाह तआ़ला ग़ार को खोल दे

चुनांचा एक ने कहा ऐ अल्लाह मेरे वालिदैन बूढ़े थे और मेरे छोटे छोटे बच्चे भी थे मैं उनके लिये बकरियाँ चराता था पस जब मैं शाम को उनके पास आता तो बकरियों का दूध निकालकर अपने वालिदैन से उसकी इब्तिदा करता उसके बाअ़द अपने बच्चों को पिलाता था एक दिन दरख़्तों की तलाश में मैं बहुत दूर चला गया और शाम को बहुत देर से घर आया मैंने वालिदैन को देखा वो सो गये थे पस मैंने हस्बे माअ़मूल दूध निकाला फिर ताज़ा दूध लेकर वालिदैन के सिरहाने खड़ा हो गया मुझे ये गवारा न था कि उन्हे बेदार करूँ और ये भी पसंद नहीं था कि मैं उनसे पहले अपने बच्चों को दूध पिलाऊँ तो ऐ अल्लाह अगर ये अ़मल मैंने तेरी रिज़ा के लिये किया था तो हमारे लिये कुछ रास्ता खोल दे ताकि हम आसमान देख सकें चुनांचा अल्लाह तबारक–

व तआ़ला ने उनके लिये इतनी कुशादगी पैदा कर दी कि वो आसमान देख सकें।

फिर दूसरे ने कहा ऐ अल्लाह मेरी एक चचाज़ाद बेटी थी जिससे मैं बहुत मुहब्बत करता था जिस तरह लोग औ़रतों से मुहब्बत करते हैं मैंने उससे उसके नफ़्स का मुतालबा किया तो उसने इन्कार कर दिया वो सिर्फ़ इस शर्त पर राज़ी हुई कि मैं उसे सौ दीनार दूँ मैंने दौड़ धूप करके दीनार जमाअ़ किया और उन्हें लेकर उसके क़रीब गया तो उसने कहा अल्लाह के बन्दे अल्लाह से डर और ऐसा काम न कर चुनांचा मैं ये सुनकर उससे अलग हो गया ऐ अल्लाह अगर मैंने ये अ़मल महज़ तेरी रिज़ा के लिये किया था तो हमारे लिये कुछ और कुशादगी पैदा करदे तो अल्लाह तआ़ला ने उनके लिये कुछ मज़ीद कुशादगी पैदा फरमां दी

फिर तीसरे शख़्स ने कहा ऐ अल्लाह मैंने एक मज़दूर को कुछ चावल की मज़दूरी पर रखा था तो जब उसने अपना काम पूरा कर लिया तो कहा कि मुझे मेरा हक़ दो मैंने उसका हक़ पेश कर दिया लेकिन वो छोड़ कर चला गया उसके बाअ़द मैं उससे खेती करता रहा हत्ता कि मैंने उससे बैल गायें और एक चरवाहा ख़रीद लिया कुछ मुद्दत के बाअ़द वो मज़दूर मेरे पास आया और कहा मेरा हक़ मुझे वापस करदें मैंने कहा ये बैल गायें और चरवाहा सब ले जाओ चुनांचा वो सब लेकर चला गया पस ऐ अल्लाह अगर मैंने ये अ़मल तेरी रिज़ा के लिये किया था तो जो रुकावट बाक़ी रह गई है उसे भी खोल दे चुनांचा अल्लाह तआ़ला ने बाक़ी पत्थर उनसे हटा दिया। (बुख़ारी–सहीह–5/573–ह०-5974)
(मुस्लिम–सहीह–5/212–ह०-6949)

–: वालिद के दोस्त से नेक सुलूक :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सबसे बेहतर सुलूक ये है कि आदमी अपने वालिद के दोस्त से नेक सुलूक करे। (मुस्लिम–सहीह–6/192–ह०-6514)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1024–ह०-1903)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/68–ह०-41)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं मैं सफ़र में था कि एक ऐअ़राबी भी मेरा हम सफ़र था और उसका बाप मेरे वालिद का दोस्त था ऐअ़राबी ने कहा आप फुलां के बेटे तो नहीं हैं मैंने कहा हाँ (आपने सही पहचाना) तो हज़रत इब्ने ड़मर ने सवारी करने के लिये एक गधा उनको दे दिया और अपनी दस्तार उतार कर देदी तो एक साथी कहने लगा कि उसे दो दिरहम दे दिये होते तो काफ़ी न थे हज़रत इब्ने ड़मर ने कहा कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सुना है कि अपने वालिद के दोस्तों से तअ़ाल्लुक़ न तोड़ना वरना अल्लाह तआ़ला तुम्हारा नूर छीन लेगा।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/68–ह०-40)

–: बाअ़द वफ़ात वालिदैन के हुक़ूक़ :–

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि वालिदैन के फ़ौत होने के बाअ़द भी मुझ पर उनका हक़ बाक़ी रहता है कि–

उनके साथ हुस्ने सुलूक करता रहूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हाँ वालिदैन के फ़ौत होने के बाअ़द उनका हक़ ये है कि उनके लिये दुआ़ करो और उनके लिये बख़्शिश माँगो और उनके बाद उनके अ़हद को पूरा करो और उनके ख़ास रिश्तेदारों से मेल मिलाप रखो कि उन (माँ बाप के) के बग़ैर उनसे मेल मिलाप नहीं हो सकता था और उनके दोस्तों की इ़ज़्ज़त करो।
(अबू दाऊद–सुनन–6/840–ह०-5142)
(इब्ने माजा–सुनन–3/180–ह०-3664)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/781–ह०-7260, 7261)

–: औलाद पर माँ का हक़ ज़्यादा :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि हम लोगों में सबसे ज़्यादा किसके साथ हुस्ने सुलूक करें कौन मेरे अच्छे सुलूक का सबसे ज़्यादा हक़दार है तो रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि वालिदा के साथ फिर अ़र्ज़ किया गया उनके बाअ़द फ़रमाया वालिदा के साथ फिर अ़र्ज़ किया गया उनके बाअ़द फ़रमाया वालिदा के साथ इस तरह तीन बार फ़रमाया फिर अ़र्ज़ की किसके साथ फ़रमाया वालिद के साथ। (बुख़ारी–सहीह–5/571–ह०-5971)
(मुस्लिम–सहीह–6/187–ह०-6500)
(इब्ने माजा–सुनन–3/178–ह०-3658)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1021–ह०-1898)
(अबू दाऊद–सुनन–6/839–ह०-5139)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/773–ह०-7242)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/570–ह०-434)

रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने माँ के हुकूक़ को वालिद से तीन गुना बताया और बाप के हुकूक़ को एक चौथाई बताया और आपने माँ को बाप पर इसलिये मुक़द्दम किया कि माँ बच्चे के साथ सबसे ज़्यादा मुहब्बत और मेहनत करती है हमल के नौ महीने फिर बच्चे का जनना फिर दूध पिलाना और बीमारी व परेशानी में ख़बर लेना वग़ैराह लेकिन बाप जन्नत में दाख़िले का बेहतरीन दर'वाज़ा क़रार दिया।

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह औ़रत पर सबसे ज़्यादा हक़ किसका है तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उसके शौहर का फिर मैंने अ़र्ज़ की कि मर्द पर सबसे ज़्यादा हक़ किसका है तो हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उसकी माँ का (हाकिम–अल मुस्तदरक–5/820–ह०-7338)

वालिदैन से अच्छा सुलूक जन्नत के क़रीब कर देता है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कौन से आअ़्माल जन्नत के क़रीब करने वाले हैं तो आपने फ़रमाया कि वक़्त पर नमाज़ अदा करना फिर मैंने अ़र्ज़ किया और क्या तो हजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करना।
(मुस्लिम–सहीह–1/183–ह०-253)

–: वालिदैन तुम्हारी जन्नत दोज़ख़ :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि वालिदैन का औलाद के ज़िम्मे क्या हक़ है तो आपने फ़रमाया कि वो तुम्हारी जन्नत भी होते हैं और दोज़ख भी होते हैं (यानी तू अगर चाहे तो उनकी फ़रमां बरदारी करके जन्नत का दरवाज़ा खोल ले या फिर उनकी नाफ़रमानी करके दोज़ख़ का दर‘वाज़ा अपने लिये खोल ले)
(इब्ने माजा–सुनन–3/177–ह०-3662)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि उनके पास एक शख़्स आया और उसने कहा मेरा बाप हुक्म देता है कि मैं अपनी बीवी को तलाक़ दे दूँ तो हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सुना है कि बाप जन्नत के बीच का दर‘वाज़ा है पस अगर तू चाहे उसे ज़ाया कर दे या उसकी हिफ़ाज़त कर।
(इब्ने माजा–सुनन–3/179–ह०-3663)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1022–ह०-1899)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) ने फ़रमाया कि जिस मुसलमान के वालिदैन हों और वो सवाब की नियत से उनकी ख़िदमत करे तो अल्लाह तअ़ाला जन्नत में दाख़िल होने के लिये उसकी ख़ातिर दो दर‘वाज़े खोल देता है और अगर उन दोंनों में से एक मौजूद हो तो उससे अच्छा सुलूक करने पर एक–

दर'वाज़ा खोला जाता है इसके बर अ़क्स अगर उसने वालिदैन में से किसी एक को भी नाराज़ कर दिया तो अल्लाह तआ़ला उस वक़्त तक राज़ी नहीं होता जब तक कि वो उन्हें राज़ी न करे कहा गया अगरचा वो उस पर ज़्यादती ही क्यों न करें अगरचा वो उस पर ज़्यादती ही क्यों न करें।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/52–ह०-07)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने तीन मर्तबा फ़रमाया कि ऐसा शख़्स ज़लील हो लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह ये किसके बारे में फ़रमां रहे हैं तो आपने फ़रमाया कि ये मैं उस शख़्स के बारे में कह रहा हूँ जिसे बुढ़ापे की हालत में वालिदैन की ख़िदमत का मौक़ाअ़ मिले और वो फिर भी दोज़ख़ में चला जाये।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/58–ह०-21)

–: जन्नत माँ के क़दमों के नीचे :–

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) कहते हैं कि मैं हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ मैंने अ़र्ज़ किया कि मैंने जिहाद में शिर्कत का इरादा किया है तो आपने फ़रमाया कि क्या तुम्हारी माँ ज़िन्दा है मैंने कहा जी हाँ तो आपने फ़रमाया कि तुम उनकी ख़िदमत करो क्योंकि जन्नत माँ के क़दमों के नीचे है।
(नसाई–सुनन–5/42–ह०- 3106, 3109)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/776–ह०-7248)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/269–ह०-2611)

तीन क़िस्म के लोग जन्नत में नहीं जायेंगे

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तीन क़िस्म के लोग जन्नत में नहीं जायेंगे एक वालिदैन की नाफ़रमानी करने वाला व दूसरा हमेशा शराब पीने वाला व तीसरा एहसान करके एहसान जताने वाला। (नसाई–सुनन–2/166–ह०-2566)

वालिदैन की ख़िदमत से उ़म्र दराज़ होती है

➡ हज़रत मुआ़ज़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने वालिदैन से भलाई करे उसे मुबारक हो अल्लाह तआ़ला उसकी उ़म्र में बरकत फ़रमां देता है और वो बढ़ जाती है।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/58–ह०-22)

वालिदैन की ख़िदमत एक बेहतर और मक़बूल अ़मल

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में एक शख़्स ने हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं आपके दस्ते अक़दस पर हिजरत और जिहाद पर बैअ़त करता हूँ और अल्लाह तआ़ला से उसका अज्र तलब करता–

हूँ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या तुम्हारे वालिदैन ज़िन्दा हैं उसने कहा जी हाँ आपने फ़रमाया तुम अपने वालिदैन के पास जाओ और अच्छे सुलूक व अच्छे बरताव से उनके साथ रहो। (मुस्लिम–सहीह–5/26–ह०-6507)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में एक शख़्स ने हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं आपके पास हिजरत पर बैअ़त के लिये आया हूँ और अपने वालिदैन को रोता हुआ छोड़ आया हूँ तो नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उनके पास जाओ और उन्हें हंसाओ और खुश करो जैसे तूने उन्हें रुलाया है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/77–ह०-2528)
(नसाई–सुनन–6/184–ह०-4168)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/776–ह०-7250, 7255)
(इमाम बुख़ारी–अलअदब अलमुफ़रद–1/55–ह०-13,19)

वालिदैन की ख़िदमत से हज व जिहाद का सवाब मिलता है

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के पास एक शख़्स आया और उसने अ़र्ज़ किया कि मैं जिहाद करना चाहता हूँ लेकिन मैं इसकी ताक़त नहीं रखता तो अपने फ़रमाया कि क्या तेरे वालिदैन में से कोई ज़िन्दा है उसने अ़र्ज़ किया मेरी वालिदा ज़िन्दा है तो आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने तेरा उज्र कुबूल

कर लिया है माँ की ख़िदमत की वजह से अगर तू माँ की ख़िदमत करेगा तो तुझे हज व उ़म्राह और जिहाद का सवाब मिलेगा बशर्ते ये कि तेरी माँ तुझसे राज़ी हो और अल्लाह से डर और माँ के साथ भलाई कर।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/439–ह०-2915)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/169–ह०-7835)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से एक शख़्स ने जिहाद में जाने की इजाज़त तलब की आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या तेरे वालिदैन ज़िन्दा हैं उसने कहा जी हाँ तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया फिर उनकी ख़िदमत बजा लाने में जिहाद कर यही तेरा जिहाद है।
(बुख़ारी–सहीह–3/320–ह०-3004, 5972)
(मुस्लिम–सहीह–5/26–ह०-6504)
(अबू दाऊद–सुनन–3/78–ह०-2529)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तेरा चारपाई पर आराम करना इस हाल में कि तुम अपने वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करते हो व उन्हें हंसाते हो और खुश रखते हो तो तेरा चारपाई पर सोना अफ़ज़ल है तेरे लिये अल्लाह की राह में तलवार से जिहाद करने से। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/170–ह०-7836)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि एक शख़्स यमन से हिजरत करके हुज़ूर

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने उस शख़्स से पूछा कि यमन में तेरा कोई है तो उसने कहा मेरे माँ बाप हैं तो आपने फ़रमाया उनके पास वापस जाओ और उनसे इजाज़त तलब कर अगर वो इजाज़त देदें तो जिहाद कर वरना उनकी ख़िदमत कर (अबू दाऊद–सुनन–3/78–ह०-2530)

वालिदैन की मुहब्बत व ख़िदमत फ़र्ज़े ऐ़न है जबकि जिहाद फ़र्ज़े किफ़ाया है इसलिये रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने वालिदैन की ख़िदमत को जिहाद पर फ़ौक़ियत दी है।

➡ हज़रत ख़िदास बिन सलामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं आदमी को उसकी माँ की ख़िदमत की ताकीद करता हूँ मैं आदमी को उसकी माँ की ख़िदमत की ताकीद करता हूँ मैं आदमी को उसकी माँ की ख़िदमत की ताकीद करता हूँ मैं आदमी को उसके गुलाम के साथ हुस्ने सुलूक की ताकीद करता हूँ।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/774–ह०-7243)

वालिदैन को मुहब्बत व शफ़क़त से देखने से हज का सवाब मिलता है

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो अपने वालिदैन के चेहरे को नज़रे शफ़क़त और मुहब्बत से देखता है तो उसकी हर एक नज़र के बदले एक मक़बूल हज लिख–

दिया जाता है तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि अगर वो हर रोज़ सौ बार इस तरह नज़र डाले तो आपने फ़रमाया तो उसे सौ हज का सवाब मिलेगा।
(मिश्कात–3/99–ह०-4944)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/175–ह०-7856, 7859)

वालिदैन की नाफ़रमानी सबसे बड़ा गुनाह

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें सबसे बड़े गुनाह की ख़बर न दूँ सहाबाकिराम ने अ़र्ज़ किया क्यों नहीं आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह के साथ शिर्क करना और वालिदैन की नाफ़रमानी करना, झूटी बात कहना और झूटी गवाही देना। (मुस्लिम–सहीह–1/186–ह०-259) (बुख़ारी–सहीह–5/716–ह०-6273, 5976, 5977)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सबसे बड़े गुनाह ये हैं अल्लाह के साथ शिर्क करना और वालिदैन की नाफ़रमानी करना और नाहक़ क़त्ल करना व झूटी क़सम खाना और झूटी गवाही देना।
(बुख़ारी–सहीह–6/162–ह०-6675, 6871)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझे दस चीज़ों की वसीअ़त फ़रमाई कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करना ख़्वाह तुम्हें क़त्ल कर–

दिया जाये या आग में जला दिया जाये और वालिदैन की नाफ़रमानी न करना ख़्वाह तुम्हें तुम्हारे घर व माल से निकल जाने का हुक्म दे दें और फ़र्ज़ नमाज़ को जानबूझ कर न छोड़ना क्योंकि जो शख़्स जानबूझ कर फ़र्ज़ नमाज़ को तर्क कर देता है उससे अल्लाह तआ़ला की ज़िम्मेदारी ख़त्म हो जाती है और शराब नोशी न करना क्योंकि ये हर बुराई की जड़ है और गुनाहों से बचना क्योंकि गुनाहों की वजह से अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी उतरती है और मैदाने जंग से पीठ फेरकर भागने से बचना ख़्वाह तमाम लोग मारे जायें और किसी इलाक़े में मौत की वबा फैल जाये और तुम वहाँ पहले से मौजूद हो तो वहीं साबित क़दम रहना और अपने अह्ले ख़ाना पर अपना माल ख़र्च करना व उन्हें अदब सिखाना और उनके दिलों में अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ पैदा करते रहना। (मुस्नद अहमद–10/360–ह०-22425)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने तुम पर माँ की ना फ़रमानी को हराम क़रार दिया है और (वालिदैन के हुकूक़) अदा न करना और नाहक़ उनसे मुतालिबात करना भी हराम क़रार दिया है और अल्लाह तआ़ला फ़िजूल बातें और कसरते सुवाल और माल की बर्बादी को नापसंद करता है। (बुख़ारी–सहीह–5/575–ह०-5975)

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसमें ये तीन चीज़ें हों उसको उसका अ़मल नफ़ा नहीं देगा 1- अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराने वाला 2-वालिदैन का नाफ़रमान 3-जंग से भागने वाला (तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/665–ह०-1404)

माँ बाप के नाफ़रमान पर अल्लाह तआ़ला की लाअ़नत

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला की लाअ़नत हो उस शख़्स पर ज़िब्हा के वक़्त जानवर पर ग़ैरुल्लाह का नाम ले और अल्लाह तआ़ला की लाअ़नत हो माँ बाप के नाफ़रमान पर और अल्लाह तआ़ला की लाअ़नत हो उस शख़्स पर जो हुदूद तोड़े।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/778–ह०-7254)

माँ बाप के नाफ़रमान को दुनिया में सज़ा

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर गुनाह की सज़ा को क़यामत तक के लिये मुअख़्ख़र किया जा सकता है लेकिन माँ बाप की नाफ़रमानी की सज़ा मरने से पहले ही दी जाती है। (कंज़ुल उ़म्माल–8/611–ह०-45545)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/785–ह०-7263)

वालिदैन की नाहक़ इताअ़त जाइज़ नहीं

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और हमने इन्सान को उसके वालिदैन से नेक सुलूक का हुक्म फ़रमाया है और अगर वो तुझ पर ये कोशिश करें कि तू मेरे साथ उस चीज़ को शरीक ठहराये जिस का तुझे कुछ भी इ़ल्म नहीं तो उनकी इताअ़त मत कर
(सूरह–अ़नकबूत–29/08)

–: तीन दुआ़ऐं कुबूल होती हैं :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तीन क़िस्म के लोगों की दुआ़ऐं बिला शको व शुबाह मक़बूल हैं मज़लूम की दुआ़, मुसाफ़िर की दुआ़ और बाप की अपनी औलाद के हक़ में दुआ़। (इब्ने माजा–सुनन–3/244–ह०-3862)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/931–ह०-3448)
(अबू दाऊद–सुनन–2/207–ह०-1536)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/63–ह०-32)

➡ हज़रत उम्मे हकीम बिन्ते वद्दाअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वालिद की दुआ़ औलाद के हक़ में (अल्लाह के ख़ास) हिज़ाब तक पहुँच जाती है यानी कुबूल होती है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/244–ह०-3863)

वालिदैन को नाराज़ करना बड़ा गुनाह

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या मैं तुमसे बड़े से बड़े गुनाह का बयान न करूँ अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह बयान फ़रमायें पस रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात में किसी को शरीक करना और अपने माँ बाप को नाराज़ करना।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1023–ह०-1901)

अल्लाह तआ़ला की रिज़ा वालिद की रिज़ा में है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की रिज़ा वालिद की रिज़ा में है और अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी वालिद की नाराज़गी में है।

(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1023–ह०-1900)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/776–ह०-7249)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/50–ह०-02)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/567–ह०-429)
(कंजुल उ़म्माल–8/611–ह०-45552)

तीन बातों पर अ़मल न करने के सबब दोज़ख़ में दाख़िला

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हुये और फ़रमाया आमीन आमीन आमीन आपसे अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह क्या वजह है कि आपने आमीन आमीन आमीन कहा तो आपने फ़रमाया कि जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) मेरे पास आये और कहा कि जो शख़्स रमज़ान का महीना पाये और उसकी बख़्शिश न हो और वो दोज़ख़ में दाख़िल हो जाये तो अल्लाह तआ़ला उसे अपनी रहमत से दूर करे जिबरईल ने कहा आप आमीन कहें तो मैंने आमीन कहा फिर कहा कि जिसने अपने माँ बाप या दोंनों में से एक को पाया और उनसे

हुस्ने सुलूक से पेश न आया और मर गया तो दोज़ख़ की आग में दाख़िल हो गया रब तआ़ला उसे अपनी रहमत से दूर करे आप इस पर आमीन कहें पस मैंने आमीन कहा फिर कहा वो शख़्स जिसके सामने आप का ज़िक्र हुआ हो और उसने आप पर दुरुद न भेजा और मर गया तो वो जहन्नम की आग में दाख़िल हो गया तो अल्लाह तआ़ला उसे अपनी रहमत से दूर रखे आप इस पर आमीन कहें पस मैंने आमीन कहा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/779–ह०-7256)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/243–ह०-2022)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–9/70–ह०-8994)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/157–ह०-3871)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–2/79–ह०-907)
(इब्ने खुज़ैमा–सहीह–3/364–ह०-1888)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/1623–ह०-5922)
(मुस्नद बज़्ज़ार–4/240–ह०-1405)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उसकी नाक ख़ाक आलूदा हो जो अपने माँ बाप या उन दोंनों में से कोई एक को पाये और उनकी ख़िदमत करके जन्नत में न जाये। (मुस्लिम–सहीह–6/192–ह०-6510)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/183–ह०-7884)

–: बाप अपने बेटे के माल का हक़दार :–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

आपसे पूछते हैं कि (अल्लाह की राह में) क्या ख़र्च करें फ़रमादें जिस क़दर भी माल ख़र्च करो (दुरस्त है)

मगर उसके हक़दार तो तुम्हारे माँ बाप हैं और क़रीबी रिश्तेदार हैं और यतीम और मुहताज हैं और मुसाफ़िर हैं और जो भी नेकी तुम करते हो बेशक अल्लाह उसे खूब जानने वाला है। (सूरह–बक़राह–2/215)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सबसे पाकीज़ा माल वो है जो तुम अपने हाथों की मज़दूरी से खाते हो और तुम्हारी औलाद भी तुम्हारी मज़दूरी में दाख़िल है यानी तुम्हारे बेटों का माल भी तुम्हारा ही है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/749–ह०-1358)
(अबू दाऊद–सुनन–4/772–ह०-3528, 3529)
(नसाई–सुनन–3/285–ह०-4456, 4459)

➡ एक शख़्स नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में आया और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरे पास माल है और औलाद भी और मेरे वालिद मेरे माल के ज़रुरत मंद रहते हैं यानी वो मुझसे माल लेते रहते हैं तो आपने फ़रमाया तुम और तुम्हारा माल तुम्हारे वालिद का है बेशक तुम्हारी औलादें तुम्हारी बेहतरीन कमाई हैं चुनांचा तुम अपनी औलाद की कमाई खा सकते हो।
(अबू दाऊद–सुनन–4/773–ह०-3530)

बेटा बाप का हक़ अदा नहीं कर सकता

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई बेटा अपने–

बाप का हक़ अदा नहीं कर सकता मगर एक सूरत में कि बेटा अपने बाप को गुलाम पाये तो बेटा अपने बाप को ख़रीद कर आज़ाद करदे (मुस्लिम–4/152–ह०-3799) (अबू दाऊद–सुनन–6/838–ह०-5137) (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1026–ह०-1906)

बेटे का बाप पर और बाप का बेटे पर हक़

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने सालिहीन का नाम अबरार रखा है क्योंकि वो अपने आबा और बेटों से भलाई किया करते हैं कि जैसे तुम्हारे वालिद का तुम पर हक़ है वैसे ही तुम पर तुम्हारे बेटे का भी हक़ है। (इमाम बुख़ारी–अदब अलमुफ़रद–1/92–ह०-94)

वालिद के हुक्म पर बेटे को चाहिये बीवी को तलाक़ दे दे

➡ ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि मेरे निकाह़ में एक औ़रत थी और मैं उससे मुहब्बत करता था और मेरे वालिद उसको बुरा जानते थे आख़िर रसूलुल्लाह से ज़िक्र किया तो आपने मुझे हुक्म दिया कि उस औ़रत को तलाक़ दे दो फिर मैंने उसे तलाक़ दे दी (तिर्मिज़ी–सुनन–1/655–ह०–1189)
(इब्ने माजा–सुनन–2/112–ह०–2088)
(अबू दाऊद–सुनन–6/838–ह०-5138)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/777–ह०-7251,7252, 7253)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–9/423–ह०–14893)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–5/606–ह०–19397)

माँ बाप को गाली देना कबीरा गुनाहों में से है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी का अपने माँ बाप को गाली देना कबीरा गुनाहों में से है तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि भला कोई अपने माँ बाप को भी गाली देगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई किसी के बाप को गाली दे फिर वो उसके बाप को गाली देता है और जब कोई किसी की माँ को गाली दे तो जवाब में वो उसकी माँ को गाली देता है यानी इस तरह से गोया उसने खुद अपने माँ बाप को गाली दी।
(बुख़ारी–सहीह–5/572–ह०-5973)
(मुस्लिम–सहीह–1/189–ह०-263)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1024–ह०-1902)

–: मुश्रिका माँ पर भी एहसान करो :–

➡ हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरी माँ आयी है और वो मुश्रिका हैं तो क्या मैं उनके साथ हुस्ने सुलूक करूँ तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ उनके साथ हुस्ने सुलूक और सिला रहमी करो।
(मुस्लिम–सहीह–3/40–ह०-2325)
(बुख़ारी–सहीह–5/576–ह०-5978, 5959, 5981)
(अबू दाऊद–सुनन–2/323–ह०-1668)

-: औलाद के हुकूक़ :-

-: अपनी औलाद में अद्ल करो :-

➡ हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मुझे मेरे वालिद ने अ़तिया दिया तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मेरे वालिद से फ़रमाया क्या इसके अ़लावा तेरे और भी बच्चे हैं उन्होंने कहा जी हाँ तो आपने फ़रमाया क्या तुमने उन सबको इस तरह अ़तिया दिया है जो नुअ़मान को दिया है उन्होंने कहा नहीं तो आपने फ़रमाया ये जुल्म है क्या तुझे पसंद नहीं कि ख़िदमत व एहसान करने में सब बच्चे बराबर हों उन्होंने कहा हाँ फिर आपने फ़रमाया उनका तुझ पर हक़ ये है कि तू उन सब में अद्ल करे जैसे उन सब पर लाज़िम है कि वो सब तेरी ख़िदमत करें लिहाज़ा अपनी औलाद में अद्ल करो। (अबू दाऊद-सुनन-4/779-ह०-3542) (बुख़ारी-सहीह-3/61-ह०-2586)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तोहफ़ों की तक़सीम में अपनी औलाद को बराबरी पर रखो और अगर मैं किसी को किसी पर फ़ज़ीलत देता तो औ़रतों को यानी बेटियों को बेटों पर फ़ज़ीलत देता।
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-11/354-ह०-11997)
(बैहक़ी-सुनन कुबरा-6/177-ह०-11780)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो लोग इन्साफ़ करते हैं वो रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला की दायीं जानिब नूर के मिम्बरों पर होंगे ये वो लोग होंगे जो अपनी रिआ़या और अह्ल व अ़याल में अ़द्ल व इन्साफ़ करते हैं यानी लोगों में और अपने घर वालों में अद्ल व इन्साफ़ करते हैं और जिन उमूर में उनको इख़्तियार हासिल है उनमें अ़द्ल से काम लेते हैं और अपने फ़ैसलों में अपने अह्ल व अ़याल और जिनके ये ज़िम्मेदार हैं उनके मुआ़मले में अ़द्ल व इन्साफ़ करते हैं ऐसे लोग नूर के मिम्बर पर होंगे।
(मुस्लिम–सहीह–3/693–ह०-4721)
(नसाई–सुनन–3/571–ह०-5384,5385)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक अल्लाह अ़द्ल व इन्साफ़ करने वालों को पसन्द फ़रमाता है। (सूरह–मुम्तहिना–60/08)

हर एक से उसकी रअ़य्यत के बारे में सुवाल होगा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें हर एक शख़्स ज़िम्मेदार और मुहाफ़िज़ है और हर एक शख़्स से उसकी राअ़य्यत के बारे में सुवाल होगा जो कुछ उसकी ज़िम्मेदारी में हो फिर जो कोई बादशाह है तो वो लोगों का मुहाफ़िज़ है और उससे उनके बारे में सुवाल होगा कि उसने अपनी ज़िम्मेदारी का हक़ अदा किया या नहीं आदमी अपने घर वालों का ज़िम्मेदार है उससे उनके बारे में सुवाल होगा औ़रत अपने ख़ाविन्द

के घर और उसकी औलाद की ज़िम्मेदार है पस उससे उनके बारे में सुवाल होगा गुलाम अपने आक़ा के माल का ज़िम्मेदार है उससे उसके बारे में पूछा जायेगा पस आगाह रहो तुम में से हर एक ज़िम्मेदार है और हर एक से उसकी राअ़य्यत के बारे में पूछा जायेगा।

(बुख़ारी–सहीह–6/415–ह०-7138)

(मुस्लिम–सहीह–5/123–ह०-4724)

(अबू दाऊद–सुनन–3/364–ह०-2928)

(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/135–ह०-212)

घर वालों पर ख़र्च करने पर अज्र

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मर्द अपने अह्ल व अ़याल पर सवाब की नियत से जो भी ख़र्च करता है तो वो उसके हक़ में सद्क़ा बन जाता है।

(बुख़ारी–सहीह–1/112–ह०-55)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि (जिन दीनारों पर अज्र मिलता है उनमें से) एक दीनार वो है जिसे तूने अल्लाह की राह में ख़र्च किया एक दीनार वो है जिसे तूने किसी की गर्दन की आज़ादी के लिये ख़र्च किया एक दीनार वो है जिसे तूने मिस्कीन पर सद्क़ा किया एक दीनार वो है जिसे तूने अपने घर वालों पर ख़र्च किया इनमें सबसे अ़ज़ीम अज्र उस दीनार का है जिसे तूने अपने घर वालों पर ख़र्च किया।

(मुस्लिम–सहीह–2/342–ह०-2311)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इन्सान जो कुछ अपनी ज़ात व अपने अह्ल व अ़याल पर सवाब की नियत से ख़र्च करता है तो अल्लाह तआ़ाला उसका अज्र देता है लिहाज़ा अपने अह्ल व अ़याल पर ख़र्च किया करो फिर अगर कुछ बच रहे तो क़रीबी रिश्तेदार को दो और फिर भी बच रहे तो जिसे चाहो उसे दो। (इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/77–ह०-62)

➡ हज़रत मूसा बिन अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हे सब से बड़ा सद्क़ा न बताऊँ अ़र्ज़ किया गया ज़रुर बतायें आपने फ़रमाया कि एक एसी बच्ची है जो तुम्हारे सपुर्द कर दी गई है और तुम्हारे सिवा उसका कोई कमाने वाला नहीं है उसे ख़र्चा देना सबसे बड़ा सद्क़ा है। (इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/85–ह०-80)

➡ हज़रत साअ़द बिन अबी वक्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब अल्लाह तआ़ाला तुम्हें दौलत अ़ता फ़रमाये तो पहले अपने ऊपर ख़र्च करो फिर अपने घर वालों पर ख़र्च करो। (मुस्लिम–सहीह–5/116–ह०-4711)

तुम्हारे घर वालों और तुम्हारी जान का भी तुम पर हक़ है

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु

तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत उ़स्मान बिन मज़ऊ़न (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से फ़रमाया कि ऐ उ़स्मान तुम्हारे घर वालों का भी तुम पर हक़ है व तुम्हारे मेहमान का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारी जान का भी तुम पर हक़ है लिहाज़ा रोज़े रखो और छोड़ भी दिया करो, नमाज़ पढ़ों और सोया भी करो। (अबू दाऊद–सुनन–2/101–ह०-1369)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अपनी औलाद का ख़्याल रखो और उनको अच्छे आदाब सिखाओ।
(इब्ने माजा–सुनन–03/182–ह०-3671)

बेटियों की अच्छी पर'वरिश की वजह से जन्नत

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसकी तीन बेटियाँ या दो बेटियाँ हों या तीन बहनें या दो बहनें हों फिर अच्छी तरह उनका साथ दिया और उनकी अच्छी तरह पर'वरिश की और उनकी पर'वरिश करने में अल्लाह से डरा और उनकी शादी की और उनके साथ एहसान का मुआ़मला करता रहा तो उसके लिये जन्नत है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1029–ह०-1912)
(अबू दाऊद–सुनन–6/843–ह०-5147)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी

है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने दो बेटियों की पर‘वरिश की यहाँ तक कि वो बालिग़ हो गईं तो वो शख़्स रोज़े क़यामत आयेगा तो वो शख़्स और मैं इस तरह होंगे आपने अपनी दो उंगलियों को मिला दिया।
(मुस्लिम–सहीह–5/96–ह०-6695)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1030–ह०-1916)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/825–ह०-7350)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसकी दो बेटियाँ बालिग़ हो जायें और वो उनके साथ हुस्ने सुलूक करे (खिलाये पिलाये और दीनी ताअ़लीम व अच्छे आदाब सिखाये) तो ये बेटियाँ उसे जन्नत में ले जायेंगी।
(इब्ने माजा–सुनन–3/181–ह०-3670)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/826–ह०-7351)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/92–ह०-2945)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसके तीन बेटियाँ हों और वो उनके ख़र्चे वग़ैराह पर सब्र इख़्तियार करे अल्लाह तआ़ाला उन बेटियों पर रहम व शफ़क़त करने की वजह से उसको जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया जिसकी दो बेटियाँ हों तो आपने फ़रमाया वो भी जन्नती है फिर एक शख़्स ने अ़र्ज़ की जिसकी एक ही बेटी हो तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया वो भी जन्नती है। (हाकिम–अल मुस्तदरक–5/823–ह०-7346)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसके यहाँ दो बेटियाँ पैदा हुईं और उसने उनको बुरा न जाना और न ही बेटों को बेटियों पर तरजीह दी अल्लाह तआ़ला इसके बदले में उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/824–ह०-7348)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के पास एक अ़ौरत आयी उसके साथ उसकी दो बेटियाँ भी थीं तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा ने उसे तीन खजूरें दीं उस अ़ौरत ने दोंनों बेटियों को एक एक खजूर देदी फिर तीसरी खजूर भी आधी आधी उनमें तक़सीम करदी हज़रत आयशा सिद्दीक़ा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम तशरीफ़ लाये तो मैंने सारी बात अ़र्ज़ कर दी तो आपने फ़रमाया कि वो अ़ौरत इसी अ़मल की वजह से जन्नत में दाख़िल हो गई।
(बुख़ारी–सहीह–2/154–ह०-1418)
(मुस्लिम–सहीह–6/233–ह०-6693)
(इब्ने माजा–सुनन–3/181–ह०-3668)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1030–ह०-1915)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स भी अपनी बेटियों की अच्छी पर‘वरिश करेगा व उनके साथ अच्छा बरताव करेगा तो ये उसके लिये जहन्नम की आग से बचाव का ज़रिया बन जायेंगीं।
(बुख़ारी–सहीह–5/583–ह०-5995)

-: बेटी की फ़ज़ीलत :-

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब किसी शख़्स के यहाँ बेटी पैदा होती है तो अल्लाह तआ़ला वहाँ फ़रिश्तों को भेजता है जो कहते हैं ऐ घर वालो तुम पर अल्लाह की सलामती नाज़िल हो और फिर वो उसको बाजुओं से घेर लेते हैं और अपना हाथ बच्ची पर फेरते और कहते हैं इसका निगरान क़यामत तक मदद किया जायेगा। (मुअ़जम कबीर-1/483-ह०-832)

-: तलाक़ याफ़्ता बेटी को सहारा देना :-

➡ हज़रत सुराक़ा बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें सबसे बड़े सद्क़े के बारे में तुम्हारी रहनुमाई न करूँ तो अ़र्ज़ किया गया ज़रुर बतायें तो आपने फ़रमाया कि तेरे लिये सबसे बड़ा सद्क़ा तेरी वो बेटी है जो शौहर के फ़ौत हो जाने या तलाक़ होने की वजह से वापस तेरे पास आ गई हो और तेरे सिवा उसका कोई सहारा न हो तो तुम उसका सहारा बनो ।
(हाकिम-अल मुस्तदरक-5/853-ह०-7345)

-: अह्ल व अ़याल पर रहम :-

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस माँ पर रहम फ़रमाता है जो माँ अपने बच्चों पर रहम करती है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/825–ह०-7349)

–: बच्चे को दूध पिलाने की मुद्दत :–

इरशादे बारी तआ़ला है:–
माँयें अपने बच्चों को पूरे दो बरस तक दूध पिलायें ये (हुक्म) उसके लिये है जो दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहे और दूध पिलाने वाली माँओं का खाना व पहनना दस्तूर के मुताबिक़ बच्चे के बाप पर लाज़िम है किसी जान को उसकी ताक़त से बढ़कर तकलीफ़ न दी जाये और न ही माँ को उसके बच्चे के बाइस नुक़सान पहुँचाया जाये और न बाप को उसकी औलाद के सबब से और वारिसों पर भी यही हुक्म आ़यद होगा अगर माँ बाप दोंनों बाहमी रज़ामन्दी और मश्वरे से दो बरस से पहले ही दूध छुड़ाना चाहें तो उन पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम अपनी औलाद को दाया से दूध पिलाना चाहो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं (सू०–बक़राह–2/233)

–: औलाद का विरासत में हिस्सा :–

इरशादे बारी तआ़ला है:–
अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद (की विरासत) के बारे में हुक्म देता है कि लड़के के लिये दो लड़कियों के बराबर हिस्सा है फिर अगर सिर्फ़ लड़कियाँ ही हों (दो या) दो से ज़्यादा तो उनके लिये तरके का दो तिहाई हिस्सा है और अगर वो अकेली हो तो उसके लिये आधा है।
(सूरह–निसा–4/11)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और तुम्हारे लिये उस (माल) का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी बीवियाँ छोड़ जायें बशर्ते ये कि उनकी कोई औलाद न हो फिर अगर उनकी कोई औलाद हो तो तो तुम्हारे लिये उनके तरके से चौथाई है (ये भी) उस वसीयत (के पूरा करने) के बाअ़द जो उन्होंने की हो या क़र्ज़ (की अदायगी) के बाअ़द और तुम्हारी बीवियों का तुम्हारे छोड़े हुये माल में से चौथा हिस्सा है बशर्ते ये कि तुम्हारी कोई औलाद न हो फिर अगर तुम्हारी कोई औलाद हो तो उनके लिये तुम्हारे तरके में आठवाँ हिस्सा है तुम्हारी उस माल की निस्बत की हुई वसीयत (पूरी करने) या (तुम्हारे) क़र्ज़ की अदायगी के बाअ़द। (सूरह–निसा–4/12)

–ः माल की वसीयत करना फ़र्ज़ है ः–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
तुम पर फ़र्ज़ किया जाता है कि जब तुममें से किसी की मौत क़रीब आ पहुँचे अगर उसने कुछ माल छोड़ा हो तो (अपने) वालिदैन व क़रीबी रिश्तेदारों के हक़ में भले तरीक़े से वसीयत करे ये परहेज़गारों पर लाज़िम है फिर जिसने उस वसीयत को बदल दिया तो उसका गुनाह बदलने वालों पर है बेशक अल्लाह बड़ा सुनने वाला खूब जानने वाला है। (सूरह–बक़राह–2/180, 181)

–ः वसीयत के वक़्त दो गवाहों का होना ः–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो जब तुममें से किसी को मौत आये तो वसीयत करते वक़्त तुम्हारे दरमियान गवाही (के लिये)

तुम में से दो आ़दिल शख़्स हों या तुम्हारे ग़ैरों में से (कोई) दूसरे दो शख़्स हों। (सूरह–मायदा–5/106)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और तुम गवाही को छुपाया न करो और जो शख़्स गवाही को छुपाता है तो यक़ीनन उसका दिल गुनाहगार है और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे (सब) आअ़माल को खूब जानने वाला है। (सूरह–बक़राह–2/283)

अहकामे विरासत की फ़रमां बरदारी पर अज्र और नाफ़रमानी पर सज़ा

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ये अल्लाह तआ़ला की (मुक़र्रर कर्दा) हदें हैं और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमां बरदारी करे उसे वो बहिश्तों में दाख़िल फ़रमायेगा कि जिनके नीचे नहरें रवां हैं उनमें हमेशा रहेंगे और ये बड़ी कामयाबी है। (सूरह–निसा–4/12)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जो कोई अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे और उसकी हुदूद से तजावुज़ करे उसे वो जहन्नम में दाख़िल करेगा जिसमें वो हमेशा रहेगा और उसके लिये ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है।
(सूरह–निसा–4/13)

-: मियाँ बीवी के हुक़ूक़ :-

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और दस्तूर के मुताबिक़ औ़रतों के मर्दों पर उसी तरह हुक़ूक़ हैं जैसे मर्दों के औ़रतों पर (हुक़ूक़ हैं) अलबत्ता मर्दों को उन पर फ़ज़ीलत है और अल्लाह तआ़ला बड़ा ग़ालिब बड़ी हिकमत वाला है। (सूरह-बक़राह-2/228)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि औ़रतों की अच्छी तरह ख़ैर ख़्वाही करो और उन्हें तकलीफ़ न दो व आगाह रहो और तुम्हारा हक़ है तुम्हारी औ़रतों पर और तुम्हारी औ़रतों का हक़ तुम पर है पस तुम्हारा हक़ तुम्हारी औ़रतों पर ये है कि तुम्हारे बिछौनों पर बातचीत करने को ऐसों को न बिठायें कि जिनसे तुम राज़ी नहीं और घर में न आने दें उनको जिनसे तुम राज़ी नहीं आगाह हो और उनका हक़ तुम पर ये है कि तुम उनको नान व नफ़क़ा दो। (तिर्मिज़ी-सुनन-1/640-ह०-1163)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह औ़रत पर सबसे ज़्यादा हक़ किसका है तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उसके शौहर का फिर मैंने अ़र्ज़ की कि मर्द पर सबसे ज़्यादा हक़ किसका है तो हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उसकी माँ का (हाकिम-अल मुस्तदरक-5/774-ह०-7244, 7338)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु) से मर'वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ब्दुल्लाह मुझे तेरे मुताअ़ल्लिक़ ये ख़बर पहुँची है कि तुम दिन में रोज़े से होते हो और रात को नमाज़ में खड़े होते हो क्या ये सहीह है मैंने कहा जी हाँ आपने फ़रमाया ऐसा मत करो और तुम आराम भी किया करो यक़ीनन तुम्हारे जिस्म का तुम पर हक़ है तुम्हारी आँख का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक़ है। (बुख़ारी–सहीह–5/179–ह०-5199)
(मुस्लिम–सहीह–3/163–ह०-2743)
(अबू दाऊद–सुनन–2/841–ह०-2427)
(नसाई–सुनन–2/106–ह०-2401)

➡ हज़रत हकीम बिन मुआ़विया कुशैरी अपने वालिद से बयान करते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह हम पर बीवी के क्या हुकूक़ हैं हूज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब तू खाये तो उसे खिलाये जब तू पहने तो उसे पहनाये और तुम उसके चेहरे पर न मारो और उसे बुरा न बोलो और न ही उससे जुदा हो।
(अबू दाऊद–सुनन–2/636–ह०-2142)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
मर्द औ़रतों के सरपरस्त और मुहाफ़िज़ हैं इसलिये कि अल्लाह तआ़ला ने एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत बख़्शी है और इस वजह से (भी) कि मर्द (उन पर) अपना माल ख़र्च करते हैं पस नेक फ़रमांबरदार औ़रतें अपने शौहरों की ग़ैर मौजूदगी में अपनी इ़ज़्जत की हिफ़ाज़त करती हैं जिस तरह अल्लाह ने हिफ़ाज़त का हुक्म दिया और तुम्हें जिन औ़रतों की नाफ़रमानी व सरकशी का

अंदेशा हो तो उन्हें नसीहत करो और (अगर न समझें तो) उन्हें ख़्वाबगाहों में (खुद से) अ़लैहदा करदो (अगर फिर भी वो अपनी इस्लाह न करें तो) उनसे आ़रज़ी तौर पर अलग हो जाओ फिर अगर वो (रज़ाए इलाही के लिये) तुम्हारी ताअ़बेदारी करने लगें तो तुम उनके ख़िलाफ़ कोई रास्ता तलाश न करो बेशक अल्लाह सब से बुलन्द सबसे बड़ा है। (सूरह–निसा–4/34)

बेहतर औ़रत वो जो अपने ख़ाविन्द की फ़रमां बरदार हो

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि बेहतरीन औ़रत कौन सी है तो आपने फ़रमाया कि वो औ़रत कि उसका ख़ाविन्द जब उसको देखे तो वो उसको खुश करदे और जिस वक़्त वो हुक्म दे तो उसकी इताअ़त करे और अपने नफ़्स व माल में उसकी मुख़ालिफ़त न करे जिसे वो नापसंद करता हो बल्कि उसकी राय के मुताबिक़ करे। (नसाई–सुनन–5/139–ह०-3233)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया की बेहतरीन और ज़्यादा नफ़ाअ़ देने वाली शैः नेक औ़रत है। (इब्ने माजा–सुनन–2/21–ह०-1855, 1857)
(नसाई–सुनन–2/139–ह०-3234)

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि जब ये आयत नाज़िल हुई ‘‘जो लोग सोना और

चाँदी जमाअ़ करके रखते हैं और उसमें से राहे ख़ुदा में ख़र्च नहीं करते तो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़बर सुनादें जिस दिन उस (सोना चाँदी व माल) को दोज़ख़ की आग में तपाया जायेगा और फिर उस तपे हुये माल से उनकी पेशानियाँ और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जायेंगी (और उनसे कहा जायेगा) ये वही (माल) है जो तुमने अपनी जानों के लिये जमाअ़ किया था सो तुम (आज उस माल का) मज़ा चखो जिसे तुम जमाअ़ करते थे (सू०–तौबा–9/34,35)'' तो उस वक़्त हम हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ सफ़र में थे तो सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सोने और चांदी की मज़म्मत और उसका हाल हमें माअ़लूम हो गया लेकिन अगर हम जानते कि कौन सा माल बेहतर है तो हम उसी को जमाअ़ करते तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेहतर माल ज़िक्र करने वाली ज़बान और शुक्र करने वाला दिल और नेक बीवी जो आदमी के ईमान व आख़िरत के कामों में मददगार हो यानी नेक बीवी की सुहबत के सबब आदमी में ताअ़त व इ़बादत का शौक बढ़े। (तिर्मिज़ी–2/971-ह०–3094)
(इब्ने माजा–सुनन–2/21–ह०-1856)
(कंजुल उ़म्माल–2/128-ह०–4312,4313)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/89–ह०-4430)

शौहर की इताअ़त का अज्र जन्नत है

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो औ़रत इस हाल में फ़ौत हुई कि उसका ख़ाविन्द उससे

राज़ी था तो वो जन्नत में दाख़िल होगी।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/639–ह०-1161)
(इब्ने माजा–सुनन–2/20–ह०-1854)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/816–ह०-7328)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–23/421–ह०-8744)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम के पास एक अ़ौरत आयी उसके दो बच्चे थे तो आपने फ़रमाया कि ये अ़ौरतें बच्चों को पैदा करने वाली और उठाने वाली और अपने बच्चों पर रहम करने वाली हैं अगर ये अपने शौहरों को तकलीफ़ न पहुँचायें तो सब इ़बादत गुज़ार अ़ौरतें जन्नत में जायें।
(इब्ने माजा–सुनन–2/77–ह०-2013)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/817–ह०-7331, 7332)

शौहर की नाफ़रमानी करने वाली अ़ौरत का कोई अ़मल कुबूल नहीं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दो शख़्स ऐसे हैं कि उनकी इ़बादत उनके सर से ऊपर भी नहीं जाती 1- शौहर की नाफ़रमान बीवी 2- अपने आक़ा से भागने वाला गुलाम। (हाकिम–5/817–ह०-7330)

शौहर की नाशुक्री करने वाली पर अल्लाह निगाहे रहमत नहीं करता

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला

अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस औ़रत पर निगाहे रहमत नहीं करता जो अपने शौहर की शुक्र गुज़ार नहीं होती क्योंकि औ़रत शौहर के बग़ैर गुज़ारा नहीं कर सकती।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/819–ह०-7335, 7336, 7337)

शौहर नाराज़ हो तो फ़रिश्ते बीवी पर लाअ़नत भेजते हैं

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब औ़रत रात को अपने शौहर का बिस्तर छोड़कर (शौहर की नाराज़गी की हालत में) अलग रहती है तो फ़रिश्ते उस औ़रत पर सुबह तक लाअ़नत भेजते हैं।
(मुस्लिम–सहीह–4/59–ह०-3538)

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई औ़रत दुनिया में अपने ख़ाविन्द को तकलीफ़ पहुँचाती है तो जन्नत में उस शख़्स की हूरों में से जो उसकी बीवी होती है वो उस औ़रत से कहती है कि उसे न सताओ अल्लाह तआ़ला तुम्हारा सत्यानाश करे ये तो तुम्हारे पास चन्द दिनों का मेहमान है अ़नक़रीब ये तुमसे जुदा होकर हमारे पास आ जायेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–2/77–ह०-2014)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/646–ह०-1174)
(मुस्नद अहमद–10/371–ह०-22452)

जन्नत में ग़रीबों की अक्सरियत दोज़ख़ में औ़रतों की अक्सरियत

➡ हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं जन्नत के दर'वाज़े पर खड़ा हुआ तो देखा कि उसमें दाख़िल होने वालों में ग़रीबों की अक्सरियत थी और मालदार (जन्नत के दर'वाज़े पर हिसाब के लिये) रोक लिये गये थे और जहन्नम वालों को जहन्नम में जाने का हुक्म दे दिया गया था और मैं जहन्नम के दर'वाज़े पर खड़ा हुआ तो उसमें अक्सर औ़रतें थीं। (बुख़ारी–सहीह–5/176–ह०-5196)

–: बीवी पर शौहर को फज़ीलत :–

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैंने ईसाइयों को अपने पादरी और मज़हबी रहनुमाओं के साानने सज्दा रेज़ होते हुये देखा है पस मेरे दिल में ख़्याल आता है कि उनसे ज़्यादा ताअ़ज़ीम के मुस्तहिक़ तो आप है तो क्या हम आपको सज्दा किया करें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अगर मैं किसी को किसी के सामने सज्दा करने का हुक्म देता तो औ़रत को हुक्म देता कि वो अपने शौहर को सज्दा करे। (मुस्नद अहमद–10/330–ह०-22335)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/815–ह०-7325)

➡ हज़रत क़ैस बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)

से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अगर मैं किसी को सज्दा करने का हुक्म देता तो औ़रत को हुक्म देता कि वो अपने शौहर को सज्दा करे क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने बीवी पर शौहर का बहुत हक़ रखा है।
(अबू दाऊद–सुनन–2/634–ह०-2140)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/639–ह०-1159)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/815–ह०-7326)

औ़रत अपने ख़ाविन्द का हक़ अदा नहीं कर सकती

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से एक औ़रत ने अ़र्ज किया या रसूलुल्लाह आप मुझे बतायें कि बीवी पर शौहर के क्या हुकूक़ हैं आपने फ़रमाया कि बीवी पर शौहर के हुकूक़ में से ये भी है कि अगर शौहर के जिस्म से खून और पीप बह रहा हो और बीवी अपनी ज़बान से उसे चाट ले तब भी वो उसका हक़ अदा नहीं कर सकती।
(मुस्नद अहमद–10/362–ह०-22428)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/814–ह०-7324)

शौहर की इजाज़त के बग़ैर औ़रत निफ़्ली रोज़ा न रखे

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि शौहर की मौजूदगी में औ़रत अपने शौहर की इजाज़त के बग़ैर रोज़ा न–

रखे और उसके घर में उसकी मौजूदगी में किसी को- उसकी इजाज़त के बग़ैर न आने दे।
(मुस्लिम-सहीह-3/55-ह०-2370)
(अबू दाऊद-सुनन-2/860-ह०-2458)
(हाकिम-अल मुस्तदरक-5/817-ह०-7329)

शौहर की इजाज़त के बग़ैर औ़रत का अ़तिया देना जाइज़ नहीं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया किसी औ़रत को अपने शौहर की इजाज़त के बग़ैर (शौहर के माल से) अ़तिया देना जाइज़ नहीं है। (मगर सद्क़ा ख़ैरात कर सकती है) (अबू दाऊद-सुनन-3/783-ह०-3547)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब औ़रत अपने शौहर के माल में से ख़ैरात करे तो दोंनों को बराबर अज्र मिलता है यानी शौहर व उसकी बीवी को और किसी के अज्र में कोई कमी नहीं होती शौहर को कमाई का अज्र और औ़रत को माल ख़र्च करने का अज्र मिलेगा। (तिर्मिज़ी-सुनन-1/403-ह०-671] 672)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स किसी औ़रत की अ़स्मत का मालिक हो (यानी औ़रत उसके निकाह में आ जाये) तो उस औ़रत के-

लिये अपने माल में भी ख़ाविन्द की इजाज़त के बग़ैर तसर्रुफ़ जाइज़ नहीं।
(अबू दाऊद–सुनन–3/783–ह०-3546)
(इब्ने माजा–सुनन–2/208–ह०-2388)

➡ हज़रत अबू उमामा बाहिली (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया औरत अपने शौहर की इजाज़त के बग़ैर किसी चीज़ को ख़र्च न करे अर्ज़ किया गया कि या रसूलल्लाह क्या खाना भी किसी को न दे तो आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो तो हमारे सब मालों से बेहतर है (तिर्मिज़ी–सुनन–1/403–ह०-670)

शौहर के ख़र्च न देने की सूरत में बीवी शौहर के माल से ले सकती है

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हा) फ़रमाती हैं कि एक औरत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) मेरा शौहर बहुत बख़ील है और मुझे उतना ख़र्च नहीं देता जो मुझको और मेरे बच्चों को काफी हो मगर मैं उसके माल में से ले लेती हूँ और मेरे शौहर को ख़बर नहीं होती तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तू उसके माल में से दस्तूर के मुताबिक़ ले ले जितना तुझको और तेरे बच्चों को काफ़ी हो।
(मुस्लिम–सहीह–4/337–ह०-4477)
(अबू दाऊद–सुनन–4/774–ह०-3533)

–: तीन चीज़ों में नहूसत :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया नहूसत सिर्फ़ तीन चीज़ों में हो सकती है औ़रत व घर और घोड़े में
(बुख़ारी–सहीह–5/476–ह०-5753, 5093, 5094, 5095,)
(अबू दाऊद–सुनन–4/69–ह०-3921, 3922)
(इब्ने माजा–सुनन–2/70–ह०-1993, 1994, 1995)
(नसाई–सुनन–5/424–ह०-3600)
(मिश्कात–2/281–ह०-3087)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/418–ह०-942)

–: औ़रतो के साथ हुस्ने सुलूक :–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो तुम्हारे लिये ये हलाल नहीं है कि तुम ज़बरदस्ती औ़रतों के वारिस बन जाओ और उन्हें इस ग़रज़ से न रोक रखो कि जो माल तुमने उन्हें दिया था उसमें से कुछ वापस ले जाओ सिवाए इसके कि वो खुली बदकारी की मुरतकिब हों और उनके साथ अच्छे तरीक़े से बरताव करो फिर अगर तुम उन्हें ना पसंद करते हो तो मुम्किन है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और अल्लाह उसमें बहुत सी भलाई रख दे।
(सूरह–निसा–4/19)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
फिर उनमें से जिनसे तुमने उस माल के ऐ़वज़ फ़ायदा उठाया है उन्हें उनका मुक़र्रर शुदा महर अदा कर दो–

और तुम पर उस माल के बारे में कोई गुनाह नहीं कि जिस पर तुम महर मुक़र्रर करने के बाअ़द बाहम रज़ा मन्द हो जाओ बेशक अल्लाह तआ़ला खूब जानने वाला बड़ी हिकमत वाला है। (सूरह–निसा–4/24)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

तुम उन मुतल्लक़ा औ़रतों को वहीं पर रखो जहाँ तुम अपनी वुसअ़त मुताबिक़ रहते हो और उन्हें तकलीफ़ मत पहुँचाओ कि उन पर (रहने का ठिकाना) तंग कर दो और अगर वो हामला हों तो उन पर ख़र्च करते रहो यहाँ तक कि वो अपना बच्चा जन लें फिर अगर वो तुम्हारी ख़ातिर (बच्चे को) दूध पिलायें तो उन्हें उन का मुआ़वज़ा अदा करते रहो और आपस में (एक दूसरे से) नेक बात का मश्वरा (हस्बे दस्तूर) कर लिया करो और अगर तुम दुश्वारी महसूस करो तो उसे (कोई) दूसरी औ़रत दूध पिलायेगी साहिबे वुसअ़त को अपनी वुसअ़त (के लिहाज़) से ख़र्च करना चाहिये और जिस शख़्स पर उसका रिज़्क़ तंग कर दिया गया हो तो वो उसी (रोज़ी) में से (बतौर नफ़क़ा) ख़र्च करे जो उसे अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फ़रमाई और अल्लाह तआ़ला किसी भी शख़्स को मुकल्लफ़ नहीं ठहराता मगर उसी क़दर जितना कि उसने उसे अ़ता कर रखा है अल्लाह तआ़ला अ़नक़रीब तंगी के बाअ़द कुशादगी पैदा फ़रमां देगा। (सूरह–तलाक़–65/06, 07)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और उन्हें उनके घरों से मत निकालो और न वो खुद बाहर निकलें सिवाए इसके कि वो खुली बेहयाई कर बैठें और अल्लाह तआ़ला की ये (मुक़र्रर) हदें हैं और जो शख़्स अल्लाह की हुदूद से तजावुज़ करे तो बेशक

उसने अपनी जान पर जुल्म किया है।
(सूरह–तलाक़–65/01)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और तलाक़ याफ़्ता औ़रतों को भी मुनासिब तरीक़े से ख़र्चा दिया जाये ये परहेज़गारों पर वाजिब है इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिये अपने अहकाम बाज़ेह फ़रमाता है ताकि तुम समझ सको। (सूरह–बक़राह–2/241, 242)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और अगर तुमने उन्हें छूने से पहले तलाक़ देदी जबकि तुम उनका महर मुक़र्रर कर चुके थे तो उस महर का जो तुमने मुक़र्रर किया था निस्फ़ देना ज़रुरी है सिवाए इसके कि वो (अपना हक़) खुद मुअ़ाफ़ कर दें या वो शौहर जिसके हाथ में निकाह की गिरह है मुअ़ाफ़ कर दे (यानी बजाए निस्फ़ के ज़्यादा या पूरा अदा कर दे) और (ऐ मर्दों) अगर तुम मुअ़ाफ़ करदो तो ये तक़वा के क़रीबतर है और आपस में एहसान करना न भूला करो बेशक अल्लाह तअ़ाला तुम्हारे आअ़्माल को खूब देखने वाला है। (सूरह–बक़राह–2/237)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

तलाक़ सिर्फ़ दो बार (तक) है फिर या तो (बीवी को) अच्छे तरीक़े से (ज़ोजियत में) रोक लेना है या भलाई के साथ छोड़ देना है और तुम्हारे लिये जाइज़ नहीं कि जो चीज़ें तुम उन्हें दे चुके हो उसमें से कुछ वापस लो सिवाए इसके कि दोंनों को अंदेशा हो कि (अब रिश्ता ज़ोजियत बरक़रार रखते हुये) दोंनों अल्लाह तअ़ाला के हुदूद को क़ायम न रख सकेंगे सो ऐसी सूरत उन पर कोई गुनाह नहीं कि बीवी (खुद) कुछ बदला देकर (इस

तकलीफ देह बन्धन से वो) आज़ादी ले ले ये अल्लाह तआ़ला की (मुक़र्रर की हुई) हदें हैं तो तुम उनसे आगे न बढ़ो जो लोग अल्लाह तआ़ला की हुदूद से तजावुज़ करते हैं सो वही लोग ज़ालिम हैं।
(सूरह–बक़राह–2/229)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जब तुम अ़ौरतों को तलाक़ दो और वो अपनी इ़द्दत (पूरी होने) को आ पहुँचें तो उन्हें अच्छे तरीक़े से (अपनी ज़ोजियत में) रोक लो या उन्हें अच्छे तरीक़े से छोड़ दो और उन्हें महज़ तकलीफ़ देने के लिये न रोके रखो कि (उन पर) ज़्यादती करते रहो और जो कोई भी ऐसा करे तो उसने अपनी ही जान पर जुल्म किया है और अल्लाह तआ़ला के अहकाम को मज़ाक न बना लो और याद करो अल्लाह तआ़ला की उस नेअ़मत को याद करो जो तुम पर की गई है और उस किताब को जो उसने तुम पर नाज़िल फ़रमाई है और दानाई (की बातों) को (जिनकी उसने तुम्हें ताअ़लीम दी है) वो तुम्हें (उस अम्र की) नसीहत फ़रमाता है और अल्लाह से डरो और जान लो बेशक अल्लाह तआ़ला सब कुछ जानने वाला है। (सूरह–बक़राह–2/231)

अ़ौरतों के साथ अच्छे सुलूक की नसीहत

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो ईमान रखता हो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर तो जब वो अपनी बीवी में कोई नापसंदीदा मुआ़मला देखे तो उसे अच्छे सुलूक के साथ नसीहत करे और अच्छी तरह से

बात करे या ख़ामोश रहे क्योंकि अ़ौरत पसली से पैदा की गई है और पसलियों में सबसे ज्यादा टेढ़ उसके ऊपर वाले हिस्से में है अगर तुम उसे सीधा करने लग जाओ तो उसे तोड़ दोगे और अगर छोड़ दोगे तो वो टेढ़ी ही रहेगी तो तुम अ़ौरतों के साथ अच्छे सुलूक की नसीहत कुबूल करो व अ़ौरतों के साथ अच्छा बरताव करो और उनसे हुस्ने सुलूक से पेश आओ।
(बुख़ारी–सहीह–3/511–ह०-3331)
(मुस्लिम–सहीह–3/131–ह०-3644)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/818–ह०-7333, 7334)

सबसे बेहतर वो जो अपनी बीवी के हक़ में बेहतर है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सब मोमिनों में कामिल तर ईमान में वो हैं जिनके अख़्लाक़ अच्छे हों और सबमें बेहतर वो हैं जो अपनी बीवियों के हक़ में बेहतर हैं। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/640–ह०-1162)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/818–ह०-7327)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/599–ह०-479)

–: बीवी की अद्‌ना ख़िदमत पर अज्र :–

➡ हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम जो भी रज़ाए इलाही के लिये ख़र्च करोगे तो अल्लाह तआ़ाला तुम्हें उसका अज्र देगा ख़्वाह तुमने अपनी बीवी के मुँह

में एक लुक़्मा ही क्यों न दिया हो।
(बुख़ारी–सहीह–1/112–ह०-56)
(मुस्लिम–सहीह–3/392–ह०-4209)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/353–ह०-319)

–: मय्यत के तरके में औ़रतों का हक़ :–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और औ़रतों के लिये माँ बाप और क़रीबी रिश्तेदारों के तरके में से हिस्सा है वो तरका थोड़ा हो या ज़्यादा (अल्लाह का) मुक़र्रर कर्दा हिस्सा है।
(सूरह–निसा–4/07)

औ़रत या मर्द के पीछे से जिमाअ़ करना हराम है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मलऊ़न है वो शख़्स जो बीवी से दुबर में मुबाशरत करे।
(अबू दाऊद–सुनन–2/647–ह०-2162)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/642–ह०-1166)

➡ हज़रत अ़ली बिन तल्क (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया औ़रतों के पीछे से यानी दुबर में सुहबत न करो कि अल्लाह तआ़ला सच्ची बात कहने से शर्माता नहीं। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/641–ह०-1164)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा)

से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला उस मर्द को निगाहे रहमत से नहीं देखेगा जो किसी औ़रत या मर्द के पीछे से जिमाअ़ करे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/641–ह०-1165)

–: रिश्तेदारों के हुकूक़ :–

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
और (याद करो) जब हमने औलादे याअ़कूब से पुख़्ता वाअ़दा लिया कि अल्लाह के सिवा (किसी की) इ़बादत न करना और माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करना और क़राबत दारों और यतीमों और मुहताजों के साथ भी भलाई करना और आ़म लोगों से (भी नरमी और खुश खुल्क़ी के साथ) नेकी की बात कहना और नमाज़ क़ायम रखना व ज़कात देते रहना फिर तुममें से चन्द लोगों के सिवा सारे (इस अ़हद से) रुगरदाँ हो गये।
(सूरह–बक़राह–2/83)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
और तुम अल्लाह की इ़बादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो और माँ बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों और नज़दीकी हमसाये व अजनबी पड़ोसी और हम मजलिस और मुसाफ़िर (के साथ भलाई करो)।
(सूरह–निसा–4/36)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
क़राबत दारों को उनका हक़ अदा करो और मुहताजों (का हक़ अदा करो) और मुसाफ़िरों को भी (दो) और

(अपना माल) फ़िजूल ख़र्ची में न उड़ाओ बेशक फ़िजूल ख़र्ची वाले शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा ही ना शुक्रा है। (सूरह–बनी इसराईल–17/26, 27)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

पस आप क़राबत दारों को उनका हक़ अदा करते रहें और मुहताज व मुसाफ़िर को (उनका हक़ अदा करते रहें) ये उन लोगों के लिये बेहतर है जो अल्लाह की रज़ामन्दी के तालिब हैं और वही लोग मुराद पाने वाले हैं। (सूरह–रुम–30/38)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक अल्लाह (हर एक के साथ) अ़द्ल व एहसान का हुक्म फ़रमाता है और क़राबत दारों को देते रहने का और बेहयाई और बुरे कामों व सरकशी व नाफ़रमानी से मना फ़रमाता है वो तुम्हें नसीहत फ़रमाता है ताकि तुम खूब याद रखो। (सूरह–नह्ल–16/90)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

आप से पूछते हैं कि (अल्लाह की राह में) क्या ख़र्च करें फ़रमादें जिस क़दर भी माल ख़र्च करो (दुरस्त है) मगर उसके हक़दार तुम्हारे माँ बाप हैं और क़रीबी रिश्तेदार हैं और यतीम और मुहताज हैं और मुसाफ़िर हैं और जो नेकी तुम करते हो बेशक अल्लाह उसे खूब जानने वाला है। (सूरह–बक़राह–2/215)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

नेकी सिर्फ़ यही नहीं कि तुम अपने मुँह मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ फेर लो बल्कि अ़सल नेकी तो ये है कि कोई शख़्स अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर–

और फ़रिश्तों पर और (अल्लाह की) किताब पर और पैग़म्बरों पर ईमान लाये और अल्लाह की मुहब्बत में (अपना) माल क़राबत दारों पर और यतीमों पर और मुहताजों पर और मुसाफ़िरों पर और माँगने वालों पर और (गुलामों की) गर्दनों (को आज़ाद कराने) में ख़र्च करे और नमाज़ क़ायम करे और ज़कात दे और जब कोई वाअ़दा करें तो अपना वाअ़दा पूरा करने वाले हों और सख़्ती (तंगदस्ती) में और मुसीबत (बीमारी) में व जंग की शिद्दत (जिहाद) के वक़्त सब्र करने वाले हों यही लोग सच्चे हैं और यही परहेज़गार हैं।
(सूरह–बक़राह–2/177)

–: रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को ये पसंद हो कि उसके रिज़्क़ में कुशादगी हो और उ़म्र में इज़ाफ़ा हो तो उसे चाहिये कि वो अपने रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करे।
(बुख़ारी–सहीह–2/479–ह०-2067)
(मुस्लिम–सहीह–6/195–ह०-6523)
(अबू दाऊद–सुनन–2/341–ह०-1693)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/791–ह०-7278)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक अल्लाह तआ़ला कुछ लोगों की उ़म्र बढ़ा देता है और उनके माल में इज़ाफ़ा कर देता है हालांकि अल्लाह तआ़ला उनसे इस क़दर नाराज़ होता है कि उनकी पैदाइश के दिन से उन

की तरफ़ नज़रे रहमत नहीं फ़रमाता सहाबा किराम ने अ़र्ज़ की (अल्लाह तआ़ला इतनी नाराज़गी के बावुजूद उन पर इतनी रहमत) किस बिना पर फ़रमाता है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया इसलिये कि वो अपने रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक करते हैं।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/793–ह०-7282)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अपने रब का ख़ौफ़ रखे और अपने रिश्तेदारों से तआ़ल्लुक़ रखे तो उसकी उ़म्र में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है और माल बढ़ा दिया जाता है और उसके अह्ल व अ़याल उससे मुहब्बत करने लगते हैं।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/76–ह०-59)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/793–ह०-7284)

➡ हज़रत मिक़दाम बिन माअ़दी करिब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें हुक्म देता है कि जो ज़्यादा क़रीबी रिश्तेदार हों तो उनके साथ उतना ज़्यादा हुस्ने सुलूक करो। (हाकिम–अल मुस्तदरक–5/775–ह०-7246)

➡ हज़रत अम्र बिन अबसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह अल्लाह तआ़ला ने आपको क्या पैग़ाम देकर भेजा है तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया ये कि अल्लाह की इ़बादत की जाये और–

बुतों को तोड़ दिया जाये और रिश्तेदारों के साथ नेकी व सिला रहमी का सुलूक किया जाये।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/771–ह०-7240)

➡ हज़रत इयाज़ बिन हिमार मुजाशिई (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जन्नती लोग तीन क़िस्म के हैं इन्साफ़ करने वाले हाकिम और सद्क़ा ख़ैरात करने वाले और वो जो अपने रिश्तेदारों और मुसलमानों के लिये नरम दिल हैं।
(मुस्लिम–सहीह–5/363–ह०-7207)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से बयान फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझे कोई वसीयत फ़रमांयें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया नमाज़ क़ायम करो ज़कात अदा करो रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखो बैतुल्लाह का हज व उ़मराह करो और अपने माँ बाप के साथ हुस्ने सुलूक करो और सिला रहमी करो और मेहमानों की ख़िदमत करो भलाई का हुक्म दो बुराई से मनाअ़ करो हमेशा अह्ले हक़ का साथ दो।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/790–ह०-7276)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि जो कुछ एक इन्सान सवाब की नियत से अपनी ज़ात और अह्ल व अ़याल पर ख़र्च करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे उसका अज्र देता है लिहाज़ा अपने अह्लो अ़याल पर ख़र्च किया करो और अगर कुछ बच रहे तो किसी क़रीबी रिश्तेदार को दो।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/77–ह०-63)

रिश्तेदारी जोड़ने से अल्लाह तआ़ला का तआ़ल्लुक़ जुड़ता है

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अपने अ़ज़ीज़ क़राबत दारों से मेलजोल रखता है सिला रहमी करता है तो मैं उस बन्दे से जुड़ता हूँ और जो अपने अ़ज़ीज़ क़राबत दारों से कटता है तो मैं भी उससे कट जाता हूँ। (अबू दाऊद–सुनन–2/341–ह०-1694)

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैं अल्लाह हूँ और मैं रहमान हूँ और मैंने ही रहम यानी रिश्तेदारी को पैदा किया और अपने नाम से उसका नाम रखा पस जिसने इस (रिश्तेदारी) को मिलाया मैं उससे मिलूँगा व जिसने इस (रिश्तेदारी) को तोड़ा मैं उसको (खुद से व अपनी रहमत से) दूर कर दूँगा।
(हाकिम–5/786–ह०-7267, 7268, 7269, 7270)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सबसे जल्दी जिस चीज़ का सवाब पहुँचता है वो नेकी करना और रिश्तेदारी निभाना और सबसे जल्दी जिस चीज़ का अ़ज़ाब पहुँचता है वो बग़ावत और रिश्तेदारी क़तअ़ करना है। (इब्ने माजा–सुनन–3/376–ह०-4212)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया नहीं कोई गुनाह जो इस क़ाबिल हो कि अल्लाह तआ़ला उसके मुरतकिब को दुनिया में भी सज़ा देने में जल्दी करे बावुजूद ये कि उसके लिये आख़िरत में भी जमाअ़ रहे यानी आख़िरत में भी उस की सज़ा मौजूद रहे और वो गुनाह क़तअ़ रहमी करना व जुल्म करना है। (शुअ़बुल ईमान–6/206–ह०-7960)

नमाज़ व ज़कात अदा करने और रिश्तेदारी क़ायम रखने वाले जन्नती

➡ हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से एक शख़्स ने अ़र्ज़ की ऐ अल्लाह के रसूल आप मुझे कोई ऐसा अ़मल बताये कि जो मुझे जन्नत में पहुँचा दे तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की इबादत करो और किसी तरह से उसका शरीक न ठहराओ और तुम नमाज़ और ज़कात अदा करो और रिश्ते दारी को क़ायम रखो।
(नसाई–सुनन–1/451–ह०-469)

रिश्तेदारी तोड़ने वाला जन्नत में नहीं जायेगा

➡ हज़रत जुबैर बिन मुतइम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रिश्तेदारी तोड़ने वाला जन्नत में नहीं जायेगा।
(बुख़ारी–सहीह–5/578–ह०-5984)
(मुस्लिम–सहीह–5/35–ह०-6520)

–: मेहमानों के हुक़ूक़ :–

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत उ़स्मान बिन मज़ऊ़न (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से फ़रमाया कि ऐ उ़स्मान तुम्हारे घर वालों का भी तुम पर हक़ है व तुम्हारे मेहमान का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारी जान का भी तुम पर हक़ है लिहाज़ा रोज़े रखो और छोड़ भी दिया करो, नमाज़ पढ़ों और सोया भी करो।
(अबू दाऊद–सुनन–2/101–ह०-1369)

–: मेहमान की इ़ज़्ज़त व इहतिराम :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अल्लाह पर और योमे आख़िरत पर ईमान व यक़ीन रखता हो तो उसे चाहिये कि अपने पड़ोसी के साथ अच्छा बरताव करे और उसे तकलीफ़ न दे और जो अल्लाह पर व योमे आख़िरत पर ईमान व यक़ीन रखता हो तो अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे और जो अल्लाह पर व योमे आख़िरत पर ईमान व यक़ीन रखता हो तो वो अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करे। (हाकिम–5/800–ह०-7297)
(मुस्लिम–सहीह–1/145–ह०-176)
(बुख़ारी–सहीह–5/592–ह०-6018, 6136, 6138, 6476)
(इब्ने माजा–सुनन–3/182–ह०-3672)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/304–ह०-2500)
(अबू दाऊद–सुनन–6/846–ह०-5154)

मेहमानी तीन दिन तक है फिर उसके बाअ़द सद्क़ा है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स का अल्लाह पर और योमे आख़िरत पर ईमान हो तो उसे चाहिये अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करे व खूब ख़िदमत करे और मेहमानी तीन दिन तक है फिर उसके बाअ़द सद्क़ा है और मेहमान के लिये हलाल नहीं कि अपने मेज़बान के पास डेरा डाल ले कि उसके लिये मशक़्क़त और बोझ बन जाये।

(अबू दाऊद–सुनन–4/912–ह०-3748)
(बुख़ारी–सहीह–5/592–ह०-6019, 6135)
(बुख़ारी–सहीह–6/71–ह०-6476)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/799–ह०-7296)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/349–ह०-764)

➡ हज़रत मिक़दाम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेहमान का एक रात ठहरना हर मुसलमान पर उसका हक़ है जो कि वाजिब है।

(अबू दाऊद–सुनन–3/913–ह०-3750)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/349–ह०-765)

➡ हज़रत उक़बा बिन आमिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप हमें किसी के पास भेजें और हम वहाँ ठहर जायें और मेज़बान अगर मेहमान नवाज़ी न करे तो हम क्या करें तो रसूलुल्लाह

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अगर तुम किसी के पास जाओ और वो तुम्हारे साथ वो ही बरताव करे जो मेहमान के साथ करना चाहिये तो वहाँ ठहर जाओ और अगर वो ऐसा न करे तो तुम उनसे मेहमानी का हक़ उनकी हैसियत के मुताबिक़ वसूल कर सकते हो।

(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/350–ह०-366)

ख़ुद भूका रहने और मेहमान को खिलाने पर आयत का नुज़ूल

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम के पास आया और कहा कि मैं फ़ाक़े से हूँ तो आपने अपनी अज़वाजे मुताह्रात से पूछा कि क्या घर में कुछ खाने को है तो उन्होंने जवाब में कहा कि पानी के सिवा घर में कुछ भी नहीं है तब एक अन्सारी सहाबी उठा और वो कहने लगा कि या रसूलल्लाह इस मेहमान को मैं अपने घर ले जाऊँगा और खाना खिलाऊँगा फिर वो अन्सारी सहाबी उस मेहमान को अपने घर ले गये और अपनी बीवी से कहा क्या तेरे पास खाने को कुछ है वो कहने लगीं कि सिवा मेरे और मेरे बच्चों के खाने के अ़लावा कुछ भी नहीं है तो अन्सारी सहाबी ने कहा कि इन बच्चों को किसी चीज़ से बहलाकर सुलादो और जब मेहमान अन्दर दाख़िल हो तो चराग़ बुझा देना और उस पर ये ज़ाहिर करना कि हम भी खाना खा रहे हैं फिर मेहमान के साथ घर वाले भी बैठ गये और खाना सिर्फ़ मेहमान ने ही खाया फिर जब सुबह हुई और वो दोंनों मियाँ व बीवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि–

वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुये तो आपने फ़रमाया कि तुमने आज रात अपने मेहमान के साथ जो सुलूक किया है उस पर अल्लाह तआ़ला इस पर बहुत खुश हुआ फिर ये आयत उतरी 'और अपनी जानों पर उन्हें तरजीह देते हैं अगरचा उन्हें शदीद हाजत ही हो'।
(सूरह–हश्र–59/9)
(मुस्लिम–सहीह–4/179–ह०-5359,5360)
(इमाम बुख़ारी–अलअदब अलमुफ़रद–1/347–ह०-761)

–: पड़ोसीयों के हुक़ूक़ :–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और तुम अल्लाह की इ़बादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो और माँ बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों और यतीमों और मुहताजों और नज़दीकी हमसाये व अजनबी पड़ोसी और हम मजलिस और मुसाफ़िर (के साथ भलाई करो)।
(सूरह–निसा–4/36)

➡ उम्मुल मुमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) मुझे मुसलसल पड़ोसियों के (साथ हुस्ने सुलूक के) बारे में ताकीद करते रहे हत्ता कि मुझे गुमान होने लगा कि ये उनको विरासत में भी शरीक कर देंगे और हमसायों को वारिस बना देंगे। (बुख़ारी–सहीह–5/590–ह०-6014)
(मुस्लिम–सहीह–6231/–ह०-6685)
(इब्ने माजा–सुनन–3/182–ह०-3673)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1044–ह०-1943)
(अबू दाऊद–सुनन–6/844–ह०-5151)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अल्लाह पर और योमे आख़िरत पर ईमान व यक़ीन रखता हो तो उसे चाहिये कि अपने पड़ोसी के साथ अच्छा बरताव करे व उसे तकलीफ़ न दे और जो अल्लाह पर और योमे आख़िरत पर ईमान व यक़ीन रखता हो तो अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे और जो अल्लाह पर व योमे आख़िरत पर ईमान व यक़ीन रखता हो तो वो अपने मेहमान की इ़ज़्ज़त करे। (हाकिम–5/800–ह०-7297)
(मुस्लिम–सहीह–1/145–ह०-176)
(बुख़ारी–सहीह–5/592–ह०-6018, 6136, 6138, 6476)
(इब्ने माजा–सुनन–3/182–ह०-3672)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/304–ह०-2500)
(अबू दाऊद–सुनन–6/846–ह०-5154)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की बारगाह में सबसे अच्छा वो शख़्स है जो अपने दोस्तों के हक़ में अच्छा है अल्लाह तआ़ला की बारगाह में सबसे अच्छा पड़ोसी वो है जो अपने पड़ोसी के हक़ में अच्छा है। (हाकिम–5/798–ह०-7295)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/98–ह०-115)

➡ हज़रत हसन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से पड़ोसी के बारे में पूछा गया (कि पड़ोसी कहाँ तक होते हैं) तो आपने फ़रमाया कि इर्द गिर्द चारों तरफ़ चालीस घर वाले पड़ोसी कहलाते हैं।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/96–ह०-109)

➡ हज़रत अम्र बिन शरीद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है हज़रत अबू राफ़ेअ़ ने हज़रत साअ़द बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) को एक घर चार सौ मिस्क़ाल में फ़रोख़्त किया और फ़रमाया कि अगर मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से ये बात न सुनी होती कि पड़ोसी हमसायगी का ज़्यादा हक़दार है तो मैं ये घर आपको फ़रोख़्त न करता (जबकि उनका घर पाँच सौ मिस्क़ाल में दूसरा शख़्स ख़रीदने के लिये तैयार था। (एक मिस्क़ाल यानी साढ़े चार माशे वज़न का सोने का सिक्का जो अ़रब में राइज था) (बुख़ारी–सहीह–6/337–ह०-6981)

–: पड़ोसीयों से हुस्ने सुलूक :–

➡ हज़रत कुराद सलमी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करते हो तो जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाये तो उसे अदा करो और जब तुम बात करो तो सच बोलो और जो तुम्हारा पड़ोसी हो उससे अच्छा सुलूक करो।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/124–ह०-6517)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सालन पकाते वक़्त पानी डालकर शोरबा बढ़ा लिया करो और फिर अपने इर्द गिर्द हमसायों पर नज़र डालो और ज़रुरत मन्द के घर पहुँचाओ।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/97–ह०-114)

क़यामत की निशानी जब आदमी हमसाये को क़त्ल करने लगे

➡ हज़रत अबू मूसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया योमे क़यामत आने में देर नहीं लगेगी जब आदमी अपने हमसाये को क़त्ल करने लगे या भाई या बाप को क़त्ल करने लगे।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/99–ह०-118)

वो मोमिन नहीं जिसके शर से उसके पड़ोसी परेशान रहते हों

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह की क़सम वो मोमिन नहीं वो मोमिन नहीं वो मोमिन नहीं सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह वो कौन है आपने फ़रमाया जिसके शर से उसके पड़ोसी परेशान रहते हों और वो मोमिन नहीं जिसका पड़ोसी उसकी अज़्ज़ियतों से महफूज़ नहीं। (बुख़ारी–सहीह–5/591–ह०-6016)
(मुस्लिम–सहीह–1/161–ह०-172)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/28–ह०-21 व 7299)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो मोमिन नहीं है जिसकी बुरी अ़दतों की वजह से उसके पड़ोसी परेशान रहते हों।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/801–ह०-7300)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला दुनिया का माल हर शख़्स को दे देता है ख़्वाह अल्लाह तआ़ला उससे मुहब्बत करता हो या न करता हो जबकि ईमान सिर्फ़ उन लोगों को ही अ़ता करता है कि जिनसे वो मुहब्बत करता है लिहाज़ा जिसको उसने ईमान की दौलत से नवाज़ा है उससे अल्लाह तआ़ला मुहब्बत करता है और उस ज़ात की क़सम कि जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मुहम्मद की जान है बन्दा उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हो सकता जब तक उसका दिल मुसलमान न हो और बन्दा उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हो सकता जब तक उसका पड़ोसी उसके शर से महफ़ूज़ न हो (हाकिम–अल मुस्तदरक–5/801–ह०-7301)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो मोमिन नहीं जो इस हाल में रात गुज़ारे कि उसका पड़ोसी भूका हो।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/805–ह०-7307)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/97–ह०-112)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कौन शख़्स मुझसे पाँच बातें सुनकर याद रखता है और उन पर अ़मल करता है सो मैंने कहा कि या रसूलल्लाह वो पाँच बातें बयान फ़रमायें मैं उन्हें याद रखूँगा और उन पर अ़मल करुँगा पस आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हराम चीज़ों से बच तू सब लोगों

से ज़्यादा आ़बिद हो जायेगा और अल्लाह तआ़ाला की तक़सीम पर राज़ी रह तो तू सबसे ज़्यादा बेपर'वाह हो जायेगा और अपने पड़ोसी पर एहसान कर तू मोमिन हो जायेगा और लोगों के लिये वही चीज़ पसंद कर जो तू अपने लिये पसंद करता है तू मुसलमान हो जायेगा और बहुत ज़्यादा न हंस इसलिये कि बहुत हंसना दिल को मार डालता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/177–ह०-2305)

पड़ोसी को तकलीफ़ देने वाला जन्नत में नहीं जायेगा

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बन्दे का ईमान उस वक़्त तक दुरस्त नहीं हो सकता जब तक उसका दिल दुरस्त न हो जाये और उसका दिल उस वक़्त तक दुरस्त नहीं हो सकता जब तक उसकी ज़बान दुरस्त न हो जाये और कोई शख़्स उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता जब तक उसका पड़ोसी उसकी अज़िय्यतों से महफ़ूज़ न हो जाये। (मुस्नद अहमद–3/198–ह०-13071)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–1/41–ह०-08)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो शख़्स जन्नत में नहीं जायेगा जिसका पड़ोसी उसके मक्र व शर और फ़साद व ज़रर से महफ़ूज़ नहीं है।
(मुस्लिम–सहीह–1/143–ह०-172)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/101–ह०-122)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह फ़ुलां अ़ौरत रात को क़याम करती है व दिन को रोज़ा भी रखती है जबकि वो गुफ़्तगू में अपने पड़ोसियों को तकलीफ़ देती है और बहुत ज़बान दराज़ है तो आपने फ़रमाया कि उसमें कोई भलाई नहीं है और वो दोज़ख़ी है यूँही एक दूसरी अ़ौरत के बारे में अ़र्ज़ किया गया कि फ़ुलां अ़ौरत सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ती है और सिर्फ़ रमज़ान के रोज़े रखती है और पनीर के टुकड़े सदक़ा करती है और इसके अ़लावा उसकी कोई ख़ास इ़बादत नहीं है और वो अपनी ज़बान से किसी को तकलीफ़ नहीं देती तो आपने फ़रमाया वो जन्नती है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/803–ह०-7304, 7305)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तअ़ाला पर और योमे क़यामत पर ईमान रखता हो तो उसे चाहिये कि वो अपने पड़ोसी को तकलीफ़ न दे।
(बुख़ारी–सहीह–5/164–ह०-5185, 6018, 6475)
(मुस्लिम–सहीह–1/145–ह०-176)

–: मुहसिन की अ़लामत :–

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में एक शख़्स आया और अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह मुझे कोई ऐसा अ़मल बतायें कि मैं जन्नत का मुस्तहिक़ बन जाऊँ तो आपने फ़रमाया कि मुहसिन बन जाओ तो उसने कहा मुझे कैसे पता चलेगा

कि मैं मुहसिन (एहसान करने वाला, नेक) हूँ तो आप ने फ़रमाया कि जब तेरा पड़ोसी तुझे कहे कि तू नेक है तो तू नेक है और जब तेरा पड़ोसी तुझे बुरा कहे तो तू बुरा है (हाकिम–अल मुस्तदरक–1/755–ह०-1399)
(इब्ने माजा–सुनन–3/378–ह०-4222)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/85–ह०-9567)

पड़ोसी दीवार में लकड़ी गाढ़ने से मनाअ़ न करे

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से कोई भी अपने पड़ोसी को दीवार में लकड़ी गाढ़ने से मनाअ़ न करे। (मुस्लिम–सहीह–4/230–ह०-4130)

कोई पड़ोसन अपनी पड़ोसन को हक़ीर ख़्याल न करे

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ मुसलमान औ़रतों तुममें से कोई पड़ोसन अपनी किसी पड़ोसन के हदिये को माअ़मूली व हक़ीर ख़्याल न करे अगरचा बकरी की खुरी का हदिया ही हो यानी कोई पड़ोसन अपनी किसी पड़ोसन को किसी चीज़ का हदिया देने में हक़ीर ख़्याल न करे और कोई पड़ोसन अपनी किसी पड़ोसन को किसी चीज़ का हदिया लेने में हक़ीर न ख़्याल न करे ख़्वाह बक़री का पाया ही क्यों न हो।
(बुख़ारी–सहीह–5/591–ह०-6017)

-: मुसलमानों के हुक़ूक़ :-

-: सब मुसलमान भाई भाई हैं :-

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक सारे मुसलमान (आपस में) भाई भाई हैं सो तुम अपने दो भाइयों के दरमियान सुलह कराया करो और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम पर रहम किया जाये। (सूरह-हुजुरात-49/10)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरा करो जैसा उससे डरने का हक़ है और तुम्हारी मौत सिर्फ़ इस हाल पर आये कि तुम मुसलमान हो और तुम सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो और तफ़रक़ा मत डालो और अपने ऊपर अल्लाह की उस नेअ़मत को याद करो जब तुम (एक दूसरे के) दुश्मन थे तो उस (अल्लाह) ने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त पैदा कर दी और तुम उसकी नेअ़मत के बाइस आपस में भाई भाई हो गये और तुम (दोज़ख़ की) आग के गढ़े के किनारे पर पहुँच चुके थे फिर उसने तुम्हें उस गढ़े से बचा लिया यूँही अल्लाह तआ़ला अपनी निशानियाँ खोलकर बयान फ़रमाता है ताकि तुम हिदायत पा जाओ।
(सूरह-आले इमरान-3/102, 103)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और जो शख़्स अल्लाह (की रस्सी) को मज़बूत पकड़ लेता है तो उसे ज़रुर सीधी राह की तरफ़ हिदायत की जाती है। (सूरह-आले इमरान-3/101)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मुसलमान एक दूसरे के दीनी भाई हैं और मुसलमान का मुसलमान पर हक़ ये है कि न वो ख़्यानत करे और न झूट बोले और न अपनी ताईद और मदद से महरुम करे और न ही वो उसे बेइ़ज़्ज़त करे और मुसलमान पर हराम है कि वो उसका माल नाजाइज़ तौर पर या बे-ईमानी से खाये और मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का खून हराम है और न ही कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई को हक़ीर जाने। (तिर्मिज़ी-सुनन-1/1035-ह०-1927)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है न वो उस पर जुल्म करता है और न वो उसे जुल्म के हवाले करता है और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की ज़रुरत को पूरा करे तो अल्लाह तआ़ाला उसकी ज़रुरत को पूरा फ़रमाता है (बुख़ारी-सहीह-6/317-ह०-6951)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान मुसलमान का भाई है न ही वो उस पर जुल्म करता है और न जुल्म के हवाले करता है और न ही उसे बे सहारा छोड़ता है और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के काम आता है तो अल्लाह तआ़ाला उसके काम में मदद फ़रमाता है और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की दुनियावी मुश्किल हल करता है तो अल्लाह तआ़ाला

उसकी उख़्र‘वी मुश्किल हल फ़रमायेगा और जो शख़्स अपने भाई की ज़रुरत को पूरा करने में मसरुफ़ होता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी ज़रुरत पूरी फ़रमाता है और जो मुसलमान किसी मुसलमान की मुसीबत दूर करेगा तो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसकी मुसीबत को दूर करेगा नीज़ जो शख़्स किसी मुसलमान का ऐ़ब छिपायेगा तो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसकी पर्दा पोशी फ़रमायेगा। (बुख़ारी–सहीह–2/679–ह०-2442)
(मुस्लिम–सहीह–5/55–ह०-6578)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/791–ह०-1426)
(अबू दाऊद–सुनन–4/692–ह०-4893)
(मुस्नद अहमद–2/91–ह०-5646)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/637–ह०-533)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि खुद को बदगुमानी से दूर रखो क्योंकि बदगुमानी झूटी बात है और न ही जासूसी करो और न किसी की टोह में लगे रहो और न एक दूसरे से बुग्ज़ रखो (ऐ अल्लाह के बन्दो) भाई भाई बनकर रहो। (बुख़ारी–सहीह–5/142–ह०-5143)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मुसलमान मुसलमान का भाई है न वो उस पर जुल्म करता और न ही उसे ज़लील करता है और न उसे हक़ीर समझता है और न उससे ख़्यानत करता है और आदमी के बुरा होने के लिये यही काफ़ी है कि वो अपने मुसलमान भाई को हक़ीर जाने और एक मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का

खून व उसका माल और उसकी इ़ज़्ज़त व आबरु सब हराम हैं। (मुस्लिम–सहीह–6/198–ह०-6541)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1035–ह०-1927)
(अबू दाऊद–सुनन–6/685–ह०-4882)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मोमिन अपने भाई के लिये आइने की मानिन्द होता है जब भाई में कोई ऐ़ब या नक़्स देखता है तो उसकी इस्लाह करता और मोमिन दूसरे मोमिन का भाई होता है जो उससे नुक़सान को दूर करता है और उसकी हिफ़ाज़त करता है।
(इमाम बुख़ारी–अदब अल मुफ़रद–1/147–ह०-239,240)

मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा क़ता तअ़ाल्लुक़ रहना

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आपस में बुग्ज़ न रखो और न हसद किया करो और ना ही एक दूसरे से मुँह मोड़ो और ऐ अल्लाह के बन्दो आपस में भाई भाई बनकर रहो व किसी मुसलमान के लिये ये जाइज़ नहीं कि वो अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा क़तअ़ तअ़ाल्लुक़ रहे और उनमें से बेहतर शुमार वो होगा जो सुलह के लिये पहले सलाम करे।
(बुख़ारी–सहीह–5/612–ह०-6065, 6077)
(मुस्लिम–सहीह–6/196–ह०-6526)
(मुस्लिम–सहीह–6/196–ह०-6532)
(अबू दाऊद–सुनन–6/703–ह०-4910, 4911)
(इमाम बुख़ारी–अदब अल मुफ़रद–1/206–ह०-403, 411)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान को हलाल नहीं कि वो किसी मुसलमान से तीन दिन से ज़्यादा क़ताअ़ तअ़ल्लुक़ रहे अगर तीन दिन गुज़र जायें तो उसे चाहिये कि वो उससे मिले और उसको सलाम करे। (अबू दाऊद–सुनन–6/704–ह०-4912)

➡ हज़रत अबू ख़राश सल्मी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अपने भाई से साल भर तक क़ताअ़ तअ़ल्लुक़ रखा तो ये उसके लिये ऐसा होगा जैसे उसको क़त्ल कर दिया।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/797–ह०-7292)
(इमाम बुख़ारी–अदब अल मुफ़रद–1/208–ह०-409,410)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान को हलाल नहीं कि वो किसी मुसलमान से तीन दिन से ज़्यादा मेलजोल छोड़े रहे और जिसने तीन दिन से ज़्यादा मेलजोल मुनक़ताअ़ किया और मर गया तो वो आग में जायेगा। (अबू दाऊद–सुनन–6/705–ह०-4914)

➡ हज़रत हिशाम बिन आ़मिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि वो अपने मुसलमान भाई से तीन रातों से ज़्यादा तक नाराज़ रहे और जब तक वो नाराज़ रहेंगे तब तक वो अपने हक़ रास्ते से हटे रहेंगे

और उन दोंनों में नफ़अ़ उसे होगा जो सुलह में पहल करेगा और अगर वो उसी नाराज़गी में फ़ौत हो गये तो वो जन्नत में नहीं जा सकेंगे।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/209–ह०-412)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तीन दिन से ज़्यादा क़ताअ़ तअ़ाल्लुक़ी जाइज़ नहीं है अगर रुठे हुये दौंनों अफ़राद का आमना सामना हो और उनमें से एक फ़र्द सलाम में पहल करे और दूसरा सलाम का जवाब दे तो दोंनों को बराबर सवाब मिलेगा और अगर सामने वाला जवाब न दे तो पहल करने वाला गुनाह से बरी हो गया और दूसरा गुनाहगार हो गया नीज़ अगर वो दोनों नाराज़गी के अ़ालम में फ़ौत हो जायें तो वो दोंनों जन्नत में जमाअ़ नहीं हो सकते।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/797–ह०-7291)

–: मुसलमान के मुसलमान पर पाँच हक़ :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान के मुसलमान पर पाँच हक़ हैं– (1) दावत कुबूल करना (2) सलाम का जवाब देना (3) बीमार की अ़यादत करना (4) छींकने पर अल्हम्दुलिल्लाह के जवाब में यरहमुकल्लाह कहना (5) जनाज़े में शरीक होना(इब्ने माजा–1/490-ह०–1435)
(बुख़ारी–सहीह–2/60-ह०–1240)
(अबू दाऊद–सुनन–6/769-ह०–5030)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/626-ह०–661)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर नेकी में छः हुकूक़ हैं- (1) जब मुलाक़ात करे तो सलाम करे (2) उसकी दावत कुबूल करे (3) छींकने का जवाब दे (4) बीमार हो तो अ़यादत करे (5) मर जाये तो उसके जनाज़े के पीछे चले (6) और उसके लिये वो ही चीज़ पसंद करे जो अपने लिये पसंद करता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/475-ह०–2736)
(मुस्लिम–सहीह–5/337-ह०–5651)

छींकने पर अल्हम्दुलिल्लाह के जवाब में यरहमुकल्लाह कहना

➡ हज़रत अबू अय्यूब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुममें से किसी को छींक आये तो कहे ''अल्हम्दु लिल्लाह अ़ला कुल्लि हाल'' यानी हर हाल पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र है और जवाब देने वाला ये कहे ''यरहमू कल्लाहु'' यानी अल्लाह तुझ पर रहम फ़रमाये फिर छींकने वाला कहे ''यग़फ़िरुल्लाहु लना वलाकुम'' यानी अल्लाह तआ़ला मुझे भी बख़्श दे और तुम (सब) को भी बख़्श दे।
(अबू दाऊद–सुनन–4/770–ह०-5031, 5033)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/477–ह०-2740, 2741)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि छींक अल्लाह की तरफ़ से है और जमाई शैतान की तरफ़ से जब तुममें

से किसी को छींक आये तो उसे चाहिये कि वो अपना हाथ मुँह पर रखे और जमाई के वक़्त जब वो हा हा करता है तो शैतान उसके मुँह से हंसता है और बेशक छींक अल्लाह तअ़ाला को पसंद है और जमाई अल्लाह तअ़ाला नापसंद फ़रमाता है।
(बुख़ारी–सहीह–5/684–ह०-6223)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/480–ह०-2746)
(अबू दाऊद–सुनन–6/768–ह०-5028)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया छींकने वाले को तीन बार तक जवाब दो उससे ज़ायद होने पर चाहे जवाब दो चाहे न दो। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/479–ह०-2744)
(अबू दाऊद–सुनन–6/772–ह०-5036)

अपने भाई के लिये वो ही चीज़ पसंद करो जो अपने लिये करते हो

➡ हज़रत मुअ़ाज़ (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सबसे अफ़ज़ल ईमान क्या है तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह के लिये किसी से मुहब्बत और नफ़रत करो और अपनी ज़बान को ज़िक्रे इलाही में मसरुफ़ रखो फिर अ़र्ज़ किया कि इसके अ़लावा तो आपने फ़रमाया कि लोगों के लिये वो चीज़ पसन्द करो जो अपने लिये पसंद करते हो और उनके लिये भी उस चीज़ को ना पसन्द करो जो अपने लिये नापसंद करते हो। (तिर्मिज़ी–2/177–ह०-2305)
(मुस्नद अहमद–10/385–ह०-22481, 22483)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से कोई शख़्स मोमिन नहीं हो सकता यहाँ तक कि वो अपने भाई के लिये वही चीज़ पसंद करे जो अपने लिये पसंद करता है।
(बुख़ारी–सहीह–1/85–ह०-13)
(मुस्लिम–सहीह–1/160–ह०-170)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/311–ह०-2515)
(नसाई–सुनन–7/116–ह०-5016)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने मुसलमान भाई के लिये वो ही चीज़ पसंद करो जो तुम अपने लिये पसंद करते हो। (हाकिम–अल मुस्तदरक–5/808–ह०-7313)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/475-ह०–2736)
(मुस्लिम–सहीह–5/337-ह०–5651)

–: बीमार की अ़यादत करना :–

➡ हज़रत मुआ़ज़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने पाँच चीज़ों के मुताअ़ल्लिक़ हमसे वाअ़दा किया कि जो शख़्स ये पाँच काम करेगा तो वो अल्लाह तआ़ाला की हिफ़ाज़त में रहेगा मरीज़ की तीमारदारी करने वाला व जनाज़े में शरीक होने वाला, राहे ख़ुदा में जिहाद के लिये जाने वाला, इमाम के पास जाकर उसकी इ़ज़्ज़त व एहतिराम करने वाला और वो आदमी जो अपने घर में बैठ जाये कि लोग उसकी ईज़ा से महफ़ूज़ रहें और वो लोगों की ईज़ा से महफ़ूज़ रहे।
(मुस्नद अहमद–10/369–ह०-22444)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक क़यामत के दिन अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि ऐ इब्ने आदम मैं बीमार हुआ और तूने मेरी अयादत न की पस बन्दा अर्ज़ करेगा कि ऐ मेरे रब मैं तेरी अयादत कैसे करता जबकि तू खुद तमाम जहानों का पालने वाला है फिर इरशाद होगा क्या तुझे माअलूम नहीं है कि मेरा फुलाँ बन्दा बीमार हुआ और तूने उसकी अयादत न की क्या तू नहीं जानता की अगर तू उसकी अयादत करता तो मुझे उसके पास मौजूद पाता।
(मुस्लिम–सहीह–6/201-ह०–6556)
(बुख़ारी–सहीह–1/182–ह०-517)
(इब्ने हिब्बान–सही–1/426-ह०–269, 944)
(बैहक़ी–शुअबुल ईमान–6/446-ह०–9182)
(अत्तरग़ीब–वत्तरहीब–2/418-ह०–1742)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मरीज़ की अयादत करो और जनाज़े के साथ चलो इससे तुम्हें मौत याद आयेगी। (इमाम बुख़ारी–अदब मुफ़रद–1/251–ह०-527)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तीन चीज़ें हैं जो तमाम की तमाम हर मुसलमान पर लाज़िम हैं मरीज़ की अयादत करना जनाज़े में शिरकत करना और जब छींक लेने वाला अल्हम्दु लिल्लाह कहे तो उसका जवाब देना। (इमाम बुख़ारी–अदब अलमुफ़रद–1/251–ह०-528)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मरीज़ की अ़यादत को जायेगा तो वो अल्लाह तआ़ाला की रहमत में ग़ोताज़न हो जायेगा और जब वो वहाँ बैठ गया तो वो मुस्तक़िल तौर पर अल्लाह की रहमत के इहाते में होगा।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/353–ह०-532)

–: अ़यादत के फ़ज़ाइल व अहकाम :–

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक एक मुसलमान जब अपने किसी मुसलमान भाई की अ़यादत करता है तो वहाँ से लौटने तक वो बराबर जन्नत के बाग़ में रहता है।
(मुस्लिम–सहीह–6/200-ह०–6551)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/540-ह०–967)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/538-ह०–10937)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/612-ह०–6580)

➡ हज़रत काअ़ब बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैह व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मुसलमान मरीज़ की अ़यादत करता है तो वो अल्लाह तआ़ाला की रहमत में ग़ोते लगाता है और जब वो उस मरीज़ के पास बैठता है तो वो रहमत में डूब जाता है (अत्तरग़ीब–वत्तरहीब–2/419-ह०–1746)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम)

ने फ़रमाया कि जिसने अच्छी तरह से वुज़ू किया और सवाब की नियत से अपने मुसलमान भाई की अ़यादत के लिये गया तो उस शख़्स को दोज़ख़ से सत्तर साल की मुसाफ़त पर दूर कर दिया जाता है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/501-ह०–3097)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मर'वी है कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स शाम के वक़्त किसी मरीज़ की अ़यादत के लिये निकलता है तो उसके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते भी निकलते हैं जो उस शख़्स के लिये सुबह तक बख़्शिश तलब करते रहते हैं और जन्नत में उसे एक बाग़ भी हासिल होगा और जो कोई सुबह के वक़्त अ़यादत को निकले तो उसके साथ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते निकलते हैं जो उसके लिये शाम तक बख़्शिश माँगते रहते हैं और जन्नत में उसे एक बाग़ भी हासिल होता है। (अबू दाऊद–सुनन–3/502-ह०–3098)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/541-ह०–969)
(मुस्लिम–सहीह–5/45–ह०-6551)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/613-ह०–6584)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/690-ह०–1264)

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम बीमार के पास जाओ या मय्यत के पास जाओ तो अच्छी बात कहो क्योंकि फ़रिश्ते तुम्हारी बात पर आमीन कहते हैं।
(मुस्लिम–सहीह–2/378-ह०–2129)
(अबू दाऊद–सुनन–3/513-ह०–3115)
(नसाई–सुनन–1/597-ह०–1828)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मर‘वी है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स किसी की अ़यादत को जाता है तो गोया वो जन्नत के बाग़ में चलता है जब वो बैठता है तो रहमत उसे ढाँप लेती है और अगर ये सुबह का वक़्त हो तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते शाम तक उसके लिये रहमत की दुआ़ करते हैं और अगर शाम का वक़्त हो तो सुबह तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिये रहमत की दुआ़ करते हैं।

(अबू दाऊद–सुनन–3/502-ह०–3098)
(इब्ने माजा–सुनन–1/492-ह०–1442)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/104-ह०–2958)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/689-ह०–1264)
(तबरानी–अल मुअ़जम औसत–5/605-ह०–7464)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/444-ह०–9173)
(इब्ने अबी शैबा–अल मुसन्निफ़–3/539-ह०–10941)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स अपने दोस्त की बीमार पुर्सी को जाता है तो अल्लाह सुबहानहू व तआ़ला फ़रमाता है कि तूने अच्छा किया जो तुम चलकर अपने दोस्त के पास पहुँचे हो और तुमने जन्नत में अपनी जगह बनाली।

(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/–ह०-)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम बीमार की अ़यादत को जाओ तो उसे ज़िन्दगी की उ़म्मीद दिलाओ क्योंकि

ये किसी चीज़ को लौटा तो नहीं सकती लेकिन बीमार के दिल को ख़ुशी देती है।
(इब्ने माजा–सुनन–1/491-ह०–1438)

–: बीमार से दुअ़ा कराना :–

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम बीमार के पास जाओ तो तुम उससे कहो कि वो तुम्हारे हक़ में दुअ़ा करे क्योंकि बीमार की दुअ़ा फ़रिश्तों की दुअ़ा के मिस्ल होती है। (इब्ने माजा–सुनन–1/491-ह०–1441)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/451-ह०–9214)

–: सलाम करने के अहकाम :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने जब हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) को पैदा फ़रमाया तो उनका क़द साठ हाथ था फिर अल्लाह तआ़ला ने उनसे फ़रमाया कि फ़रिश्तों को सलाम करो और फिर ग़ौर से सुनो कि वो क्या जवाब देते हैं वही तुम्हारा व तुम्हारी औलाद का सलाम होगा चुनांचा हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा 'अस्सलामु अ़लैकुम' (तुम पर अल्लाह की सलामती हो) फिर फ़रिश्तों ने जवाब दिया अस्सलामु अ़लैका व रहमतुल्लाहि (तुम पर अल्लाह की सलामती हो और अल्लाह की रहमत हो) फ़रिश्तों ने वरहमतुल्लाहि का इज़ाफ़ा किया फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर वो शख़्स

जो जन्नत में दाख़िल होगा वो हज़रत आदम की इसी सूरत पर होगा और उनकी क़ामत जन्नत में साठ हाथ थी फिर उनके बाअ़द आज तक (उनकी औलाद की) ख़िल्क़त छोटी होती रही है।
(बुख़ारी–सहीह–3/507–ह०-3326)
(बुख़ारी–सहीह–5/687–ह०-6227)
(मुस्लिम–सहीह–5/344–ह०-7163)

इरशादे बारी तआ़ला है:–
ऐ ईमान वालो अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में उस वक़्त तक दाख़िल न हो जब तक तुम उनसे इजाज़त न लेलो और उनमें रहने वालों को (दाख़िल होते ही) सलाम कहा करो ये तुम्हारे लिये बेहतर (नसीहत) है। (सूरह–नूर–24/27)

इरशादे बारी तआ़ला है:–
और जब तुम्हें कोई सलाम करे तो तुम उससे बेहतर तरीक़े से सलाम का जवाब दो या कम अज़ कम उन्हीं अल्फ़ाज़ में जवाब देदो। (सूरह–निसा–4/86)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने नमाज़ से फ़ारिग़ होकर फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला तो खुद सलाम है और जब तुममें से कोई नमाज़ में बैठे तो कहे ‘अत्तहिय्यातु लिल्लाहि....व रसूलुहू’’ तक पढ़े ‘तमाम इ़बादतें नमाज़ें और पाकीज़ा कलिमात अल्लाह के लिये हैं ऐ नबी आप पर सलाम हो आप पर अल्लाह की रहमतें और उसकी बरकात नाज़िल हों हम पर भी सलाम हो और अल्लाह तआ़ला के तमाम नेक बन्दों पर भी हो’ जब नमाज़ी ये

कहेगा तो ज़मीनो आसमान के हर एक नेक बन्दे को ये सलाम पहुँच जायेगा फिर ये कहो 'मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माअ़बूद बरहक़ नहीं नीज़ मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं' फिर इसके बाअ़द जो दुआ़ नमाज़ी को पसंद हो वो पढ़े।
(बुख़ारी–सहीह–5/690–ह०-6230)
(नसाई–सुनन–1/450–ह०-1165)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि इस्लाम में कौन सी बात ज़्यादा बेहतर है तो आपने फ़रमाया कि तुम खाना खिलाओ और हर शख़्स को सलाम करो ख़्वाह तुम उसे पहचानते हो या न पहचानते हो।
(बुख़ारी–सहीह–5/692–ह०-6236)
(मुस्लिम–सहीह–1/138–ह०-160)
(इब्ने माजा–सुनन–3/61–ह०-3253)
(अबू दाऊद–सुनन–6/868–ह०-5194)

➡ हज़रत बरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सलाम को आ़म करो क्योंकि इसमें तुम्हारी सलामती है।
(इमाम बुख़ारी–अलअदब अलमुफ़रद–1/450–ह०-1008)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान करती हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया कि ऐ आयशा ये जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) हैं जो तुम्हें

सलाम कह रहे हैं पस मैंने कहा व अ़लैहिस्सलाम व-रहमतुल्लाहि व बराकातहू और जो कुछ आप देख रहे हैं मैं नहीं देखती।
(इमाम बुख़ारी–अलअदब अलमुफ़रद–1/471–ह०-1068)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से ऐसे शख़्स के बारे में पूछा गया जो बग़ैर सलाम किये घर के अन्दर दाख़िल होना चाहे तो आपने फ़रमाया कि सलाम कहे बग़ैर उसे इजाज़त न दी जाये।
(इमाम बुख़ारी–अलअदब अलमुफ़रद–1/483–ह०-1098)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुममें से कोई किसी मजलिस में पहुँचे तो सलाम करे फिर अगर वो बैठना चाहे तो बैठे और उठते वक़्त फिर सलाम करे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/459–ह०-2706)
(अबू दाऊद–सुनन–6/875–ह०-5208)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी मुसलमान को हलाल नहीं कि वो किसी मुसलमान से तीन दिन से ज़्यादा क़ताअ़ तआ़ल्लुक़ रहे अगर तीन दिन गुज़र जायें तो उसे चाहिये कि वो उससे मिले और उसको सलाम करे। (अबू दाऊद–सुनन–6/704–ह०-4912)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आपस में बुग्ज़ न रखो और न हसद

किया करो और ना ही एक दूसरे से मुँह मोड़ो और ऐ अल्लाह के बन्दो आपस में भाई भाई बनकर रहो और किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं कि वो अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा क़तअ़ तअ़ाल्लुक़ रहे और उनमें से बेहतर शुमार वो होगा जो सुलह के लिये पहले सलाम करे।

(बुख़ारी–सहीह–5/612–ह०-6065, 6077)
(मुस्लिम–सहीह–6/196–ह०-6526)
(मुस्लिम–सहीह–6/196–ह०-6532)
(अबू दाऊद–सुनन–6/703–ह०-4910, 4911)
(इमाम बुख़ारी–अदब अल मुफ़रद–1/206–ह०-403, 411)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया कि ऐ बेटे जब तुम घर जाओ तो सलाम किया करो ये तुम्हारे और तुम्हारे घर वालों के लिये बाइसे बरकत होगा।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/456–ह०-2698)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ''अस्सलाम'' अल्लाह तअ़ाला के नामों में से एक नाम है और इसे अल्लाह तअ़ाला ने अह्ले ज़मीन के लिये उतारा है लिहाज़ा आपस में सलाम को खूब फैलाया करो।

(इमाम बुख़ारी–अलअदब अलमुफ़रद–1/453–ह०-1019)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम–

जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि तुम जन्नत में दाख़िल न होगे जब तक कि ईमान न ले आओ और तुम साहिबे ईमान न होगे जब तक कि तुम आपस में मुहब्बत न करो और क्या मैं तुम्हें ऐसी बात न बताऊँ कि जब तुम वो करोगे तो तुम आपस में मुहब्बत करने लगोगे और वो बात ये है कि अपने दरमियान सलाम को रिवाज दो। (मुस्लिम–सहीह–1/157–ह०-194)
(इब्ने माजा–सुनन–3/187–ह०-3692)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रहमान की इ़बादत करो और सलाम को रि'वाज दो।
(इब्ने माजा–सुनन–3/187–ह०-3694)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया छोटा बड़े को सलाम करे, गुज़रने वाला बैठे हुये को सलाम करे, कम लोग ज़्यादा को सलाम करें और सवार आदमी पैदल चलने वाले को सलाम करे।
(अबू दाऊद–सुनन–6/871–ह०-5198, 5199)

ये इस्लामी तरीक़ा व अदब है कि छोटा बड़े को सलाम करे मगर बड़ा अगर छोटे को सलाम करे तो सलाम की इ़ब्तिदा करने वाले को ज़्यादा सवाब मिलता है और सलाम की इ़ब्तिदा करने में बड़ी फ़ज़ीलत है जैसा कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अपने से छोटे को सलाम किया करते थे।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब तुममें से कोई अपने भाई से मिले तो उसे सलाम कहे फिर अगर उन के दरमियान कोई दरख़्त या दीवार या पत्थर हाइल हो जाये और फिर दोबारा मिले तब भी सलाम कहे।
(अबू दाऊद–सुनन–6/872–ह०-5200)
(इमाम बुख़ारी–अलअदब अलमुफ़रद–1/460–ह०-1043)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि एक जमाअ़त गुज़र रही हो तो उनमें से किसी एक का सलाम कह देना काफ़ी है और बैठे हुये लोगों में से कोई एक जवाब दे दे तो काफ़ी है।
(अबू दाऊद–सुनन–4/877–ह०-5210)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप हमें कोई ऐसा अ़मल बतायें कि जिसके सबब से मैं जन्नत में चला जाऊँ तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सलाम को आ़म करो, खाना खिलाओ, सिला रहमी करो, रात के जिस पहर में लोग सो रहे होते हैं उस वक़्त इ़बादत करो फिर तुम सलामती के साथ जन्नत में चले जाओगे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/791–ह०-7277)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक तुम आपस में एक दूसरे से मुहब्बत न करो और क्या मैं तुम्हें ऐसी

चीज़ न बताऊँ जिससे तुम्हें आपस में मुहब्बत हो जाये सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया क्यों नहीं या रसूलल्लाह फिर आपने फ़रमाया तुम आपस में सलाम को आ़म करो तो तुम्हारे दरमियान मुहब्बत पैदा हो जायेगी और उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है तुम उस वक़्त तक जन्नत में नहीं जा सकते जब तक तुम आपस में एक दूसरे पर रहम नहीं करोगे तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया हम तो रहम करते हैं तो आपने फ़रमाया किसी एक पर रहम करना रहम नहीं है रहम वो है जो सब लोगों के लिये आ़म हो।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/806–ह०-7310)

(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/156–ह०-261)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि पहले सलाम करो फिर कलाम करो।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/457–ह०-2699)

(मिश्कात–3/15–ह०-4653)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से बरी होता है।

(मिश्कात–3/20–ह०-4666)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

फिर जब तुम (अपने) घरों में दाख़िल हुआ करो तो अपने (घर वालों) पर सलाम कहा करो (ये) अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बाबरकत पाकीज़ा दुआ़ है इस तरह अल्लाह तआ़ला अपनी आयतों को तुम्हारे लिये–

वाज़ेह फ़रमाता है ताकि तुम (अहकामे शरीअ़त और आदाबे ज़िन्दगी को) समझ सको।
(सूरह–नूर–24/61)

बच्चों व अपने से छोटों और औ़रतों को सलाम करना

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) जब बच्चों के पास से गुज़रे जबकि वो खेल रहे थे तो आपने उन्हें सलाम किया।
(अबू दाऊद–सुनन–4/873–ह०-5202)
(इमाम बुख़ारी–अलअदब अलमुफ़रद–1/473–ह०-1075)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बच्चों के पास से गुज़रे तो उन्हें सलाम किया और फ़रमाया कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) भी ऐसा ही किया करते थे।
(बुख़ारी–सहीह–5/699–ह०-6247)

➡ हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हमारे क़रीब से गुज़रे मैं अपनी हम उ़म्र सहेलियों के साथ बैठी थी आपने हमें सलाम किया। (अबू दाऊद–सुनन–4/873–ह०-5204)
(मिश्कात–3/19–ह०-4663)
(इमाम बुख़ारी–अलअदब अलमुफ़रद–1/474–ह०-1080)

➡ हज़रत जरीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम)

औरतों के पास से गुज़रे तो आपने उन्हें सलाम किया।
(मिश्कात–3/14–ह०-4647)
(मुस्नद अहमद–8/371–ह०-19367)

➡ हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का एक ऐसी मजलिस से गुज़र हुआ कि जिसमें मुसलमान बुत परस्त, मुशरिक और यहूदी सब शरीक थे आपने अह्ले मजलिस को सलाम किया। (बुख़ारी–सहीह–5/702–ह०-6254)
(मुस्लिम–सहीह–3/644–ह०-4659)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/458–ह०-2702)

–: सलाम करने के फ़ज़ाइल :–

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से मर‘वी है कि एक शख़्स हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की बारगाह में आया और कहा ‘‘अस्सलामु अ़लैकुम’’ आपने फ़रमाया दस नेकियाँ दूसरा आदमी हाज़िर हुआ और उसने कहा ‘‘अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाह’’ आपने फ़रमाया बीस नेकियाँ फिर तीसरा शख़्स हाज़िर हुआ और कहा ‘‘अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि व बराकातुहू’’ आपने फ़रमाया तीस नेकियाँ और एक रिवायत में इतना इज़ाफ़ा है कि फिर चौथा शख़्स हाज़िर हुआ और कहा ‘‘अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि व बराकातुहू व मग़फ़िरातुहू’’ आपने फ़रमाया चालीस नेकियाँ।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/451–ह०-2689)
(अबू दाऊद–सुनन–4/869–ह०-5196)
(इमाम बुख़ारी–अलअदब अलमुफ़रद–1/452–ह०-1015)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि पहले सलाम करने वाला अल्लाह तआ़ाला के ज़्यादा क़रीब होता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/454–ह०-2694)
(अबू दाऊद–सुनन–6/870–ह०-5197)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तीन दिन से ज़्यादा क़ताअ़ तअ़ाल्लुक़ी जाइज़ नहीं है अगर रुठे हुये दोंनों अफ़राद का आमना सामना हो और उनमें से एक फ़र्द सलाम में पहल करे और दूसरा सलाम का जवाब दे तो दोंनों को बराबर सवाब मिलेगा और अगर सामने वाला जवाब न दे तो पहल करने वाला गुनाह से बरी हो गया और दूसरा गुनाह गार हो गया नीज़ अगर वो दोनों नाराज़गी के अ़ालम में फ़ौत हो जायें तो वो दोंनों जन्नत में जमाअ़ नहीं हो सकते।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/797–ह०-7291)

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन शब्ल (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सवार पैदल चलने वाले को सलाम किया करे और पैदल बैठे हुये को सलाम करे और थोड़े बहुतों को सलाम किया करें और ज़्यादा अज्र तो सलाम कहने वाले को ही मिलेगा
(इमाम बुख़ारी–अलअदब अल मुफ़रद–1/455–ह०-1023)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि

वसल्लम) ने फ़रमाया जब दो पैदल चलने वाले आमने सामने आ जायें तो जो पहले सलाम कहेगा वो मर्तबे में बढ़ जायेगा।
(इमाम बुख़ारी–अलअदब अलमुफ़रद–1/455–ह०-1024)

मुसाफ़ाह के अहकाम व फ़ज़ाइल

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसाफ़ाह करना सलाम की तकमील है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/471–ह०-2730)

➡ हज़रत बरा बिन आ़ज़िब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब दो मुसलमान आपस में मुलाक़ात के वक़्त मुसाफ़ाह करते हैं और वो अल्लाह तआ़ला की हम्द बयान करते हैं और उससे मग़फ़िरत तलब करते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन दोंनों के जुदा होने से पहले उन्हें बख़्श देता है।
(अबू दाऊद–सुनन–6/877–ह०-5211)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/470–ह०-2728)

➡ हज़रत क़तादा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैंने हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से पूछा कि क्या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के सहाबाकिराम में बाहम मुसाफ़ाह करने का दस्तूर था तो उन्होंने कहा जी हाँ।
(बुख़ारी–सहीह–5/709–ह०-6263)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के हमराह थे जब आप हज़रत उ़मर का हाथ पकड़े हुये थे।
(बुख़ारी–सहीह–5/710–ह०-6264)

बोसा देना और मुआ़नक़ा करना

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) को बोसा दिया और फ़रमाया कि जो रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता और एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) को बोसा दिया। (अबू दाऊद–सुनन–4/681–ह०-5218)
(अबू दाऊद–सुनन–4/880–ह०-5217)

➡ हज़रत शअ़बी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत जाअ़फ़र बिन अबू तालिब (अ़लैहिमस्सलाम) से मिले तो आपने उनसे मुआ़नक़ा किया और उनकी पेशानी के दरमियान बोसा दिया।
(अबू दाऊद–सुनन–4/882–ह०-5220)

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू लैला बयान करते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के क़रीब हुये और आपके दस्ते अक़दस को बोसा दिया। (अबू दाऊद–सुनन–4/883–ह०-5223)

➡ हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान करते हैं कि मैं हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के साथ आया और उनकी बेटी बुख़ार की वजह से लेटी हुई थीं तो हज़रत अबू बक्र ने पूछा तुम्हारा क्या हाल है और उनके रुख़सार पर बोसा दिया। (अबू दाऊद–सुनन–4/883–ह०-5222)

➡ हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैं रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने मुझसे मुआ़नक़ा फ़रमाया और ये मेरे लिये उ़म्दाह बहुत उ़म्दाह बात थी।
(अबू दाऊद–सुनन–4/878–ह०-5214)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा व हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की वफ़ात के बाअ़द आपके चेहरे अनवर से कपड़ा हटाया और आप पर झुके और आपकी पेशानी को बोसा दिया और फिर रो दिये और फिर कहा कि मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की क़सम अल्लाह तआ़ला आप पर कभी दो मौतें वारिद नहीं करेगा सिवाए इस मौत के जो अल्लाह तआ़ला ने आप पर लिख दी थी और वो आपको आ चुकी और आपकी ज़िन्दगी भी पाकीज़ा थी और आपकी वफ़ात भी कितनी पाकीज़ा है।
(बुख़ारी–सहीह–5/455–ह०-5711)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/667–ह०-6710)
(इब्ने अबी शैबा–3/774–ह०-12195)

➡ हज़रत आसिम बिन बह्दला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मरवी है जब हज़रत अबू वाइल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) का इन्तिक़ाल हुआ तो हज़रत अबू बुरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने आपकी पेशानी पर बोसा दिया। (इब्ने अबी शैबा–3/774–ह०-12196)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान फ़रमाती हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैह व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत उ़स्मान बिन मज़ऊन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को बाअ़द वफ़ात बोसा दिया और आप रो दिये यहाँ तक कि आप के आंसू आपके रुख़सार मुबारक पर बह रहे थे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/549-ह०–989)
(अबू दाऊद–सुनन–3/540-ह०–3163)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/669-ह०–6712)
(इब्ने अबी शैबा–3/774–ह०-12193)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/725-ह०–1334)

➡ एक तवील हदीस में हज़रत सफ़्वान बिन अ़स्साल बयान करते हैं कि दो यहूदी नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुये और उन्होंने उन नौ बातों का सुवाल किया जो खुले अहकाम थे जो तौरात के सिरे पर लिखे जाते थे पस हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उन्हें वो नौ अहकाम बयान कर दिये तो उन दोंनो यहूदियों ने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के हाथ पाँव चूम लिये और कहा कि बेशक आप नबी हैं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/472–ह०-2733)

➡ उम्मे आबान बिन्ते वाज़ेअ़ अपने दादा ज़ारेअ़ से रिवायत करती हैं और ये वफ़्द अ़ब्दुल क़ैस में शरीक थे उन्होंने कहा जब हम मदीना मुनव्वरा पहुँचे तो हम जल्दी जल्दी अपनी सवारियों से उतर कर नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में पहुँचे और आपके हाथ व पाँव को बोसे देने लगे।
(अबू दाऊद–सुनन–4/884–ह०-5225)

➡ हज़रत सुहैब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जो हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के गुलाम थे वो बयान करते है कि मैंने मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के हाथ व पाँव चूमते देखा और आप साथ साथ ये कहते जाते थे कि ऐ चचा आप मुझसे राज़ी हो जायें।
(बुख़ारी–सहीह–1/339-ह०–976)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/472-ह०–2733)
(अबू दाऊद–सुनन–6/884-ह०–5225)

–: मुसलमान का क़ातिल दोज़ख़ी :–

इरशादे बारी तआ़ला है:–
और जो शख़्स किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि वो मुद्दतों उसमें रहेगा और अल्लाह तआ़ला उस पर ग़ज़बनाक होगा और उस पर लाअ़नत करेगा और उस (अल्लाह) ने उसके लिये ज़बरदस्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है (सूरह–निसा–4/93)

इरशादे बारी तआ़ला है:–
और ये वो लोग हैं जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे

माअ़बूद की इ़बादत नहीं करते और न ही किसी ऐसी जान को क़त्ल करते हैं जिसे बग़ैरे हक़ मारना अल्लाह तआ़ला ने हराम फ़रमाया है और न ही बदकारी करते हैं और जो शख़्स ये काम करेगा तो वो सज़ा पायेगा और उसके लिये क़यामत के दिन अ़ज़ाब दो गुना कर दिया जायेगा और वो उस दोज़ख़ में ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ हमेशा रहेगा। (सूरह–फुरक़ान–25/68, 69)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

इसी वजह से हमने बनी इसराईल पर (नाज़िल की गई तौरात में ये हुक्म) लिख दिया था कि जिसने किसी भी शख़्स को बग़ैर क़िसास के या ज़मीन में फ़साद अंगेज़ी की सज़ा के बग़ैर नाहक़ क़त्ल कर दिया तो गोया उस ने तमाम लोगों को क़त्ल कर डाला।
(सूरह–मायदा–5/32)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक जो लोग अल्लाह व उसके रसूल से जंग करते हैं और ज़मीन में फ़साद अंगेज़ी करते फिरते हैं (यानी मुसलमानों में ख़ूँरेज़ी, दहशत गर्दी और क़त्ले आ़म के मुरतकिब होते हैं) तो उनकी सज़ा यही है कि वो क़त्ल किये जायें या वो फांसी दिये जायें या उनके हाथ और उनके पाँव मुख़्तलिफ़ सिम्तों से काटे जायें या ज़मीन से दूर कर दिये जायें ये उनके लिये दुनिया में रुसवाई है और उनके लिये आख़िरत में बड़ा अ़ज़ाब है।
(सूरह–मायदा–5/33)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक अल्लाह

तआ़ला के नज़दीक सारी दुनिया का तबाह हो जाना एक मुसलमान के नाहक़ क़त्ल के मुक़ाबले में बहुत ही माअ़मूली है यानी मुसलमान का क़त्ल अल्लाह तआ़ला के नज़दीक पूरी दुनिया की तबाही से ज़्यादा बड़ा है।
(नसाई–सुनन–6/39–ह०-3992, 3993, 3994)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/775–ह०-1395)

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान का क़त्ल अल्लाह तआ़ला के नज़दीक पूरी दुनिया की तबाही से बढ़कर है।
(नसाई–सुनन–6/40–ह०–3995)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/414–ह०–4349)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ज़मीनो आसमान के तमाम लोग किसी मुसलमान के खून में शरीक हो जायें तो अल्लाह तआ़ला सबको औंधा करके दोज़ख़ में डाल देगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/776–ह०-1398)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी ज़िम्मी को क़त्ल करेगा वो जन्नत की खुश्बू भी नहीं पायेगा हालांकि जन्नत की खुश्बू चालीस बरस की मुसाफ़त से महसूस की जा सकती है।
(बुख़ारी–सहीह–3/424–ह०-3166, 6914)
(इब्ने माजा–सुनन–2/318–ह०-2686, 2687)
(नसाई–सुनन–6/609–ह०-4753, 4754)

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी ज़िम्मी को क़त्ल करेगा तो अल्लाह तआला उस पर जन्नत को हराम फ़रमां देगा यानी ऐसा शख़्स जो ग़ैर मुस्लिम हो और हुकूमते इस्लामियाँ में रह रहा हो और टैक्स वग़ैराह देता हो उसे ज़िम्मी कहते हैं।
(अबू दाऊद–सुनन–3/231–ह०-2760)
(नसाई–सुनन–6/608–ह०-4752)

मुसलमान को गाली देना गुनाह और उसे क़त्ल करना कुफ़्र है

➡ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद व हज़रत साअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआला अन्हुमा) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ व गुनाह है और उसे क़त्ल करना कुफ़्र है
(बुख़ारी–सहीह–1/106–ह०–48, 6044, 7076)
(मुस्लिम–सहीह–1/177–ह०–221)
(इब्ने माजा–सुनन–1/53–ह०–69, 3939, 3940, 3941)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1058–ह०–1983, 2634,2635)
(नसाई–सुनन–6/132–ह०–4109, 4111)
(मिश्कात–3/62–ह०–4814)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान से गाली गलोच करना गुनाह और उससे क़िताल कुफ़्र है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/286–ह०-3970)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान को गाली देना गुनाह और उसके साथ लड़ना कुफ़्र है।
(बुख़ारी–सहीह–5/602–ह०-6044)
(मुस्लिम–सहीह–1/169–ह०-221)
(इब्ने माजा–सुनन–1/53–ह०-69)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/413–ह०-2634)
(नसाई–सुनन–3/166–ह०-4111)

➡ हज़रत अबू जुरई जाबिर बिन सुलेम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी को गाली न दो और किसी नेकी को हक़ीर मत जानो और अपने भाई से बात करो तो हुस्ने खुल्क़ व खुश दिली से बात किया करो बिला शुबा ये नेकी है और अपनी चादर (यानी सलवार, पाजामा) टखनों तक रखा करो व टखनों से नीचे न रखो बेशक ये तकब्बुर है और अल्लाह तआ़ला तकब्बुर को पसंद नहीं करता और अगर कोई शख़्स तुम्हें बुरा भला कहे और तुम्हें तुम्हारी किसी बात पर आ़र (शर्म) दिलाये तो तुम उसके ऐ़ब पर उसे आ़र न दिलाना बिला शुबा इसका वबाल उसी पर होगा। (अबू दाऊद–सुनन–4/165–ह०-4084)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज्जतुल वदाअ़ के मौक़ेअ़ पर फ़रमाया कि तुम्हारी जान व माल और इ़ज़्ज़तें तुम पर उसी तरह हराम हैं जैसे आज के दिन की हुरमत है जैसे इस महीने की हुरमत है जैसे इस शहर की हुरमत है और तुम मेरे बाअ़द कुफ़्र में मत लौट जाना कि तुम एक दूसरे की–

गर्दनें मारने लगो। (मुस्नद अहमद–6/880–ह०–16819)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/178–ह०–5982)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/497–अ़रबी–ह०–2193)
(इब्ने माजा–सुनन–3/274–ह०–3942, 3943)
(बुख़ारी–सहीह–6/388–ह०–7080)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह तआ़ाला के साथ किसी को शरीक करना और किसी का नाहक़ क़त्ल करना। (बुख़ारी–सहीह–6/162–ह०-6675)
(बुख़ारी–सहीह–6/266–ह०-6871)

बीवी से गाली गलोच करने वाला कमीना

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उस शख़्स से बढ़कर कमीना कोई नहीं जो अपनी बीवी को गाली गलोच करे।
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–13/313)

गाली का गुनाह इब्तिदा करने वाले पर

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया आपस में गाली गलोच करने वाले जो भी कहें उसका गुनाह इब्तिदा करने वाले पर है जब तक मज़लूम ज़्यादती न करे।
(मुस्लिम–सहीह–5/60–ह०-6591)
(अबू दाऊद–सुनन–6/692–ह०-4893)

जन्नती व दोज़ख़ी लोगों की पहचान

➡ हज़रत इयाज़ बिन हिमार रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जन्नती लोग तीन क़िस्म के हैं 1-हुकूमत के साथ इन्साफ़ करने वाले लोग 2- सदक़ा व ख़ैरात करने वाले लोग 3- और वो शख़्स जो अपने रिश्तेदारों और मुसलमानों के लिये नरम दिल हों और जो पाक दामन पाकीज़ा खुल्क़ वाला हो और अ़यालदार भी हो मगर किसी के सामने अपना हाथ न फै़लाता हो और दोज़ख़ियों की पाँच क़िस्में हैं 1- वो लोग जिनको तमीज़ नहीं कि बुरी बात से बचें 2-वो लोग जो चोर हैं 3- वो शख़्स जो फ़रेब करता है 4- बख़ील (कंजूस) व झूटा 5- गालियाँ बकने वाला और फुहश कलामी (बेहूदा बात) कहने वाला। (मुस्लिम–सहीह–5/363–ह०-7207)

मुसलमान का माल, इज़्ज़त व खून हराम है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक मुसलमान के लिये दूसरे मुसलमान का माल, इज़्ज़त व खून हराम है नीज़ फ़रमाया बन्दे के लिये यही बुराई काफ़ी है कि वो अपने मुसलमान भाई को हक़ीर जाने।
(अबू दाऊद–सुनन–6/685–ह०-4882)

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम पर हराम है

मुसलमानों की जान व माल और इ़ज़्ज़त और क़रीब तुम अपने पर‘वर दिगार से मिलोगे और तुम्हारे सब आअ़मालों की पुरसिश होगी और मेरे बाद तुम गुमराह न हो जाना कि एक दूसरे की गर्दनें मारने लगो।
(मुस्लिम–सहीह–4/303–ह०-4383)

➡ हज़रत बुरैदा और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी भी मुसलमान का खून हलाल नहीं है सिवाए तीन जुर्मों के एक वो जो इस्लाम लाने के बाअ़द कुफ़्र करे यानी दीन से फिर जाये और दूसरा वो जो शादी शुदा होने के बाद ज़िना करे और तीसरा जान के बदले जान यानी नाहक़ क़त्ल करने पर क़िसास (बदला) लेना।
(मुस्नद अहमद–10/339–ह०–22365)
(बुख़ारी–सहीह–6/270–ह०–6878)
(मुस्लिम–सहीह–3/475–ह०–4375, 4377)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/777–ह०-1402)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/58–ह०-2158)
(अबू दाऊद–सुनन–5/332–ह०-4351, 4352)
(मिश्कात–2/393–ह०–3446, 3466)
(इब्ने माजा–सुनन–2/264–ह०–2533, 2534)
(नसाई–सुनन–6/59–ह०–4023, 4024)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/92–ह०–3760)

➡ हज़रत इ़करिमा से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अपना दीन बदल ले उसे क़त्ल कर दो।
(बुख़ारी–सहीह–6/296–ह०-6922)

मुसलमानों पर जो हथियार उठाये वो हममें से नहीं

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से कोई भी अपने मुसलमान भाई की तरफ़ हथियार से इशारा न करे क्योंकि वो नहीं जानता कि मुम्किन है कि शैतान उसके हाथ से उस मुसलमान भाई पर वार करादे और फिर वो दोज़ख़ के गढ़े में जा गिरे।
(बुख़ारी–सहीह–6/385–ह०–7072)

➡ हज़रत अबू मूसा अशअरी और हज़रत इब्ने उमर (रज़िअल्लाहु तआला अन्हुम) से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया जो मुसलमानों के ख़िलाफ़ हथियार उठाये वो हममें से नहीं यानी वो इस्लाम से ख़ारिज है।
(बुख़ारी–सहीह–6/268–ह०-6874)
(बुख़ारी–सहीह–6/385–ह०-7071)
(मुस्लिम–सहीह–1/198–ह०-282, 283)
(इब्ने माजा–सुनन–2/278-ह०-2575, 2576, 2577)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/811-ह०-1459)
(नसाई–सुनन–3/162–ह०-4107)
(मुस्नद अहमद–3/8–ह०-4467)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से कोई जब शख़्स अपने मुसलमान भाई की तरफ़ हथियार से इशारा

करता है तो फ़रिश्ते उस पर लाअ़नत करते हैं।
(मुस्लिम–सहीह–6/228–ह०-6666)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/62–ह०-2162)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/322–ह०–4169)

हर गुनाह मुआ़फ़ सिवाए मुसलमान के क़त्ल के

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला हर गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमांयेगा सिवाए इसके कि अगर कोई शख़्स कुफ़्र की हालत में मर जाये या वो शख़्स जो किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करदे।
(मुस्नद अहमद–7/42–ह०–17031)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–19/364,365–ह०-856,857,858)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला हर गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमां देगा सिवाए उस शख़्स के जो हालते शिर्क में मर गया या जिसने किसी मोमिन का क़त्ल किया हो और एक रिवायत में है कि ऊ़बादा बिन सामित रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने किसी मोमिन का क़त्ल किया और बिला वजह जुल्म से क़त्ल किया तो अल्लाह तआ़ला उसका कोई अ़मल कुबूल नहीं करेगा न निफ़िल और न फ़र्ज़।
(अबू दाऊद–सुनन–4/277-ह०-4270)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–7/78–ह०–5980)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से पूछा गया कि क्या क़ातिल तौबा कर सकता है तो आपने फरमाया कि क़ातिल की तौबा कैसे कुबूल हो सकती है मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना है कि रोज़े क़यामत मक़्तूल क़ातिल का गिरेबान पकड़े हुये आयेगा और अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे रब इसने मुझे क़त्ल किया था तो अल्लाह तआ़ला उस क़ातिल से फ़रमायेगा तू हलाक हो गया है फिर उसे जहन्नम की तरफ़ भेज दिया जायेगा फिर हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया कि जब ये आयत " और जो शख़्स किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करे तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है कि वो मुद्दतों उसमें रहेगा और उस पर अल्लाह तआ़ला ग़ज़बनाक होगा और उस पर लाअ़नत करेगा और उसने उसके लिये ज़बर दस्त अ़ज़ाब तैयार कर रखा है" (सूरह–निसा–4/93) नाज़िल हुई तो उसके बाद ये आयत मन्सूख़ नहीं हुई तो क़ातिल की तौबा कैसे मुम्किन है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/627–ह०–3029)
(नसाई–सुनन–6/48–ह०–4010)
(अलबानी–सिलसिला अहादीसे सहीहा–5/425–ह०–3741)

➡ हज़रत अबू इदरीस कहते हैं कि मैंने मुआ़विया को जो बहुत कम हदीस बयान करता था कहते हुये सुना कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये इरशाद फ़रमाते हुये सुना कि उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला हर गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमांयेगा सिवाए इसके कि अगर कोई शख़्स कुफ़्र की हालत में मर जाये या वो शख़्स जो किसी मुसलमान को क़सदन क़त्ल करदे। (मुस्नद अहमद–7/42–ह०–17031)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–19/364,365–ह०-856,857,858)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मोमिन के क़ातिल की तौबा को कुबूल करने से इन्कार फ़रमां दिया है।
(अलबानी–सिलसिला अहादीसे सहीहा–5/425–ह०–3742)

इरशादे बारी तआ़ला है:–
और उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन हो सकता है जिसे उसके रब की आयतों के ज़रिए नसीहत की जाये फिर वो उनसे मुँह फेरले बेशक हम मुजरिमों से बदला लेने वाले हैं। (सूरह–सज्दा–32/22)

इरशादे बारी तआ़ला है:–
जिस दिन ज़ालिमों को उन की माअ़ज़रत फ़ायदा न देगी और उनके लिये फटकार होगी और उनके लिये (दोज़ख़ का) बुरा घर होगा (सू०–मोमिन/ग़ाफिर–40/52)

इरशादे बारी तआ़ला है:–
जो शख़्स उससे मुँह फेरेगा तो बेशक वो क़यामत के दिन सख़्त बोझ उठायेगा वो उस (अ़ज़ाब) में हमेशा रहेंगे और उनके लिये क़यामत के दिन बहुत ही बुरा बोझ होगा। (सूरह–ताहा–20/100,101)

रोज़े क़यामत सबसे पहला फ़ैसला बन्दों के खून का होगा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला रोज़े

क़यामत जो सबसे पहले फ़ैसला करेगा वो बन्दों के ख़ून का होगा। (बुख़ारी–सहीह–6/99–ह०-6533)
(मुस्लिम–सहीह–4/303–ह०-4381)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/775–ह०-1396)
(नसाई–सुनन–3/124–ह०-3999, 4000)

मुसलमान पर ज़ुल्म व ज़्यादती करने वाला दोज़ख़ी

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बस मलामत के मुस्तहिक़ तो वो हैं जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ ज़्यादतियाँ करते हैं और फ़साद फ़ैलाते हैं ऐसे ही लोगों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सूरह–शूरा–42/42)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
हमने उन लोगों को निजात दे दी जो बुराई से मनाअ़ करते थे और हमने (बक़िया सब) लोगों को जो ज़ुल्म करते थे निहायत बुरे अ़ज़ाब में पकड़ लिया।
(सूरह–आअ़राफ़–7/165)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक जो लोग उन पारसा मोमिन औ़रतों पर जो बे–ख़बर और ना आशना हैं (ऐसी) तुहमत लगाते हैं वो दुनिया व आख़िरत में मलऊ़न हैं और उनके लिये ज़बर दस्त अ़ज़ाब है। (सूरह–नूर–24/23)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
यही वो लोग हैं कि जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदी और मग़फ़िरत के बदले अ़ज़ाब कैसा अजीब है

ये उनका हौसला कि दोज़ख़ का अ़ज़ाब बर्दाश्त करने के लिये तैयार हैं। (सूरह–बक़राह–2/175)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
तुम ऐसे लोगों की तरफ़ मत झुकना जो जुल्म कर रहे हैं वरना तुम्हें आतिशे (दोज़ख़) आ छुयेगी और तुम्हारे लिये अल्लाह के सिवा कोई भी मददगार न होगा और फिर तुम्हारी मदद नहीं की जायेगी। (सूरह–हूद–11/113)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
बेशक जिन लोगों ने मोमिन मर्दों व मोमिन औ़रतों को अज़ि़यत दी फिर तौबा न की तो उनके लिये अ़ज़ाबे जहन्नम है और उनके लिये आग में जलने का अ़ज़ाब है। (सूरह–बुरुज–85/10)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
जो लोग मोमिन मर्दों व मोमिन औ़रतों को अज़ि़यत देते हैं बग़ैर इसके कि उन्होंने कुछ (ख़ता) की हो तो बेशक उन्होंने बोहतान व खुले गुनाह को बोझ (अपने सर) ले लिया है। (सूरह–अहज़ाब–33/58)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
आप ज़ालिमों के देखेंगे कि जब वो अ़ज़ाबे (आख़िरत) देख लेंगे तो कहेंगे कि क्या (दुनिया में) पलट जाने की कोई सबील है। (सूरह–शूरा–42/44)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
और उस फ़ित्ने से डरो जो ख़ास तौर पर उन लोगों को ही नहीं पहुँचेगा कि जो तुममें से ज़ालिम हैं (बल्कि जुल्म का साथ देने वाले व उस पर ख़ामोश रहने वाले

उन्हीं में शरीक कर लिये जायेंगे) और जानलो अल्लाह तआ़ाला अ़ज़ाब में सख़्ती फ़रमाने वाला है। (सूरह–अनफ़ाल–8/25)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
याद रखो बेशक ज़ालिम लोग दायमी अ़ज़ाब में मुब्तिला रहेंगे। (सूरह–शूरा–42/45)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
आप ज़ालिमों को उन (आअ़माल) से डरने वाला देखेंगे जो उन्होंने कमा रखे हैं और वो अ़ज़ाब उन पर वाक़ेअ़ होकर रहेगा। (सूरह–शूरा–42/22)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
और बेशक जो लोग जुल्म कर रहे हैं उनके लिये उस अ़ज़ाब के अ़लावा भी अ़ज़ाब है मगर उनमें से अक्सर लोग जानते नहीं हैं। (सूरह–तूर–52/47)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
और अगर ये ज़ालिम लोग उस वक़्त को देख लें जब (उख़र'वी) अ़ज़ाब उनकी आँखों के सामने होगा (तो जान लेंगे) कि सारी कुव्वतों का मालिक अल्लाह है और बेशक अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है (और) जब वो (पेशवायाने कुफ़्र) जिनकी पैर'वी की गई वो अपने पैरोकारों से बेज़ार होंगे और (वो सब अल्लाह तआ़ाला का) अ़ज़ाब देख लेंगे व सारे असबाब उनसे मुनक़ताअ़ हो जायेंगे और (ये बेज़ारी देखकर) पैरोकार कहेंगे कि काश हमें (दुनिया में जाने का) एक मौक़ाअ़ मिल जाये तो हम (भी) उनसे बेज़ारी ज़ाहिर कर दें जैसे इन्होंने (आज) हमसे बेज़ारी ज़ाहिर की है यूँ अल्लाह तआ़ाला

उन्हें उनके अपने आअ़्माल उन्हीं पर हसरत बनाकर दिखा देगा और वो (किसी भी सूरत) दोज़ख़ से निकलने न पायेंगे। (सू०–बक़राह–2/165 ता 167)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–

आप लोगों को उस दिन से डरायें जब उन पर अ़ज़ाब आ पहुँचेगा तो वो लोग जो ज़ुल्म करते रहे होंगे कहेंगे ऐ हमारे रब हमें थोड़ी देर के लिये मुहलत दे दे ताकि हम तेरी दाअ़वत को कुबूल कर लें व रसूलों की पैरवी कर लें। (सू०–इब्राहीम–14/44)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–

मैं ज़रुर सब (सरकश) इन्सानों और जिन्नों से दोज़ख़ को भर दूँगा पस अब तुम मज़ा चखो कि तुमने अपने इस दिन की पेशी को भुला रखा था बेशक हमने तुमको भुला दिया है और अपने उन आअ़्माल के बदले जो तुम करते रहे (अब) दायमी अ़ज़ाब चखते रहो।
(सू०–सज्दा–32/13, 14)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला ने फ़रमाया कि ऐ मेरे बन्दों मैंने ज़ुल्म को अपने ऊपर हराम कर लिया है सो ऐ बन्दो तुम भी आपस में एक दूसरे पर ज़ुल्म न किया करो।
(मुस्लिम–सहीह–5/53–ह०-6572)

➡हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि न तुम बग़ावत–

करो और न ही जुल्म व ज़्यादती करो क्योंकि तुम्हारे-जुल्म व ज़्यादती का वबाल खुद तुम्हारे ऊपर होगा। (बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-5/256-ह०-6671)

मुसलमान वो है जिसकी ज़बान व हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान वो है जिसकी जुबान व हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें। (बुख़ारी-सहीह-1/84-ह०-10)
(बुख़ारी-सहीह-6/75-ह०-6484)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान वो है जिसकी जुबान व हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें यानी ज़बान से किसी को बुरा न कहे और हाथ से किसी को ईज़ा न दे। (तिर्मिज़ी-सुनन-2/410-ह०-2627)
(मुस्नद अहमद-4/471-ह०-8918)

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि कौन सा मुसलमान अफ़ज़ल है तो आपने फ़रमाया कि जिसकी जुबान व हाथों से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।
(बुख़ारी-सहीह-1/85-ह०-11)
(मुस्लिम-सहीह-1/139-ह०-163)
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/305-ह०-2504)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान वो है कि जिसकी ज़बान और हाथों से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें और मोमिन वो है जिससे लोगों के खून और माल महफ़ूज़ रहें फिर आपसे अ़र्ज किया गया कि कौन सा मुसलमान अफ़ज़ल है तो आपने फ़रमाया कि जिसकी जुबान व हाथों से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/410–ह०-2627)
(नसाई–सुनन–3/462–ह०-5001)

ज़ालिम को जुल्म के बदले नेकियाँ देनी होंगी

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस बन्दे पर रहम फ़रमाये जिसके पास अपने भाई की इज़्ज़त व माल का हक़ है तो वो पकड़े जाने से पहले साहिबे हक़ से मुआ़फ़ी माँग ले क्योंकि उस जगह न तो दीनार होंगे और न ही दिरहम होंगे पस जो उसके पास नेकियाँ होंगी तो नेकियों से हक़दारों का हक़ और मज़लूमीन का बदला चुकाया जायेगा और अगर नेकियाँ न हुईं तो उन मज़लूमीन और हकदारों के गुनाह उस पर डाले जायेंगे। (बुख़ारी–सहीह–2/683-ह०–2449)
(बुख़ारी–सहीह–6/99-ह०–6534)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/245-ह०–2419)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस किसी के पास उसके भाई की जुल्म से (नाजाइज़) ली हुयी इ़ज़्ज़त या माल हो तो उसे चाहिये वो अपने मुसलमान भाई को दुनिया में ही अदा कर दे इससे पहले कि वो क़यामत के दिन आये और तुझसे इ़ज़्ज़त या माल के बदले तेरी नेकियाँ ले ले और अगर तेरे पास नेकियाँ कम हुईं तो वो अपने गुनाह तेरे ऊपर डालेगा।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/587-ह०–6513)

–: जुल्म से ली गई ज़मीन का हिसाबः–

➡ हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी की ज़मीन का कुछ हिस्सा यहाँ तक कि एक बालिस्त ज़मीन जुल्म से लेगा तो क़यामत के दिन उसके गले में सात ज़मीनों का तौक़ डाला जायेगा।
(बुख़ारी–सहीह–2/684-ह०–2452,2453)
(मुस्लिम–सहीह–4/231-ह०–4132)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी की थोड़ी ज़मीन ना हक़ ले लेगा तो क़यामत के दिन वो सात ज़मीनों में धंसता चला जायेगा।
(बुख़ारी–सहीह–3/445-ह०–3196)

➡ हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है अर्वा बिन्ते उवैस ने उनसे घर के बाअ़ज़ हिस्से के बारे में झगड़ा किया तो उन्होंने कहा कि इसे

छोड़ दो और ज़मीन इसे दे दो क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से सुना है आपने फरमाया कि जिसने ना हक् (अपने हक् के बग़ैर) एक बालिश्त ज़मीन ले ली तो अल्लाह तआ़ाला क्यामत के दिन उसे सात ज़मीनों का तौक् पहनायेगा ऐ अल्लाह अगर ये अर्वा झूठी है तो इसे अन्धा कर दे व इसकी क्ब्र इसके घर में बना दे रावी कहते हैं कि मैने अर्वा को देखा कि वो अन्धी को गई थी और वो दीवारों को टटोलती थी और कहती थी कि मुझे सईद की बद्दुआ़ लगी है फिर वो एक रोज़ अपने घर के कुँऐ में गिर पड़ी और वहीं उसकी क्ब्र बन गई।
(मुस्लिम–सहीह–3/353-ह०–4133)

–: किसी का हक् छुपाना गुनाह है :–

इरशादे बारी तआ़ाला है:–
और जो कोई (किसी का हक्) छुपाता है तो क्यामत के दिन उसे वो लाना पड़ेगा जो उसने छुपाया था फिर हर शख़्स को उसके अ़मल का पूरा बदला दिया जायेगा और उन जुल्म नहीं किया जायेगा।
(सूरह–आले इमरान–3/161)

हुक्रूक् अदा न करने वाला रोज़े क्यामत मुफ़लिस होगा

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या तुम जानते हो कि मुफ़लिस कौन है तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह हम तो मुफ़लिस उसे जानते हैं जिसके–

पास मालो मताअ़ में से कुछ भी न हो तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुफ़लिस वो है जो क़यामत के दिन इस तरह आयेगा कि उसके पास रोज़ा, नमाज़ और ज़कात होगी लेकिन उसने किसी को गाली दी होगी किसी पर तुहमत (झूठा इल्ज़ाम, बोहतान) लगाया होगा या फिर किसी का माल खाया होगा, किसी का खून बहाया होगा या किसी को मारा होगा पस वो बैठा होगा और ये लोग इन जुर्मों के बदले उसकी नेकियाँ ले जायेंगे और अगर गुनाहों का बदला पूरा होने से पहले नेकियाँ ख़त्म हो गयीं तो उनके गुनाह उस पर डाल दिये जायेंगे फिर उसे दोज़ख़ की आग में डाल दिया जायेगा।
(मुस्लिम–सहीह–6/207-ह०–6579)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/244-ह०–2418)

जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान जुल्म का बदला

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अहले ईमान जहन्नम से छुटकारा पा जायेंगे तो उन्हें जन्नत व जहन्नम के दरमियान एक पुल पर रोक लिया जायेगा फिर उन्होंने दुनिया में जो एक दूसरे पर जुल्मो सितम किये होंगे उसका क़िसास और बदला लिया जायेगा हत्ता कि जब वो पाको साफ़ हो जायेंगे तब उन्हें जन्नत में जाने की इजाज़त मिलेगी नीज़ फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े कुदरत में मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की जान है कि हर शख़्स जन्नत में अपने ठिकाने को उससे बेहतर तौर पर पहचानेगा जिस तरह

वो दुनिया में अपने घर को पहचानता था।
(बुख़ारी–सहीह–2/678-ह०–2440, 6535)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/235–ह०-493)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक वो (अल्लाह) ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता और यक़ीनन जो शख़्स अपने ऊपर जुल्म होने के बाअ़द बदला ले तो ऐसे लोगों पर (मलामत व गिरफ़्त) की कोई राह नहीं है बस (मलामत व गिरफ़्त की) राह तो सिर्फ़ उनके लिये है जो लोगों पर जुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सरकशी व फ़साद फैलाते हैं ऐसे ही लोगों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है।
(सूरह–शूरा–42/40,41,42)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

आप ज़लिमों को देखेंगे कि जब वो अ़ज़ाबे (आख़िरत) देख लेंगे तो कहेंगे क्या (दुनिया में) पलट जाने की कोई सबील है और आप उन्हें देखेंगे कि वो दोज़ख़ पर ज़िल्लत और ख़ौफ़ के साथ सर झुकाये हुये पेश किये जायेंगे (उसे चोरी चोरी) छुपी निगाहों से देखते होंगे और ईमान वाले कहेंगे बेशक नुक़सान उठाने वाले वही लोग हैं जिन्होंने अपनी जानों को और अपने अह्ल व अ़याल को क़यामत के दिन ख़सारे में डाल दिया याद रखो बेशक ज़ालिम लोग दायमी अ़ज़ाब में रहेंगे।
(सूरह–शूरा–42/44,45)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

तुम खुद को और अपने अह्ले ख़ाना को जहन्नम की आग से बचाओ जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं।
(सूरह–तहरीम–66/6)

रोज़े क़यामत ज़ालिम के लिये तारीकियाँ हैं

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम जुल्म करने से बचो क्योंकि क़यामत के दिन ज़ालिम के लिये तारीकियाँ (अंधेरे ही अंधेरे) हैं और तुम बख़ीली से बचो क्योंकि बख़ीली ने तुम से पहले लोगों को तबाह किया है बख़ीली की वजह से उन्होंने खून किये और हराम माल को हलाल किया।
(मुस्लिम–सहीह–5/55–ह०-6576)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/235–ह०-491)

–: मज़लूम की बद्दुआ़ :–

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मज़लूम की बद्दुआ़ से बचो क्योंकि मज़लूम की बद्दुआ़ और अल्लाह तआ़ला के दरमियान कोई हिजाब नहीं होता। (मज़लूम की बद्दुआ़ जल्द कुबूल होती है)
(बुख़ारी–सहीह–2/200–ह०-1496)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1072–ह०-2014)
(अबू दाऊद–सुनन–2/262–ह०-1584)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तीन दुआ़यें कुबूल

होती हैं मज़लूम की बद्दुआ़ व मुसाफ़िर की दुआ़ और बाप की अपनी औलाद के हक़ में दुआ़।
(इब्ने माजा–सुनन–3/244–ह०-3862)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/931–ह०-3448)
(अबू दाऊद–सुनन–2/207–ह०-1536)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/98–ह०-24)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/63–ह०-32)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/234–ह०-488)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मज़लूम की बद्दुआ़ से बचो क्योंकि वो कुबूल शुदा होती है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/311–ह०-10549)

मुसलमान भाई की मदद करो ख़्वाह ज़ालिम हो या मज़लूम

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने भाई की मदद कर ख़्वाह ज़ालिम हो या मज़लूम तो आपसे अ़र्ज़ किया गया कि मज़लूम की मदद तो करते हैं लेकिन हम ज़ालिम की मदद किस तरह करें तो आपने फ़रमाया कि ज़ालिम के जुल्म को रोककर उसकी मदद कर यानी ज़ालिम को जुल्म करते वक़्त जुल्म से बाज़ रखना ही उसकी मदद करना है।
(बुख़ारी–सहीह–2/680–ह०-2444)
(बुख़ारी–सहीह–6/317–ह०-6952)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/135–ह०-2255)

ज़ालिम को वक़्त मुअ़य्यन तक ढील दी जाती है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

अगर अल्लाह लोगों को उनके जुल्म के ऐवज़ (फ़ौरन) पकड़ लिया करता तो इस (ज़मीन) पर किसी जानदार को न छोड़ता लेकिन वो (अल्लाह) उन्हें मुक़र्ररा मियाद तक मुहलत देता है फिर जब उनका मुक़र्ररा वक़्त आ पहुँचता है तो वो न घड़ी पीछे हो सकते हैं और न ही आगे बढ़ सकते हैं। (सूरह-नहल-16/61)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और मैं उन्हें ढील दे रहा हूँ बेशक मेरी गिरफ़्त बड़ी मज़बूत है। (सूरह-आअ़राफ़-7/183)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

हम तो ये मुहलत उन्हें सिर्फ़ इसलिये दे रहे हैं कि वो गुनाह में और ज़्यादा बढ़ जायें और उनके लिये (बिल आख़िर) ज़िल्लत अंगेज़ अ़ज़ाब है।
(सूरह-आले इमरान-3/178)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

अगर अल्लाह लोगों को उन आअ़माले (बद) के बदले जो उन्होंने कमा रखे हैं (अ़ज़ाब की) गिरिफ़्त में लेने लगे तो वो इस ज़मीन की पुश्त पर किसी चलने वाले को न छोड़े लेकिन वो उन्हें मुक़र्ररा मुद्दत तक मुहलत दे रहा है फिर जब उनका मुक़र्रर वक़्त आ जायेगा तो बेशक अल्लाह अपने बन्दों को खूब देखने वाला है।
(सूरह-फ़ातिर-35/45)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
अल्लाह को उन कामों से हरगिज़ बेख़बर न समझना जो ज़ालिम अन्जाम दे रहे हैं बस वो तो उन ज़ालिमों को फ़क़्त उस दिन के लिये मुहलत दे रहा है जिसमें (ख़ौफ़ व हैरत से) आँखें फटी की फटी रह जायेंगी वो लोग (मैदाने हश्र की तरफ़) अपने सर ऊपर उठाये दौड़ते जा रहे होंगे इस हाल में कि उनकी पलकें भी न झपकती होंगी और उनके दिल ख़ौफ़ के सिवा हर ख़्याल से खाली व उड़े जा रहे होंगे (सू०–इब्राहीम–14/42,43)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(रोज़े क़यामत) हम ज़रुर जमाअ़ करेंगे फिर हम उन सब को जहन्नम के गिर्द ज़रुर हाज़िर करेंगे इस तरह कि वो घुटनों के बल गिरे पड़े होंगे फिर हम हर गिरोह में से ऐसे शख़्स को ज़रुर चुनकर निकाल लेंगे जो उन में से (खुदाये) रहमान का सबसे ज़्यादा नाफ़रमान व सरकश था फिर हम उन लोगों को खूब जानते है जो दोज़ख़ में झोंके जाने के ज़्यादा सज़ावार हैं और तुममें से हर एक शख़्स का उस जहन्नम के ऊपर से गुज़र होने वाला है ये (वाअ़दा) क़तई तौर पर आपके रब के ज़िम्मे है जो ज़रुर पूरा होकर रहेगा फिर हम परहेज़ गारों को निजात देंगे और ज़ालिमों को घुटनों के बल उसमें गिरा हुआ छोड़ देंगे (सूरह–मरयम–19/68 ता 72)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और मैं उन्हें मुहलत दे रहा हूँ बेशक मेरी तदबीर बहुत मज़बूत है। (सूरह–क़लम–68/45)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो शख़्स गुमराही में मुब्तिला हो तो अल्लाह उसे उ़म्र–

व ऐश व इशरत में खूब ढील (मुहलत) देता रहता है हत्ता कि जब वो लोग उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वाअ़दा किया गया है ख़्वाह वो अ़ज़ाबे इलाही हो या ख़्वाह वो क़यामत हो तब वो उस शख़्स को जान लेंगे जो रिहायश गाह के एतबार से बुरा है और लश्कर के एतबार से भी कमज़ोर तर है और अल्लाह तआ़ला हिदायत याफ़्ता लोगों की हिदायत में और ज़्यादा इज़ाफ़ा फ़रमाता है और बाक़ी रहने वाले नेक आअ़माल आपके रब के नज़दीक अन्जाम व अज्रो सवाब के एतबार से बहुत बेहतर हैं। (सूरह–मरयम–19/75,76)

➡ हज़रत अबू मूसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ज़ालिम शख़्स को ढील देता है (ताकि वो खूब गुनाह करे और अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाये) फिर जब वो उसे पकड़ता है तो फिर वो उसे नहीं छोड़ता फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ये आयत पढ़ी 'और इसी तरह तेरे रब की पकड़ है जब वो बस्तियों को इस हाल में पकड़ता है कि वो ज़ालिम (बन चुकी) होती हैं बेशक उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक (और) सख़्त होती है'। (सूरह–हूद–11/102)
(मुस्लिम–सहीह–5/56–ह०-6581)
(इब्ने माजा–सुनन–3/304–ह०-4018)

➡ हज़रत उक़बा बिन आमिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम देखो कि अल्लाह तआ़ला बन्दों को उनकी नाफ़रमानी के बावुजूद उनकी ख़्वाहिशात के मुताबिक़ अ़ता कर–

रहा है तो ये अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ से उनको ढील है। (मुस्नद अहमद–6/122–ह०-17313)

–: क़िसास के अहकाम :–

इरशादे बारी तआ़ाला है:–
पस अगर तुम पर कोई ज़्यादती करे तो तुम भी उस पर ज़्यादती करो मगर उसी क़दर जितनी उसने तुम पर की है और अल्लाह से डरते रहो और जान लो अल्लाह तआ़ाला डरने वालों के साथ है।
(सूरह–बक़राह–2/194)

इरशादे बारी तआ़ाला है:–
जिस जान को क़त्ल करना अल्लाह तआ़ाला ने हराम क़रार दिया है उसको क़त्ल न करो सिवाए इसके कि (उसका क़त्ल करना शरीअ़त की रु से) हक़ हो और जो शख़्स जुल्मन क़त्ल कर दिया गया तो बेशक हमने उसके वारिस को (क़िसास का) इख़्तियार दे दिया है सो चाहिये कि वो क़त्ल में हद से आगे न बढ़े बेशक वो (अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ से) मदद याफ़्ता है।
(सूरह–बनी इसराईल–17/33)

इरशादे बारी तआ़ाला है:–
और वो लोग कि जब उन्हें (किसी ज़ालिम व जाबिर) से जुल्म पहुँचता है तो उससे बदला लेते हैं और बुराई का बदला उसी बुराई के मिस्ल होता है फिर जिसने मुआ़फ़ कर दिया और (मुआ़फ़ी के ज़रिये) इस्लाह की तो उसका अज्र अल्लाह तआ़ाला के ज़िम्मे है बेशक वो ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता और यक़ीनन जो शख़्स अपने ऊपर जुल्म होने के बाद बदला ले तो ऐसे लोगों

पर (मलामत व गिरिफ़्त) की कोई राह नहीं है मलामत व गिरिफ़्त की राह सिर्फ़ उनके लिये है जो लोगों पर ज़ुल्म करते और ज़मीन में नाहक़ सरकशी व फ़साद फैलाते हैं ऐसे लोगों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और जो सब्र करे और मुआ़फ़ कर दे तो बेशक ये बुलन्द हिम्मत के कामों में से है। (सूरह–शूरा–42/39 ता 43)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

(हुक्म) यही है और जिस शख़्स ने उतना ही बदला लिया जितनी उसे अज़िय़त दी गई थी फिर उस शख़्स पर ज़्यादती की जाये तो अल्लाह तआ़ला उसकी ज़रुर मदद फ़रमायेगा बेशक अल्लाह तआ़ला दरगुज़र फ़रमाने वाला बड़ा बख़्शने वाला है। (सूरह–हज–22/60)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ऐ ईमान वालो तुम पर उनके खून का बदला (क़िसास) फ़र्ज किया गया है जो नाहक़ क़त्ल किये जायें अज़ाद के बदले आज़ाद गुलाम के बदले गुलाम और औ़रत के बदले औ़रत फिर अगर उसको (यानी क़ातिल को) उस के भाई (यानी मक़्तूल के वारिस) की तरफ़ से कुछ मुआ़फ़ कर कर दिया जाये तो चाहिये कि भले दस्तूर के मुवाफ़िक़ पैर'वी की जाये और (खून बहा को यानी खून के बदले में जो माल व मताअ़ मिले उसे) अच्छे तरीक़े से उस मक़्तूल के वारिस तक पहुँचा दिया जाये ये तुम्हारे रब की तरफ़ से रिआ़यत व रहमत है पस इसके बाअ़द जो ज़्यादती करे तो उसके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सूरह–बक़राह–2/178)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और हमने (तौरात) में उन पर फ़र्ज़ कर दिया था कि

जान के बदले जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और ज़ख़्मों में भी बदला है तो जो शख़्स इस (क़िसास) को सद्क़ा (यानी मुआफ़) कर दे तो ये उस (के गुनाहों) के लिये कफ़्फ़ारा होगा और जो शख़्स अल्लाह के नाज़िल कर्दा हुक्म के मुताबिक़ फैसला (व हुकूमत) न करे सो वही लोग ज़ालिम हैं।
(सूरह–मायदा–5/45)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसका कोई अ़ज़ीज़ क़त्ल कर दिया जाये तो उसे दो बातों में से एक का इख़्तियार है चाहे तो क़िसास (बदला) ले ले या दीयत बदला कुबूल करले। (बुख़ारी–सहीह–6/271–ह०-6880)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि नज़्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की लड़की ने एक लड़की को तमाचा मारा और उसका दाँत टूट गया तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने क़िसास का हुक्म फ़रमाया।
(बुख़ारी–सहीह–6/278–ह०-6894)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि एक यहूदी ने अन्सार की एक लड़की को कुछ ज़ेवर के लिये क़त्ल किया जो वो पहने थी फिर उसको कुऐं में फेंक दिया और उसका सर पत्थर से कुचल दिया फिर वो पकड़ा गया और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के पास लाया गया तो आपने उसको पत्थर मारने का हुक्म फ़रमाया कि जब तक वो

मर न जाये फिर वो पत्थरों से मारा गया यहाँ तक कि वो मर गया। (मुस्लिम–सहीह–3/471–ह०-4363)

जो लोगों को मशक़्क़त में डालेगा तो अल्लाह तआ़ला उसे मशक़्क़त में डालेगा

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स लोगों को सुनाने के लिये अ़मल करेगा तो अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उसके भेद खोल देगा और जो लोगों को मशक़्क़त में डालेगा तो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसको मुसीबत में मुब्तिला कर देगा। (बुख़ारी–सहीह–6/422–ह०-7152)

➡ हज़रत हिशाम बिन हकीम बिन हिज़ाम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि वो मुल्के शाम में कुछ लोगों के पास से गुज़रे जिन्हें धूप में खड़ा किया गया था हज़रत हिशाम ने पूछा कि ये क्या हालत है इनकी तो लोगों ने बताया सरकारी वसूली के सिलसिले में इन को अ़ज़ाब दिया जा रहा है तो हज़रत हिशाम ने कहा कि मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि अल्लाह तआ़ला उन लोगों को अ़ज़ाब देगा जो लोगों को दुनिया में अ़ज़ाब देते हैं। (मुस्लिम–सहीह–5/84–ह०-6657)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि जब समुन्दरी मुहाजिरीन रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास पहुँचे तो आपने फ़रमाया कि तुमने हब्शा में जो भी अजीब बातें देखी वो हमें नहीं बताओगे उनमें से चन्द नौजवानों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ज़रुर बतायेंगे एक मर्तबा हम

बैठे हुये थे कि वहाँ के दर'वेशियों की एक बुढ़िया सर पर पानी का एक मटका उठाये हमारे पास से गुज़री और फिर एक हब्शा के जवान के पास से गुज़री तो उसने अपना एक हाथ उस बुढ़िया के दोनों काँधों के दरमियान रखा और उसे धक्का दे दिया तो वो बुढ़िया घुटनों के बल गिर पड़ी और उसका मटका टूट गया फिर जब वो उठी तो उस हब्शा के जवान की तरफ़ मुतवज्जै होकर कहने लगी कि तुम्हें अ़नक़रीब इ़ल्म हो जायेगा ऐ मक्कार जब अल्लाह तआ़ला कुर्सी क़ायम फ़रमायेगा और वो अव्वलीन व आख़िरीन को जमाअ़ फ़रमायेगा और हाथ व पाँव अपने करतूत बयान करेंगे उस वक़्त तुम्हें इ़ल्म हो जायेगा कि अल्लाह तआ़ला के यहाँ मेरा और तुम्हारा क्या फ़ैसला होता है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया उस बुढ़िया ने सच कहा कि अल्लाह तआ़ला उस क़ौम को कैसे पाक करे कि जिस क़ौम में कमज़ोरो की ख़ातिर ताक़तवर से मुवाख़ज़ा न किया जाये।
(इब्ने माजा–सुनन–3/301-ह०–4010)

➡ हज़रत अबू सिरमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अपने मुसलमान भाई को नुक़सान पहुँचाया तो अल्लाह तआ़ला उसे नुक़सान पहुँचायेगा और जिसने किसी मुसलमान को मशक़्क़त में डाला तो अल्लाह तआ़ला उसे मशक़्क़त व परेशानी में डालेगा। (अबू दाऊद–सुनन–3/836–ह०-3635)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो किसी को ज़रर (नुक़सान) पहुँचाये तो अल्लाह तआ़ला उसे ज़रर पहुँचायेगा और

जो किसी को तकलीफ़ पहुँचायेगा तो अल्लाह तआ़ला उसे तकलीफ़ पहुँचायेगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1043–ह०-1940)

➡हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मलऊ़न है वो जो ज़रर पहुँचाये किसी मोमिन को या वो मक्र (फ़रेब) करे उसके साथ। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1043–ह०-1941)

नाहक़ माल लूटने वाले का क़त्ल हो जाये तब भी दोज़ख़ी

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि आप क्या फ़रमाते हैं उस शख़्स के बारे में जो मेरा माल नाहक़ तौर पर लेने को आये तो आपने फ़रमाया कि तुम उसे अपना माल न दो और अगर वो तुमसे लड़े तो तू भी उससे लड़ अगर वो तुझे मार डाले तो तू शहीद होगा और अगर तू उसे मार डाले तो वो दोज़ख़ में जायेगा।
(मुस्लिम–सहीह–1/240–ह०-360)

–: अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेगा :–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है सब कुछ अल्लाह का है जो कुछ तुम्हारे दिलों में हैं ख़्वाह तुम उन्हें ज़ाहिर करो या उन्हें छुपाओ अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा फिर वो जिसे चाहेगा बख़्श देगा और जिसे

चाहेगा अ़ज़ाब देगा और अल्लाह हर चीज़ पर कामिल कुदरत रखता है। (सूरह–बक़राह–2/284)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम में से हर एक निगरान है और हर एक से बाज़ पुर्स (सुवाल पूछताछ) होगी हाकिमे वक़्त निगेहबान है उससे भी पूछा जायेगा मर्द अपने अह्ले ख़ाना का निगरान है उससे सुवाल जवाब होगा और औ़रत अपने ख़ाविन्द के घर की निगरान है उससे भी पूछा जायेगा व गुलाम अपने आक़ा के माल का निगरान है उससे भी पूछा जायेगा अलग़रज़ तुममें से हर एक निगरान है और तुममें से हर एक से पूछा जायेगा।
(बुख़ारी–सहीह–5/165–ह०-5188)

हक़दारों को उनके हक़ का बदला दिया जायेगा

इरशादे बारी तआ़ला है:–
और जो कोई (किसी का हक़) छुपाता है तो क़यामत के दिन उसे वो लाना पड़ेगा जो उसने छुपाया था फिर हर शख़्स को उसके अ़मल का पूरा पूरा बदला दिया जायेगा और उन ज़ुल्म नहीं किया जायेगा।
(सूरह–आले इमरान–3/161)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस बन्दे पर रहम फ़रमाये जिसके पास अपने भाई की

इज़्ज़त व माल का हक़ है तो वो पकड़े जाने से पहले साहिबे हक़ से मुआ़फ़ी माँग ले क्योंकि उस जगह न तो दीनार होंगे और न ही दिरहम होंगे पस जो उसके पास नेकियाँ होंगी तो नेकियों से हक़दारों का हक़ और मज़लूमीन का बदला चुकाया जायेगा और अगर नेकियाँ न हुईं तो उन मज़लूमीन और हकदारों के गुनाह उस पर डाले जायेंगे। (बुख़ारी–सहीह–2/683-ह०–2449)
(बुख़ारी–सहीह–6/99-ह०–6534)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/245-ह०–2419)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस किसी के पास उसके भाई की जुल्म से ली हुयी इज़्ज़त या माल हो तो उसे चाहिये कि वो अपने मुसलमान भाई को दुनिया में ही अदा कर दे इससे पहले कि वो क़यामत के दिन आये और तुझसे इज़्ज़त या माल के बदले तेरी नेकियाँ लेले और अगर तेरे पास नेकियाँ कम हुईं तो वो अपने गुनाह तेरे ऊपर डालेगा।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/587-ह०–6513)

रहम करने वाले पर अल्लाह तआ़ला रहम फ़रमाता है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ को पैदा फ़रमाया जब वो मख़्लूक़ की पैदाइश से फ़ारिग़ हुआ तो रहम ने खड़े होकर रहम करने वाले अल्लाह तआ़ला के दामन में पनाह ली अल्लाह तआ़ला

ने उससे फ़रमाया क्या है रहम ने अ़र्ज़ किया यही तो पनाह लेने का मक़ाम है और मैं कतअ़ रहमी से तेरी पनाह चाहता हूँ तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया क्या तुझे ये पसंद नहीं कि जो तुझसे जुड़े तो मैं भी उससे अपना तआ़ल्लूक़ जोड़ूँ और जो तुझसे तआ़ल्लुक़ तोड़े तो मैं भी उससे अपना तआ़ल्लुक़ तोड़ लूँ तो रहम ने अ़र्ज़ किया कि ऐ मेरे रब मैं इस पर राज़ी हूँ अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया फिर ऐसा ही होगा।
(बुख़ारी–सहीह–4/774–ह०-4830)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/794–ह०-7286)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रहम करने वालों पर रहमान रहम करता है पस तुम ज़मीन वालों पर रहम करो आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1034–ह०-1924)
(अबू दाऊद–सुनन–6/720–ह०-4941)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रहम करने वालों पर अल्लाह तआ़ला रहम करता है तुम ज़मीन वालों पर रहम करो तो आसमान वाला तुम पर रहम करेगा रहम रहमान की एक शाख़ है तो जिसने इसको मिलाया अल्लाह तआ़ला उसको मिलाता है और जिसने इसको तोड़ा तो अल्लाह तआ़ला उसको तोड़ता है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/789–ह०-7274)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रहम रहमान की से मिली हुई एक शाख़ है अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जो कोई तुझे मिलायेगा तो मैं उसे मिलाऊँगा और जो तुझे क़तअ़ करेगा तो मैं उससे अपना तअ़ाल्लुक़ तोड़ लूँगा।
(बुख़ारी–सहीह–5/580–ह०-5988, 5989)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/785–ह०-7265, 7287)

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन ऑफ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैं रहमान हूँ और मैंने ही रहम को पैदा किया है और इसे अपने नाम के माद्दा से निकाला है लिहाज़ा जो भी इसे मिलायेगा तो मैं भी उसे मिलाऊँगा और जो इसे क़तअ़ करेगा तो मैं भी उसे अलग थलग कर दूँगा।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/74–ह०-53)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक तुम आपस में एक दूसरे से मुहब्बत न करो और क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ जिससे तुम्हें आपस में मुहब्बत हो जाये सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया क्यों नहीं या रसूलल्लाह फिर आपने फ़रमाया तुम आपस में सलाम को आ़म करो तो तुम्हारे दरमियान मुहब्बत पैदा हो जायेगी और उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े क़ुदरत में मेरी जान है तुम उस वक़्त तक जन्नत में नहीं जा सकते जब–

तक तुम आपस में एक दूसरे पर रहम नहीं करोगे तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया हम तो रहम करते हैं तो आपने फ़रमाया किसी एक पर रहम करना रहम नहीं होता बल्कि रहम वो है जो सब लोगों के लिये आ़म हो
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/806–ह०-7310)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/156–ह०-261)

जो रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता

➡ हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह के बन्दों पर जो रहम नहीं करता तो अल्लाह तआ़ला उस पर रहम नहीं करता। (मुस्लिम–सहीह–4/466–ह०-6030)
(बुख़ारी–सहीह–5/584–ह०-5997)
(बुख़ारी–सहीह–5/590–ह०-6013)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1033–ह०-1922)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/93–ह०-99)

–: क़तअ़ रहमी की मज़म्मत :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन 'रहम' आयेगा और ये फ़सीह व बलीग़ ज़बान में गुफ़्तगू करेगा पस जिसने इसको मिलाया होगा उसको मिला दिया जायेगा व जिसने इसको काटा होगा उसको काट दिया जायेगा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/796–ह०-7288)

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़तअ़ रहम से ज़्यादा कोई अ़मल इस बात के ज़्यादा लायक़ नहीं कि उसके मुरतकिब को दुनिया में भी सज़ा मिले और आख़िरत के लिये भी कुछ सज़ा जमाअ़ रहे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/308–ह०-2511)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/796–ह०-7289, 7290)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/79–ह०-67)

➡ हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रिश्ता तोड़ने वाला जन्नत में नहीं जायेगा (बुख़ारी–सहीह–5/578–ह०-5984)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/78–ह०-64)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि औलादे आदम के आअ़माल जुमआ़ की रात अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पेश किये जाते हैं और क़तअ़ रहम करने वाले के आअ़माल कुबूल नहीं किये जाते।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/77–ह०-61)

–: अह्‌ले ईमान की अ़लामत :–

➡ हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम अह्‌ले ईमान को एक दूसरे पर रहम करने आपस में मुहब्बत

करने व एक दूसरे से शफ़क़त के साथ पेश आने में एक जिस्म की मानिन्द देखोगे कि जिसके एक उ़ज़्व को अगर कोई तकलीफ़ पहुँचे तो सारा जिस्म बेक़रार हो जाता है और उसकी नींद उड़ जाती है और उसका सारा जिस्म बुख़ार में मुब्तिला हो जाता है।
(बुख़ारी–सहीह–5/589–ह०-6011)

अल्लाह तआ़ला माँ से भी ज़्यादा रहम फ़रमाता है

➡ हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास कुछ क़ैदी आये उन क़ैदियों में एक औ़रत थी कि जिसकी छाती दूध से भरी थी और वो अपने बच्चे की तलाश में इधर उधर दौड़ रही थी उस दौरान उसे अपना बच्चा नज़र आया उसने झट से उस बच्चे को अपनी छाती से लगा लिया और उसे दूध पिलाने लगी ये मन्ज़र देखकर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया तुम क्या ख़्याल करते हो कि ये औ़रत अपने बच्चे को आग में फेंक सकती है तो हमने कहा ये अपने बच्चे को आग में नहीं फेंक सकती फिर आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर इससे भी ज़्यादा रहम करने वाला है जितना ये औ़रत अपने बच्चे पर रहम कर सकती है। (बुख़ारी–सहीह–5/584–ह०-5999)
(मुस्लिम–सहीह–5/230–ह०-6978)

–: अल्लाह तआ़ला की सौ रहमतें :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बिला शुबाह अल्लाह तअ़ाला ने अपनी रहमत के सौ हिस्से बनाये हैं उनमें से नन्नयाबे हिस्से अपने पास रखे हैं सिर्फ़ एक हिस्सा ज़मीन पर उतारा है इस एक हिस्से के सबब तमाम मख़्लूक़ एक दूसरे से प्यार व मुहब्बत व रहम करती है जैसे माँ अपने बच्चे से मुहब्बत करती है यहाँ तक कि घोड़ी अपने बच्चे को पाँव नहीं लगने देती बल्कि वो अपने खुर ऊपर उठा लेती है बाक़ी निन्नयाबे रहमतें अल्लाह तअ़ाला ने अपने पास क़यामत के दिन लिये रख छोड़ी हैं। (यानी क़यामत के दिन अल्लाह तअ़ाला अपनी उन तमाम रहमतों से अपने बन्दो को बख़्शेगा)
(बुख़ारी–सहीह–5/585–ह०-6000)
(इब्ने माजा–सुनन–3/400-ह०–4293)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/979-ह०–3541)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/93–ह०-100)

छोटों पर रहम और बड़ों की इ़ज़्ज़त

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से एक बूढ़ा शख़्स मिलने के लिये आया तो लोगों ने उस बूढ़े को रास्ता देने में देर की तो आपने फ़रमाया कि वो हममें से नहीं जो छोटों पर रहम न करे और बड़ों की इ़ज़्ज़त व तकरीम न करे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1032–ह०-1919, 1920)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/827–ह०-7353)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/189–ह०-357)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला

अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम्हारे पास किसी क़ौम का मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स आये तो उसकी इ़ज़्ज़त करो। (इब्ने माजा–सुनन–3/192–ह०-3711)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो हमारे छोटों पर रहम व शफ़क़त न करे और बड़ों के हक़ को न पहचाने वो हममें से नहीं।
(अबू दाऊद–सुनन–4/721–ह०-4943)

–: सिला रहमी करने का हुक्म :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़नक़रीब तुम्हें फुतूहात नसीब होंगे, तुम मदद किये जाओगे बहुत माल व दौलत पाओगे जो शख़्स वो ज़माना पाये उसको चाहिये कि वो अल्लाह तआ़ला से डरे और भलाई का हुक्म करे और बुराई से मनाअ़ करे और सिला रहमी करे। (हाकिम–अल मुस्तदरक–5/790–ह०-7275)

–: सिला रहमी के फ़ज़ाइल :–

➡ हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से एक शख़्स ने अ़र्ज़ की या रसूलुल्लाह आप मुझे कोई ऐसा अ़मल बतायें जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे पस आपने फ़रमाया कि–

अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करो व उसके साथ किसी को शरीक न करो, नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो और सिला रहमी करते रहो (बुख़ारी–सहीह–5/578–ह०-5983) (इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/71–ह०-49)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसे ये पसन्द हो कि उसके रिज़्क़ में बरकत हो और उसकी उ़म्र दराज़ हो तो उसे चाहिये कि सिला रहमी करे।
(बुख़ारी–सहीह–5/579–ह०-5985, 5986)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/791–ह०-7279)

➡ हज़रत आसिम रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो ये चाहता हो कि उसके रिज़्क़ में वुसअ़त हो और उसकी उ़म्र दराज़ हो और अल्लाह तआ़ला उसे बुरी मौत से बचाये तो उसे चाहिये कि वो अल्लाह तआ़ला से डरे और सिला रहमी किया करे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/792–ह०-7280)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप हमें कोई ऐसा अ़मल बतायें कि जिसके सबब से मैं जन्नत में चला जाऊँ तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सलाम को आ़म करो, खाना खिलाओ, सिला रहमी करो, रात के जिस पहर में लोग सो रहे होते हैं उस वक़्त इ़बादत किया करो फिर तुम सलामती के साथ जन्नत में चले जाओगे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/791–ह०-7277)

लोगों के साथ भलाई करना सद्क़ा है

➡ हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया किसी परेशान हाल ज़रुरत मन्द की मदद करना सद्क़ा है लोगों को भलाई की तरफ़ राग़िब करना सद्क़ा है व अच्छे कामों की तल्क़ीन करना सद्क़ा है और लोगों को अपने शर से बचाकर रखना भी सद्क़ा है।
(बुख़ारी–सहीह–5/593–ह०-6022)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने मुसलमान भाई के सामने मुस्कुराना भी सद्क़ा है और नेकी की दाअ़वत देना और अच्छी बात का हुक्म देना और बुरी बातों से मनाअ़ करना तेरे लिये सद्क़ा है और किसी भूले हुये को रास्ता बताना भी तेरे लिये सद्क़ा है और रास्ते से पत्थर हड्डी और काँटों को दूर कर देना तेरे लिये सद्क़ा है यानी रास्ते से हर तकलीफ़ देने वाली चीज़ को हटा देना तेरे लिये सद्क़ा है और अपने भाई के लिये डोल में पानी डाल देना तेरे लिये सद्क़ा है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1049–ह०-1956)

➡ हज़रत अबू बरज़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल आप मुझे कोई ऐसा अ़मल बतायें कि जिससे मैं फ़ायदा उठाऊँ (उस पर अ़मल करके) पस आपने फ़रमाया कि

मुसलमानों के रास्ते से तकलीफ़ ज़दा हर चीज़ को हटा दिया करो। (इब्ने माजा–सुनन–3/184–ह०-3681)
(मुस्लिम–सहीह–6/229–ह०-6674)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रास्ते में दरख़्त की एक शाख़ पड़ी थी जिससे लोगों को ईज़ा पहुँचती थी एक मर्द ने उसे रास्ते से हटा दिया इस अ़मल के सबब उसे बख़्श दिया गया और उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया गया। (बुख़ारी–सहीह–1/435–ह०-652)
(बुख़ारी–सहीह–2/698–ह०-2472)
(मुस्लिम–सहीह–5/178–ह०-4940, 6671)
(इब्ने माजा–सुनन–3/184–ह०-3682)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1050–ह०-1958)
(अबू दाऊद–सुनन–6/897–ह०-5245)

➡ हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़िअल्लाहु तआला अन्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस शख़्स ने दूध का मनीहा दिया (यानी दूध देने वाली बकरी या ऊँटनी किसी को इस शर्त पर दिया कि जब तक वो चाहे इस के दूध से फ़ायदा उठाये और फिर मालिक को फेर दे) या चाँदी का मनीहा दिया (यानी रुपया पैसा कर्ज़ देना) या किसी को राह बताई तो उसे लौंडी या गुलाम को आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलेगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1049–ह०-1957)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रास्ते से तकलीफ़ ज़दा चीज़ हटाना भी सद्क़ा है। (बुख़ारी–सहीह–2/691)

➡ हज़रत क़बीसा बिन बुरमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया के अन्दर रहकर भलाई करने वाले लोग आख़िरत में भी भले होंगे और दुनिया में बुरा करने वाले लोग आख़िरत में भी बुरे शुमार होंगे।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/139–ह०-221)

भलाई का बदला बराबर भलाई से दो

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिससे कोई भलाई करे तो उसे चाहिये कि बराबर से उससे भलाई करे और अगर वो ऐसा न कर सके तो उसको अच्छे अल्फ़ाज़ से याद करे क्योंकि अगर उसे अच्छे तरीक़े से से याद रखोगे तो गोया तुमने उसका शुक्रिया अदा कर दिया अगर तुमने उसकी भलाई को छुपा लिया तो गोया तुम उसके नाशुक्र गुज़ार हो जाओगे।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/137–ह०-215)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो अल्लाह के नाम पर तुम्हारी पनाह माँगे उसे पनाह दो और जो अल्लाह के नाम पर तुमसे सुवाल करे तो उसे दो और जो तुमसे भलाई करे तो तुम बराबर उसके साथ भलाई

करो और अगर ऐसा न कर सको तो उसके लिये दुआ़ करो क्योंकि ऐसा करने से उसका हक़ अदा हो जायेगा (इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/137–ह०-216)

एहसान करने वाले की ताअ़रीफ़ करना शुक्र है

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसे कोई अ़तिया या हदिया दिया जाये अगर उसकी इस्तिताअ़त में हो तो उसका बदला दे और अगर वो बदला न दे सके तो उसकी ताअ़रीफ़ करे पस जिसने अपने मुहसिन की ताअ़रीफ़ की तो उसने उसका शुक्र अदा कर दिया और जिसने मुहसिन के एहसान को छुपाया तो उसने ना शुक्री की।
(अबू दाऊद–सुनन–4/651-ह०-4813,4814)

➡ हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला व आलिहि अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसके साथ किसी ने एहसान किया और उसने मुहसिन से कहा जज़ाकल्लाहु ख़ैरा तो उसने मुहसिन की ताअ़रीफ़ की यानी उसका शुक्र अदा कर दिया।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1082-ह०-2035)

–: लोगों का शुक्र अदा करना :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स लोगों–

का शुक्र अदा नहीं करता वो अल्लाह तआ़ला का भी शुक्र अदा नहीं करता।
(अबू दाऊद–सुनन–6/650-ह०-4811)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1048-ह०-1954)
(मुस्नद अहमद–10/288-ह०-2291)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/455-ह०-3407)

➡ हज़रत अशअ़त (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला का सबसे ज़्यादा शुक्र गुज़ार बन्दा वही होता है कि जो लोगों का सबसे ज़्यादा शुक्रिया अदा करता है।
(मुस्नद अहमद–10/288-ह०-22190)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने लोगों का शुक्र अदा नहीं किया उसने अल्लाह का शुक्र अदा नहीं किया।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1048-ह०-1955)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो अल्लाह का शाकिर शुमार नहीं होगा जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/138–ह०-218)

किसी की मुसीबत पर खुश न होना

➡ हज़रत वासिला बिन अस्क़ाअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने भाई की मुसीबत पर खुश न हो वरना अल्लाह तआ़ला उस पर रहम फ़रमायेगा और तुझे उस मुसीबत में मुब्तिला कर देगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/306-ह०-2506)

लोगों के लिये आसानियाँ पैदा करो मुश्किलात में न डालो

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आसानियाँ पैदा करो और मुश्किलात में न डालो और सुकून से रहो और नफ़रत न डालो। (इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/231–ह०-480)

अपने मुसलमान भाई का हर तरह से ख़्याल रखना

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया– जब तुम मस्जिद में दाख़िल हो तो अपने तीर संभल लिया करो कि उससे किसी मुसलमान को ज़ख़्मी न कर बैठो।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/117–ह०-3800)

➡ हज़रत अबू मूसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुममें से कोई बाज़ार से इस हालत में गुज़रे कि उसके पास तीर हों तो उसको कमान में रख ले।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/708–ह०-4884)

मुसलमान भाई की मदद व हाजत र‘वाई और ऐ़बों की पर्दा पोशी

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के काम के सिलसिले में चल पड़ा यहाँ तक कि वो उसे पूरा कर दे तो अल्लाह तआ़ला उस पर पाँच हज़ार फ़रिश्तों का साया कर देता है और वो फ़रिश्ते उस शख़्स के लिये अगर दिन हो तो रात होने तक और अगर रात हो तो दिन होने तक उसके लिये दुआ़ करते रहते और उस पर रहमत भेजते रहते हैं और उसके उठने वाले हर क़दम के बदले नेकी लिख दी जाती है और उसके रखने वाले हर क़दम के बदले एक गुनाह मिटाया जाता है। (मजमाउज़्ज़वाइद–2/299)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/347–ह०-4396)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/119–ह०-7669)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–3/263–ह०-3973, 5274)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है पस हर मुसलमान को चाहिये कि वो अपने मुसलमान भाई पर जुल्म न करे और उसे हलाकत में न डाले और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की हाजत र‘वाई करता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी हाजत रवाई करता है जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की मुसीबत दूर करे तो अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उसकी मुसीबत को दूर करेगा और जिसने किसी मुसलमान के ऐ़बों पर परदा डाला यानी ऐ़बों को छिपाया तो अल्लाह

तअ़ाला क़यामत के दिन उसके ऐ़बों पर पर्दा डाल देगा (मुस्लिम–सहीह–6/207–ह०-6578)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/791–ह०-1426)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की कोई मुसीबत दूर करे तो अल्लाह तअ़ाला क़यामत के दिन उसकी मुसीबत को दूर करेगा और जिसने किसी तंगदस्त पर आसानी की तो अल्लाह तअ़ाला दुनिया व आख़िरत में उस पर आसानी करेगा और अल्लाह तअ़ाला उस शख़्स की मदद में होता है जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की मदद में लगा होता है और जो शख़्स दुनिया में किसी मुसलमान का ऐ़ब ढांपे तो अल्लाह तअ़ाला दुनिया व आख़िरत में उसके ऐ़बों को ढांपेगा। (मुस्लिम–सहीह–5/176–ह०-6853)
(अबू दाऊद–सुनन–4/722–ह०-4946)
(इब्ने माजा–सुनन–1/110–ह०-225)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/791–ह०-1425, 1930)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/442–ह०-8159)
(इब्ने माजा–सुनन–2/267–ह०-2544)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से मर‘वी है हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो अपने भाई के साथ उसकी ज़रुरत पूरी करने के लिये चला और उसकी ज़रुरत पूरी कर दी तो अल्लाह तअ़ाला उसके क़दम को पुलसिरात पर साबित क़दम रखेगा। (मुअ़जम कबीर–12/553–ह०-13646)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/546–ह०-6026)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–3/265, 266–ह०-3985)

➡ हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला बन्दे की मदद उस वक़्त तक करता रहता है जब तक बन्दा अपने मुसलमान भाई की मदद करता रहता है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/118–ह०-4801, 4802)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान मुसलमान का भाई है न वो उस पर जुल्म करता है और न जुल्म के हवाले करता है और न ही उसे बे-सहारा छोड़ता है और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई के काम आता है तो अल्लाह तआ़ला उसके काम में मदद फ़रमाता है और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की दुनियावी मुश्किल हल करता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी उख़र‘वी मुश्किल हल फ़रमायेगा और जो शख़्स अपने भाई की ज़रुरत को पूरा करने में मसरुफ़ होता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी ज़रुरत पूरी फ़रमाता है और जो मुसलमान किसी मुसलमान की मुसीबत दूर करेगा तो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसकी मुसीबत को दूर करेगा नीज़ जो शख़्स किसी मुसलमान का ऐ़ब छिपायेगा तो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसकी पर्दा पोशी फ़रमायेगा।
(बुख़ारी–सहीह–2/679–ह०-2442)
(मुस्लिम–सहीह–5/55–ह०-6578)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/791–ह०-1426)
(अबू दाऊद–सुनन–4/692–ह०-4893)
(मुस्नद अहमद–2/91–ह०-5646)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/637–ह०-533)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अपने मुसलमान भाई की ऐ़ब पोशी की तो अल्लाह तआ़ाला क़यामत के दिन उसकी ऐ़ब पोशी फ़रमायेगा और जो किसी मुसलमान की पर्दादरी (ऐ़ब ढूँढना, लोगों में किसी मुसलमान के ऐ़ब ज़ाहिर करना, जासूसी मुख़बरी ऐ़ब नुमाई) करे तो अल्लाह तआ़ाला उसकी पर्दादरी फ़रमायेगा कि घर बैठे उसको रुसवा करेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–2/268–ह०-2546)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की इ़ज़्ज़त से वो ऐ़ब दूर कर दे जो उसकी इ़ज़्ज़त में ख़लल डालता हो तो क़यामत के दिन अल्लाह तबारक व तआ़ाला उसको दोज़ख़ की आग से दूर फ़रमायेगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1037-ह०-1931)

मुसलमान भाई के ऐ़बो को ढूँढना गुनाह है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान को ईज़ा न दो और न ही उसे शर्मिन्दा करो और न उसके ऐ़ब ढूंढो इसलिये कि जो अपने मुसलमान भाई के ऐ़ब ढूंढेगा तो अल्लाह तआ़ाला उसको ज़लील कर देगा अगरचा वो अपने घर में हो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1080-ह०-2032)

➡ हज़रत अबू बरज़ा असलमी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया- ऐ उन लोगों की जमाअ़त जो सिर्फ़ ज़बान से ईमान लाये हैं उनके दिलों में ईमान दाख़िल नहीं हुआ कि तुम मुसलमानों की ग़ीबत न किया करो और उनकी इ़ज़्ज़त व आबरु से न खेला करो और उनके ऐ़बों को तलाश न किया करो बिला शुबा जो उनके ऐ़बों की घात व तलाश में रहेगा तो अल्लाह तआ़ला भी उसके ऐ़बों के दरपे होगा और अल्लाह तआ़ला जिसके ऐ़बों के दरपे हो गया तो उसे उसके घर के अन्दर रुसवा करेगा।
(अबू दाऊद-सुनन-4/684-ह०-4880)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने किसी मुसलमान पर किसी चीज़ की तुहमत लगाई कि उसके ज़रिये से उस ने उस पर ऐ़ब लगाना चाहा तो अल्लाह तआ़ला उसे जहन्नम के पुलसिरात पर रोके रखेगा हत्ता कि उसके कहे की सज़ा पूरी हो जाये।
(अबू दाऊद-सुनन-4/686-ह०-4883)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बदगुमानी से बचो क्योंकि बदगुमानी बड़ा झूट है और किसी की बातों पर कान न लगाओ और न ही तुम एक दूसरे के ज़ाहिरी व बातिनी ऐ़ब तलाश करो और न ही हिर्सो हसद करो
(मुस्लिम-सहीह-5/40-ह०-6536)
(अबू दाऊद-सुनन-4/706-ह०-4917)

मुसलमान भाई के साथ एहसान करने का हुक्म

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक अल्लाह तआ़ला (हर एक के साथ) अ़द्ल और एहसान का हुक्म फ़रमाता है और क़राबतदारों को देते रहने का (हुक्म फ़रमाता है) और बेहयाई व बुरे कामों और सरकशी व नाफ़रमानी से मनाअ़ फ़रमाता है वो तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम खूब याद रखो।
(सूरह–नह्ल–16/90)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और तू (लोगों से वैसा ही) एहसान कर जैसा एहसान अल्लाह ने तुझ पर फ़रमाया है और मुल्क में फ़साद अंगेज़ी (की राहें) तलाश न कर बेशक अल्लाह तआ़ला फ़साद बपा करने वालों को पसंद नहीं करता।
(सूरह–क़सस–28/77)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक अल्लाह साहिबाने एहसान को अपनी माअ़य्यत से नवाज़ता है। (सूरह–अ़नकबूत–29/69)

बेशक अल्लाह तआ़ला एहसान करने वालों को पसन्द फ़रमाता है। (सूरह–मायदा–5/13)

तंगदस्त मक़रुज़ पर आसानी करने व मुहलत देने का सवाब

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और अगर क़र्ज़दार तंगदस्त हो तो खुशहाली तक उसे

मुहलत दो और तुम्हारा (क़र्ज़ को) मुआ़फ़ कर देना तुम्हारे लिये (बहुत) बेहतर है अगर तुम्हें माअ़लूम हो (कि ग़रीब की दिलजोई अल्लाह तआ़ला की निगाह में क्या मक़ाम रखती है) (सूरह–बक़राह–2/80)

➡ हज़रत बुरैदा असलमी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो तंगदस्त को मुहलत दे तो उसे हर दिन के बदले सद्क़े का अज्र मिलेगा और जो अदायगी की मियाद गुज़रने के बाअ़द भी मुहलत दे तो हर रोज़ क़र्ज़े के बाक़दरे अज्र मिलेगा यानी जो क़र्ज़ देने का सवाब है उसी मिक़दार में अज्र व सवाब मिलेगा। (इब्ने माजा–सुनन–2/218–ह०-2418)

➡ हज़रत अबू यस्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसे ये पसंद हो कि अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसे अपने अ़र्श का साया अ़ता फ़रमाये तो उसे चाहिये कि वो तंगदस्त को मुहलत दे या उसका थोड़ा बहुत क़र्ज़ मुआ़फ़ करदे। (इब्ने माजा–सुनन–2/218–ह०-2419)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो तंगदस्त क़र्ज़दार को मुहलत दे या उसके क़र्ज़ में कुछ या ज़्यादा छोड़ दे तो अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उसे अपने अ़र्श के साये में जगह अ़ता फ़रमायेगा जिस दिन कोई साया न होगा सिवाए अल्लाह तआ़ला के अ़र्श के। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/722–ह०-1306)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक शख़्स मर गया उससे पूछा गया कि तूने क्या अ़मल किया उसने कहा कि मैंने कोई नेकी नहीं की मगर ये कि मैं मालदार था तो लोगों से अपना क़र्ज़ माँगता तो मालदार से वसूल कर लेता और तंगदस्त को मुहलत दिया करता था तो अल्लाह तआ़ाला ने (फ़रिश्तों से) फ़रमाया कि तुम भी मेरे इस बन्दे से दर गुज़र करो और अल्लाह तआ़ाला ने उसकी बख़्शिश करदी।
(मुस्लिम–सहीह–4/193–ह०-3994, 3995)
(इब्ने माजा–सुनन–2/218–ह०-2420)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक शख़्स का आ़लमे बरज़ख़ में हिसाब किया गया सो उसके पास कोई नेकी न थी मगर इतनी कि वो शख़्स अमीर था और लोगों से लेनदेन करता था और वो अपने गुलामों को हुक्म देता था कि तंगदस्त क़र्ज़दार को मुआ़फ़ करते रहो सो अल्लाह तआ़ाला ने फ़रमाया कि मैं तो तुझसे ज़्यादा लायक़ हूँ मुआ़फ़ करने के लिये फिर फ़रिश्तों को हुक्म हुआ कि इसको मुआ़फ़ करदो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/723–ह०-1307)
(मुस्लिम–सहीह–4/194–ह०-3996, 3997)
(नसाई–सुनन–3/358–ह०-4701, 4702)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो तंगदस्त पर–

आसानी करे तो अल्लाह तआ़ला उस पर दुनिया और आख़िरत में आसानी फ़रमायेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–2/218–ह०-2417)

–: क़र्ज़ देने का सवाब :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैंने शबे मेअ़राज जन्नत के दरवाज़े पर ये लिखा देखा है कि सद्क़े का सवाब (10) दस गुना मिलेगा और क़र्ज देने का सवाब (18) अट्ठारह गुना मिलेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–2/222–ह०-2431)

क़र्ज़ के लेनदेन व ख़रीद फ़रोख़्त का मुआ़मला लिखने का हुक्म

इरशादे बारी तआ़ला है:–
ऐ ईमान वालो जब तुम किसी मुक़र्ररा वक़्त तक के लिये आपस में क़र्ज़ का मुआ़मला करो तो उसे लिख लिया करो और तुम्हारे दरमियान जो लिखने वाला हो उसे चाहिये कि इन्साफ़ के साथ लिखे और अपने लोगों में से दो लोगों को गवाह बना लो फिर अगर दो मर्द मयस्सर न हों तो एक मर्द और दो औ़रतें हों और गवाहों को जब भी (गवाही के लिये) बुलाया जाये तो वो इन्कार न करें और जब भी तुम आपस में ख़रीद व फ़रोख़्त करो तो गवाह बना लिया करो और न ही लिखने वाले को नुक़सान पहुँचाया जाये और न गवाह को और अल्लाह से डरते रहो और अल्लाह तआ़ला तुम्हें (मुआ़मलात की) ताअ़लीम देता है और अल्लाह–

तआ़ला हर चीज़ का खूब जानने वाला है।
(सूरह–बक़राह–2/282)

क़र्ज़ अदा करने की नीयत हो तो अल्लाह अदायगी की तौफ़ीक़ देता है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स लोगों से माल इस नीयत से लेता है कि वो उसकी अदायगी करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसको क़र्ज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है।
(बुख़ारी–सहीह–2/644–ह०-2387)
(नसाई–सुनन–3/356–ह०-4694)

क़र्ज़ अदा करने की ताक़त के बावुजूद क़र्ज़ अदा न करने वाला ज़ालिम

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स मालदार हो (यानी उसमें क़र्ज़ अदा करने की ताक़त हो) और फिर भी वो क़र्ज़ अदा करने में देर करे तो वो ज़ालिम है। (नसाई–सुनन–3/553–ह०-4692)

मालदार का क़र्ज़ न देने की सूरत में उसकी बेइज़्ज़ती करना

➡ हज़रत शरीद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मालदार शख़्स अगर क़र्ज़ अदा करने में टाल मटोर करे व ताख़ीर करे तो उसकी बेइज़्ज़ती करना दुरस्त व उसे सज़ा देना जाइज़ और हलाल है। (नसाई–सुनन–3/554–ह०-4693, 4694)

क़र्ज़दार की बख़्शिश नहीं ख़्वाह वो शहीद ही क्यों न हो

➡ हज़रत मुहम्मद बिन जह्श (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है अगर एक आदमी राहे खुदा में शहीद किया जाये और फिर वो ज़िन्दा किया जाये फिर शहीद किया जाये और फिर ज़िन्दा किया जाये फिर शहीद किया जाये अगर उसके ज़िम्मे क़र्ज़ हो तो वो जन्नत में दाख़िल नहीं होगा जब तक कि वो शख़्स अपने क़र्ज़ की अदायगी न करदे। (नसाई–सुनन–3/550–ह०-4688)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़र्ज़दार की रुह मुअ़ल्लक़ (लटकी) रहती है यहाँ तक कि उसकी तरफ़ से क़र्ज़ा अदा कर दिया जाये।
(इब्ने माजा–सुनन–2/217–ह०-2413)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/594–ह०-1078, 1079)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–2/437–ह०-2219)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–4/177–ह०-3061)

➡ हज़रत अबू क़तादा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तमाम अ़मलों में अफ़ज़ल अ़मल अल्लाह की राह में जिहाद करना और अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाना है तो एक शख़्स खड़ा हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह अगर मैं अल्लाह तआ़ला की राह में मारा जाऊँ तो क्या मेरे गुनाह बख़्श दिये जायेंगे आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फरमाया हाँ अगर तू अल्लाह तआ़ला की राह में क़त्ल हो जाये और सब्र के साथ तेरी नीयत अल्लाह तआ़ला के लिये ख़ालिस हो और तू सामने रहे और पीठ न फेरे तो तेरे सब गुनाह बख़्श दिये जायेंगे सिवाये क़र्ज़ के। (क्योंकि क़र्ज़ बन्दे का हक़ है)
(मुस्लिम–सहीह–5/159–ह०-4880)
(नसाई–सुनन–2/358–ह०-3160)

दर गुज़र करने और मुआ़फ़ करने का सवाब

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और बुराई का बदला उसी बुराई के मिस्ल होता है फिर जिसने मुआ़फ़ कर दिया और (मुआ़फ़ी के ज़रिये) इस्लाह की तो उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है।
(सूरह–शूरा–42/40)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो बेशक तुम्हारी बीवियों व तुम्हारी औलाद में से बाअ़ज़ तुम्हारे दुश्मन हैं पस होशियार रहो और अगर तुम सर्फ़े नज़र करलो दरगुज़र करो और मुआ़फ़ कर दो तो बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (सूरह–तग़ाबुन–64/14)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बस मलामत के मुस्तहिक़ तो सिर्फ़ वो लोग हैं कि जो लोगों पर जुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सरकशी और फ़साद फैलाते हैं ऐसे ही लोगों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और यक़ीनन जो सब्र करे और मुआ़फ़ कर दे तो बेशक ये बुलन्द हिम्मत के कामों में से है।
(सूरह–शूरा–42/42, 43)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
पस उन्हें चाहिये कि (उनका कुसूर) मुआ़फ़ करदें और उनकी ग़लती से दर गुज़र करें क्या तुम इस बात को पसन्द नहीं करते हो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें बख़्श दे और अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।
(सूरह–नूर–24/22)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ हबीबे मुकर्रम आप दरगुज़र फ़रमाना इख़्तियार करें और भलाई का हुक्म देते रहें और जाहिलों से किनारा कशी इख़्तियार करें। (सूरह–आअ़राफ़–7/199)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(ऐ हबीबे मुकर्रम) सो आप बड़े अच्छे अन्दाज़ व बड़ी खूबसूरती के साथ दर गुज़र करते रहिये।
(सूरह–हिज्र–15/85)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सद्क़ा देने से कभी माल नहीं घटता और जो बन्दा मुआ़फ़ कर देता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी इ़ज़्ज़त को बढ़ा देता है और

जो बन्दा अल्लाह तआ़ला के लिये अ़िज़िज़ी करता है तो अल्लाह तआ़ला उसका दर्जा बुलन्द करता है।
(मुस्लिम–सहीह–6/210–ह०-6592)

–: बुराई का बदला भलाई से :–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और (खुदाए) रहमान के (मक़बूल) बन्दे वो हैं कि जो ज़मीन पर आहिस्तगी से चला करते हैं और जब उनसे जाहिल लोग (ना पसंदीदा) बात करते हैं तो वो सलाम कहते (हुये अलग हो जाते) हैं।
(सूरह–फुरक़ान–25/63)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और नेकी और बदी बराबर नहीं हो सकती और बुराई को बेहतर (तरीक़े) से दूर किया करो सो नतीजा तन वो शख़्स कि जिसके और तुम्हारे दरमियान दुश्मनी थी गोया वो तुम्हारा जिगरी दोस्त बन जायेगा।
(सूरह–फुस्सिलत–हामीम सज्दा–41/34)

अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला न करने वाला काफ़िर है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
पस तुम लोगों से न डरो और (सिर्फ़) मुझसे डरा करो और मेरी आयात (याअ़नी अहकाम) के बदले दुनिया की हक़ीर क़ीमत न लिया करो और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के नाज़िल कर्दा हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला (व हुकूमत) न करे सो वही लोग काफ़िर है।
(सूरह–मायदा–5/44)

मोमिन पर लाअ़न ताअ़न करना व उसे काफ़िर कहने की मुमानियत

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

ऐ ईमान वालो कोई क़ौम किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाये मुम्किन है वो लोग उन (मज़ाक़ उड़ाने वालों) से बेहतर हों और न अ़ौरतें ही उन दूसरी अ़ौरतों का मज़ाक़ उड़ायें) मुम्किन है वो अ़ौरतें उन (मज़ाक़ उड़ाने वाली अ़ौरतों) से बेहतर हों और न आपस में ताअ़ना ज़नी व इल्ज़ाम तराशी किया करो और न एक दूसरे के बुरे नाम रखा करो किसी के ईमान लाने के बाअ़द उसे फ़ासिक़ और बद किरदार कहना बहुत बुरा नाम है और जिसने तौबा न की सो वही लोग ज़ालिम हैं। (सूरह–हुजुरात–49/11)

➡ हज़रत साबित बिन ज़ह्हाक (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन पर लाअ़न ताअ़न (लाअ़नत) करने वाला क़ातिल की तरह है और जिसने किसी मुसलमान को काफ़िर कहा तो वो उसके क़ातिल की तरह है और जिसने किसी चीज़ के साथ खुदकुशी की तो अल्लाह तअ़ाला क़यामत के दिन उसी चीज़ के साथ उसको अ़ज़ाब देगा।

(बुख़ारी–सहीह–5/603–ह०-6047)

(बुख़ारी–सहीह–6/152–ह०-6652)

(मुस्लिम–सहीह–1/205–ह०-303)

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/414–ह०-2636)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी

है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने 'ला इलाहा इल्लल्लाह' का इक़रार किया तो फिर उसे किसी गुनाह या किसी अ़मल की वजह से काफ़िर न कहो और न ही उसे ईमान से ख़ारिज करो।
(अबू दाऊद–सुनन–3/79–ह०-2532)

➡ हज़रत समुराह बिन जुन्दब (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक दूसरे से मत कहो कि तुम पर अल्लाह की लाअ़नत हो और ये कि तुम पर ग़ज़ब हो और न ये कि तू जहन्नम में जाये। (अबू दाऊद–सुनन–6/702–ह०-4906)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1057–ह०-1976)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि फुहश कलामी और बेहूदा गो और ताअ़न करने वाला और लाअ़नत करने वाला मोमिन नहीं है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1057–ह०-1977)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/174–ह०-315)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) सामने हवा को लाअ़नत की तो आपने फ़रमाया हवा को लाअ़नत न कर इसलिये कि वो तो अपने रब की फ़रमां बरदार है और बेशक जिसने लाअ़नत की किसी ऐसी चीज़ को जो लाअ़नत के लायक़ न थी तो लाअ़नत कहने वाले की तरफ़ लौट

आती है। (अबू दाऊद–सुनन–6/702–ह०-4908)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1058–ह०-1978)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस पर लाअ़नत की गई हो और वो उसका हक़दार था तो उस पर पड़ जाती है अगर वो उसका हक़दार न था तो लाअ़नत कहने वाले पर पड़ती है (अबू दाऊद–6/701–ह०-4905)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन को लायक़ नहीं कि वो किसी पर लाअ़नत करे।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/173–ह०-312)

➡ हज़रत मुहम्मद बिन उ़बैद किन्दी रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लाअ़नत करने वालों पर अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ से लाअ़नत होती है।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/174–ह०-318)

–: कुफ़्र पलटता है :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई को काफ़िर कहे तो उन दोनो में से एक उसका मुस्तहिक़ होता है और वो कुफ़्र दोंनों में से किसी एक पर ज़रुर पलटेगा और अगर वो शख़्स–

जिसको काफ़िर कहा है और वो काफ़िर न हो तो कुफ़्र लौट आयेगा यानी काफ़िर कहने वाला खुद काफ़िर हो जायेगा। (मुस्लिम–सहीह–1/175–ह०-215, 216)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/415–ह०-2637)
(अबू दाऊद–सुनन–6/558–ह०-4687)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अगर कोई शख़्स किसी शख़्स को काफ़िर या फ़ासिक़ कहे और हक़ीक़त में वो काफ़िर या फ़ासिक़ न हो तो खुद कहने वाला काफ़िर और फ़ासिक़ हो जायेगा।
(बुख़ारी–सहीह–5/602–ह०-6044)
(मुस्लिम–सहीह–1/167–ह०-217)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई से कहे ऐ काफ़िर तो उन दोंनों में से एक ज़रुर काफ़िर हो जायेगा।
(बुख़ारी–सहीह–5/628–ह०-6103)

–: दो बातें कुफ़्र हैं :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दो बातें कुफ़्र हैं एक नसब मे ताअ़ना देना दूसरा मय्यत पर चिल्लाकर रोना यानी उसके औसाफ़ बयान करके रोना जिसको नोहा कहते हैं। (मुस्लिम–सहीह–1/171–ह०-226)

अपने मुसलमान भाई को मुनाफ़िक़ कहने की मुमानियत

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने हातिब बिन अबी बल्तआ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के बारे में कहा कि वो मुनाफ़िक़ हैं तो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम्हें क्या माअ़लूम कि अल्लाह तआ़ला ने तो अह्ले बदर को अ़र्श से देखा और फ़रमाया कि तुम जो चाहो अ़मल करो यक़ीनन मैंने तुम्हें बख़्श दिया है।
(बुख़ारी–सहीह–5/629)
(अबू दाऊद–सुनन–3/149–ह०-2650)
(अबू दाऊद–सुनन–6/537–ह०-4654)
(इब्ने माजा–सुनन–3/397–ह०-4281)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है हज़रत मुआ़ज़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने किसी शख़्स को मुनाफ़िक़ कहा तो रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या तुम फ़सादी हो जो फ़ित्ना अंगेज़ी करते हो।
(बुख़ारी–सहीह–5/630–ह०-6106)
(मुस्लिम–सहीह–2/72–ह०-1041)
(नसाई–सुनन–1/342–ह०-838)

➡ हज़रत इ़त्बान बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है एक दिन रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने एक सहाबी से पूछा कि मालिक बिन दख़्शुन कहाँ हैं तो हमारे क़बीले के एक शख़्स ने जवाब दिया कि वो मुनाफ़िक़ हैं इस–

पर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या तुम ये नहीं जानते कि वो कलमा ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' का इक़रार करते हैं और इससे उनका मक़सद अल्लाह तआ़ला की रिज़ा है तो उस सहाबी ने कहा कि हाँ ये तो है फिर आपने फ़रमाया कि जो बन्दा क़यामत के दिन इस कलमे को लेकर आयेगा तो अल्लाह तआ़ला उस पर दोज़ख़ को हराम कर देगा। (बुख़ारी–सहीह–6/305–ह०-6938) (मुस्लिम–सहीह–2/197–ह०-1497)

गुनाह का ताअ़ना देने वाला खुद उस गुनाह में मुब्तिला होगा

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने अपने किसी मुसलमान भाई के गुनाह पर ऐ़ब लगाया तो वो खुद मरने से पहले उस अ़मल को करेगा यानी वो गुनाह जिससे उस मुसलमान भाई ने तौबा करली हो तो उस गुनाह पर जो ताअ़ना दे तो ताअ़ना देने वाले को मौत न आयेगी जब तक कि वो खुद उस गुनाह में मुब्तिला न हो जाये यानी जिस गुनाह का उसने ताअ़ना दिया था वो गुनाह उसके मरने से पहले उससे ज़रुर सादिर होगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/306–ह०-2505)

–: मुसलमान को हक़ीर जानना :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी की तबाही

के लिये सिर्फ़ इतनी बुराई ही काफ़ी है कि वो अपने मुसलमान भाई को हक़ीर जाने।
(इब्ने माजा–सुनन–3/376–ह०-4213)

–: झगड़ा करने की मज़म्मत :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने अम्रे बातिल पर झगड़ा किया और उसे माअ़लूम हो कि ये ग़लत व बातिल है तो वो जब तक उस झगड़े को नहीं छोड़ेगा तब तक वो अल्लाह तआ़ला के गुस्से और ग़ज़ब में रहेगा और जिसने किसी मुसलमान के बारे में ऐसी बात कही जो उसमें मौजूद न हो तो उसे अल्लाह तआ़ला दोज़ख़ियों की पीप में डालेगा हत्ता कि जो कुछ उसने कहा है उससे तौबा न करले।
(अबू दाऊद–सुनन–3/813–ह०-3597)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे ज़्यादा नापसंद वो शख़्स है कि जो झगड़ालू हो। (बुख़ारी–सहीह–2/686–ह०-2457, 7188)

➡ हज़रत उ़बादा बिन सामित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) लोगों को लैलतुल क़द्र की बिशारत देने के लिये घर से निकले कि उस दौरान में मुसलमानों के दो आदमी किसी बात पर झगड़ने लगे हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम)

ने फ़रमाया कि मैं इसलिये घर से निकला था कि तुम्हें शबे क़द्र की बिशारत दूँ लेकिन फुलाँ फुलाँ झगड़ने लगे इसलिये वो उठा ली गई अब तुम 25, 27, 29, रमज़ान की रातों में तलाश करो।
(बुख़ारी–सहीह–1/107–ह०-49, 2023, 6049)

झगड़ा न करने वाले का जन्नत में घर

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने झगड़ा और तकरार करना छोड़ दिया जो बातिल था तो उसके लिये जन्नत में एक किनारे पर एक घर बनाया जायेगा और जिसने झगड़ा और तकरार करना छोड़ दिया जो हक़ था तो उसके लिये जन्नत के बीच में एक घर बनाया जायेगा व जिसका अख़लाक़ अच्छा हो तो उसके लिये जन्नत में आअ़ला मक़ाम पर एक घर बनाया जायेगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1063–ह०-1993)

किसी मुसलमान पर बोहतान (तुहमत) लगाना बड़ा गुनाह है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जो शख़्स किसी ख़ता या गुनाह का इरतिकाब करे फिर उसकी तुहमत किसी बेगुनाह पर लगादे तो उसने यक़ीनन एक बोहतान और खुले गुनाह (के बोझ) को उठा लिया है। (सूरह–निसा–4/112)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो लोग पाक दामन औ़रतों पर (बदकारी की) तुहमत

लगायें फिर चार गवाह पेश न कर सकें तो तुम उन्हें अस्सी कोढ़े लगाओ और कभी भी उनकी गवाही कुबूल न करो और यही लोग बद किरदार हैं सिवाए उनके जिन्होंने उस (तुहमत लगाने) के बाअ़द तौबा कर ली और (अपनी) इस्लाह करली तो बेशक अल्लाह तआ़ला बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है।
(सूरह–नूर–24/4)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो लोग मोमिन मर्दों व मोमिन ओ़रतों को अज़्ज़ियत देते हैं बग़ैर इसके कि उन्होंने कुछ (ख़ता) की हो तो बेशक उन्होंने बोहतान और खुले गुनाह का बोझ अपने सर ले लिया है। (सूरह–अहज़ाब–33/58)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
हर बोहतान लगाने वाले कज़्ज़ाब और बड़े सियाह कार के लिये हलाकत है। (सूरह–जासिया–45/7)

–: मुसलमानों का बाहमी तअ़ल्लुक़ :–

➡ हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के लिये इमारत की तरह है जिसकी एक ईंट दूसरी ईंट को मज़बूत रखती है।
(मुस्लिम–सहीह–6/209–ह०-6585)

➡ हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान

बन्दों की मिसाल उनकी आपस में मुहब्बत व इत्तेहाद और शफ़्क़त में जिस्म की तरह है कि जब जिस्म के किसी उ़ज़्ब को कोई तकलीफ़ होती है तो उसका सारा जिस्म उसमें शरीक हो जाता है नींद नहीं आती बुखार आ जाता है (इसी तरह एक मुसलमान पर जब कोई आफ़त आये खुसूसन वो आफ़त काफ़िरों की तरफ़ से पहुँचे तो सब मुसलमानों को बेचैन होना चाहिये और उसकी तदबीर करना चाहिये)
(मुस्लिम–सहीह–6/209–ह०-6586)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन मोमिन का आइना है और मोमिन मोमिन का भाई है उसके माल का (नुक़सान हो तो) बचाव करता है और उसकी ग़ैर मौजूदगी में उसकी (इ़ज़्ज़त की) हिफ़ाज़त करता है।
(अबू दाऊद–सुनन–6/707–ह०-4918)

अल्लाह के लिये बाहम मुहब्बत का बेहतर सिला

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जो लोग मेरे लिये और मेरी बुज़ुर्गी के वास्ते आपस में मुहब्बत करते हैं तो मैंने उनके लिये नूर के मिम्बर तैयार किये हैं जिन पर अम्बिया और शुहदा भी रश्क करेंगे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/225–ह०-2390)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/810–ह०-7316, 7318)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ाला फ़रमायेगा कहाँ हैं वो लोग जो मेरी बुजुर्गी और इताअ़त के वास्ते आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करते थे आज के दिन मैं उनको अपने साये में रखूँगा और आज के दिन मेरे साये के सिवा कोई साया न होगा। (मुस्लिम–सहीह–6/200–ह०-6548)
(मुस्नद अहमद–10/335–ह०-22352, 22381)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/809–ह०-7315)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स ईमान की हलावत महसूस करना चाहता है तो अपने मुसलमान भाई से अल्लाह तआ़ाला की रिज़ा की ख़ातिर मुहब्बत करे। (हाकिम–अल मुस्तदरक–5/807–ह०-7312)

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला फ़रमाता है कि मैं उन दो आदमियों से मुहब्बत करता हूँ जो मेरी खुशी के लिये एक दूसरे से मुहब्बत करते हैं और मेरी खुशी के लिये एक दूसरे पर ख़र्च करते हैं। (हाकिम–अल मुस्तदरक–5/808–ह०-7314)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सात आदमी ऐसे हैं जिन्हें रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ाला का साया नसीब

होगा जिस दिन उसके साये के सिवा कोई साया न होगा 1- इन्साफ़ करने वाला हुक्मरान 2- वो नौजवान कि जो इ़बादते खुदावन्दी में पर‘वान चढ़ा 3- वो आदमी जिसका दिल मस्जिद से जाने के बाद वापसी तक उसी में लगा रहे 4- वो दो आदमी जिन्होंने अल्लाह तआ़ला के लिये आपस में मुहब्बत रखी और अल्लाह तआ़ला के लिये उन्होंने मुलाक़ात की और अल्लाह तआ़ला के लिये जुदा हुये 5- वो शख़्स जिसने तन्हाई में अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र किया तो (ख़ौफ़ से या मुहब्बत में) उसकी आँखों से आँसू बह निकले 6- वो शख़्स जिसे किसी हसीना जमीला औ़रत ने बदकारी (ज़िना) के लिये बुलाया तो उसने कहा कि मैं अल्लाह तआ़ला से डरता हूँ 7- वो शख़्स जिसने इस तरह छिपाकर सद्क़ा दिया कि बाँये हाथ को ख़बर न हुई कि दाँये हाथ ने क्या दिया।
(बुख़ारी–सहीह–1/437–ह०-660, 6806)
(मुस्लिम–सहीह–3/58–ह०-2380)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/226–ह०-2391)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें रोज़ा नमाज़ व सद्क़े अफ़ज़ल दरजात के अ़मल न बताऊँ सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया क्यों नहीं या रसूलल्लाह आपने फ़रमाया कि आपस में मेलजोल व तआ़ल्लुक़ को बेहतर बनाना (अबू दाऊद–सुनन–6/708–ह०-4919)

मुसलमानों के दरमियान सुलह कराना

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ाई करें तो

उनके दरमियान सुलह करा दिया करो फिर अगर उनमें से एक (गिरोह) दूसरे पर ज़्यादती और सरकशी करे तो उस (गिरोह) से लड़ो जो ज़्यादती का मुरतकिब हो रहा है हत्ता कि वो (क़यामे अमन के) हुक्मे इलाही की तरफ़ लौट आये फिर अगर वो रुजूअ़ करें तो दोंनों के दरमियान अ़द्ल के साथ सुलह करा दो और इन्साफ़ से काम लो बेशक अल्लाह तअ़ाला इन्साफ़ करने वालों को बहुत पसन्द फ़रमाता है सब अह्ले ईमान आपस में भाई भाई हैं सो तुम अपने दो भाईयों के दरमियान सुलह कराया करो और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम पर रहम किया जाये। (सूरह–हुजुरात–49/9,10)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

जो हुक्म दे ख़ैरात का या नेक काम या लोगों में सुलह कराने का और जो ये काम अल्लाह तअ़ाला की रज़ा जोई के लिये करे तो हम उसे अ़नक़रीब अ़ज़ीम अज्र अ़ता करेंगे (सूरह–निसा–4/114)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स दो लोगों के दरमियान सुलह करा दे ओर उसमें कोई अच्छी बात मन्सूब कर दे या अच्छी बात कह दे तो वो झूटा नहीं है।
(बुख़ारी–सहीह–3/131–ह०-2692)
(मुस्लिम–सहीह–5/75–ह०-6633)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–6/638–ह०-5733)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने दो लोगों में सुलह कराने की ख़ातिर बात बनाकर कही हो तो उसने झूट नहीं बोला। (अबू दाऊद–सुनन–6/708–ह०-4920)

जमाअ़त में तफ़रीक़ डालने वाले को क़त्ल करने का हुक्म

➡ हज़रत अ़रफ़जा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़नक़रीब फ़ित्ने और फ़साद ज़ाहिर होंगे और जो शख़्स इस उम्मत की जमाअ़त के मुआ़मलात में तफ़रीक़ डालने का इरादा करे तो उसे मार डालो वो कोई भी शख़्स हो। (मुस्लिम–सहीह–3/722–ह०-4796)

➡ रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे बाअ़द नई नई बातें होंगी यानी फ़ित्ना व फ़साद का ज़माना आयेगा तो जब तुम देखो कि जिसने जमाअ़त छोड़ दी है यानी मुसलमानों की जमाअ़त से वो शख़्स अ़लैहदा हो गया है तो उसने रसूलुल्लाह की उ़म्मत में फूट डाली और तफ़रक़ा पैदा किया तो ऐसे शख़्स को क़त्ल कर दो क्योंकि अल्लाह तआ़ला का हाथ जमाअ़त पर है यानी जो जमाअ़त व इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ पर क़ायम है तो वो अल्लाह की हिफ़ाज़त में और शैतान उसके साथ है जो जमाअ़त से अ़लैहदा हुआ और वो उसको लात मार कर हाँकता है (नसाई–सुनन–2/134–ह०-4027)

–: मक़बूल दुआ़ऐं :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तीन क़िस्म के लोगों

की दुआऐं बिला शक व शुबाह मक़बूल हैं मज़लूम की दुआ व मुसाफिर की दुआ और बाप की अपनी औलाद के हक़ में दुआ कुबूल होती है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/244–ह०-3862)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/931–ह०-3448)
(अबू दाऊद–सुनन–2/207–ह०-1536)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/98–ह०-24)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/63–ह०-32)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तीन क़िस्म के लोगों की दुआ हरगिज़ रद्द नहीं होती एक रोज़ेदार की जब वो इफ़्तार करता है दूसरे आ़दिल इमाम की दुआ और तीसरे मज़लूम की दुआ, अल्लाह तआ़ला मज़लूम की दुआ को अब्र के ऊपर उठा लेता है और उसके लिये दर'वाज़े खोल दिये जाते हैं और फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मुझे मेरी इज़्ज़त की क़सम कि मैं तेरी मदद करूँगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1006–ह०-3598)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को यमन की तरफ़ भेजा और फ़रमाया कि मज़लूम की बद्दुआ से डर और बच कि उसके और अल्लाह तआ़ला के दरमियान कोई पर्दा नहीं है यानी मज़लूम की दुआ जल्द कुबूल होती है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1072–ह०-2014)
(बुख़ारी–सहीह–2/200–ह०-1496)
(अबू दाऊद–सुनन–2/272–ह०-1599)

मुसलमान भाई के लिये पीठ पीछे दुआ़ करना

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो अपने मुसलमान भाई के लिये पीठ पीछे दुआ़ करे तो फ़रिश्ता कहता है तुझे भी यही कुछ हासिल हो और जब कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई के लिये पीठ पीछे दुआ़ करता है तो जो फ़रिश्ता उसके साथ मुक़र्रर है वो आमीन कहता है। (मुस्लिम–सहीह–5/204–ह०-6927, 6928)
(अबू दाऊद–सुनन–2/206–ह०-1534)
(इब्ने अबी शैबा–6/21–ह०-29158)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/296–ह०-640)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सबसे जल्द कुबूल होने वाली दुआ़ ये है कि कोई शख़्स (इख़लास के साथ) किसी ग़ायब (ग़ैर मौजूद शख़्स) के लिये दुआ़ करे। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1058–ह०-1980)
(अबू दाऊद–सुनन–2/207–ह०-1535)
(इब्ने अबी शैबा–6/21–ह०-29159)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/155–ह०-1490)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–4/43–ह०-4734)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/295–ह०-638)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब कोई शख़्स अपने मुसलमान

भाई के लिये पीठ पीछे दुआ़ करे तो वो कुबूल होती है (मुस्लिम–सहीह–5/205–ह०-6927, 6929)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/296–ह०-639)

मुसलमान को खिलाने पिलाने और कपड़े पहनाने का अज्र

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो मुसलमान किसी बरहना (नंगे) मुसलमान को कपड़ा पहनाये तो अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत का सब्ज़ लिबास पहनायेगा और जो मुसलमान किसी मुसलमान को भूक की हालत में खाना खिलाये तो अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत के फल और मेवे खिलायेगा जो मुसलमान किसी मुसलमान को प्यास की हालत में पानी पिलाये तो अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत की शराब यानी शराबे तहूर पिलायेगा।
(अबू दाऊद–सुनन–2/333–ह०-1682)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/267–ह०-2449)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत लोग (अह्ले जन्नत) सफ़ों में क़ायम होंगे कि एक दोज़ख़ी एक मर्द के पास से गुज़रेगा तो कहेगा कि ऐ फुलां आप को वो दिन याद नहीं जब आपने मुझसे पानी मांगा था तो मैंने आप को पानी पिलाया था चुनांचा वो जन्नती उस दोज़ख़ी की सिफ़ारिश करेगा एक और मर्द गुज़रेगा तो कहेगा कि ऐ फुलां आपको वो दिन याद नहीं जब मैंने आपको तहारत के लिये पानी दिया था चुनांचा वो

जन्नती उस दोज़ख़ी की सिफ़ारिश करेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–3/185–ह०-3685)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से दरयाफ़्त किया कि इस्लाम में कौन सा अ़मल सबसे बेहतर है तो आप ने फ़रमाया कि तू खाना खिलाये और सलाम करे जान पहचान वाले को और अन्जान को।
(इब्ने माजा–सुनन–3/61–ह०-3253)

मुसलमान खाना खिलाये तो खाले तहक़ीक़ न करे

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब तुम अपने किसी मुसलमान भाई के यहाँ खाना खाने जाओ तो तुम उस के यहाँ खाना खालो और उससे तफ़्सील न पूछो (कि खाना हलाल कमाई से बनाया गया या हराम कमाई से बनाया गया) वो जो मशरुब पेश करे उसे पीलो और उससे कोई तहक़ीक़ न करो।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/732–ह०-7160)

–: गुलाम को मारने की मुमानियत :–

➡ हज़रत अबू मसऊ़द अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैं एक मर्तबा अपने गुलाम को मार रहा था तो मैंने अपने पीछे से आवाज़ सुनी कि ऐ अबू मसऊ़द ख़्याल करो कि अल्लाह तआ़ला को

तुम पर इससे ज़्यादा कुदरत है कि जितनी तुम इस पर रखते हो मैंने मुड़कर देखा तो नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम थे मैंने फौरन कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल ये गुलाम अल्लाह तआ़ाला के लिये आज़ाद हुआ फिर आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम ऐसा न करते तो आग तुम्हें अपनी लपेट में ले लेती।
(अबू दाऊद–सुनन–6/849–ह०-5159)

–: चेहरे पर मारने की मुमानियत :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब तुममें से कोई किसी को मारे तो चेहरे पर न मारे।
(अबू दाऊद–सुनन–5/424–ह०-4491)

लोगों को अपने शर से बचाकर रखना सद्क़ा है

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हर मुसलमान पर ज़रुरी है कि वो सद्क़ा करे सहाबा किराम ने अ़र्ज़ की अगर वो सद्क़ा करने के लिये कोई चीज़ न पाये तो आपने फ़रमाया तो वो अपने हाथ से काम करे उस से खुद भी फ़ायदा उठाये और सद्क़ा भी करे सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया अगर उसकी ताक़त न हो या न कर सके तो आपने फ़रमाया वो परेशान हाल ज़रुरत मन्द की मदद करे सहाबा किराम ने अ़र्ज़ की अगर ये

भी न कर सके तो आपने फ़रमाया तो वो भलाई की तरफ़ लोगों को राग़िब करे या अच्छे कामों की तल्क़ीन करे सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया अगर ये भी न कर सके तो आपने फ़रमाया फिर लोगों को अपने शर से बचाकर रखे ये भी उसके लिये सद्क़ा है।
(बुख़ारी–सहीह–5/593–ह०-6022)

मुसलमान भाई के सामने मुस्कुराना भी सद्क़ा है

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम्हारा अपने मुसलमान भाई के सामने मुस्कुराना भी सद्क़ा है और नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना भी सद्क़ा है, किसी भटके हुये को रास्ता दिखाना भी सद्क़ा है और तेरा किसी अन्धे को रास्ता दिखाना भी तेरे लिये सद्क़ा है और तेरा रास्ते से पत्थर, कांटा हड्डी (वग़ैराह तकलीफ़ देह चीज़) का हटाना भी तेरे लिये सद्क़ा है व अपने डोल से किसी मुसलमान भाई की बाल्टी में पानी डालना भी तेरे लिये सद्क़ा है। (मुस्लिम–सहीह–2/63–ह०-1671)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1048–ह०-1956)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–6/308–ह०-8342)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/595–ह०-474)

दूसरे के माल को अपना कहने वाला मुसलमान नहीं

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस शख़्स ने उस चीज़ का दाअ़वा किया जो उसकी नहीं है तो वो हम में से नहीं है। (मुस्लिम–सहीह–1/167–ह०-217)

हर मुसलमान के पीछे नमाज़ पढ़ो ख़्वाह नेक हो या बद

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम पर हर मुसलमान के पीछे नमाज़ पढ़ना वाजिब है ख़्वाह वो नेक हो या बद अगरचा कबायर का मुरतकिब ही क्यों न हो और तुम पर वाजिब है कि हर मुसलमान की नमाज़ जनाज़ा पढ़ो ख़्वाह वो नेक हो या बद हो अगरचा कबायर का मुरतकिब हो। (अबू दाऊद–सुनन–3/80–ह०-2533)

अमानतें अदा करना, ख़्यानत न करना

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो तुझे अमीन बनाये तो तू उसकी अमानत उसे अदा करदे और जो तेरी ख़्यानत करे तू उसकी ख़्यानत न कर।
(अबू दाऊद–सुनन–4/775–ह०-3535)

मुसलमान का हक़ नाजाइज़ तौर पर लेने पर दोज़ख़ वाजिब

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला–

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को फ़रमाते हुये सुना कि जो शख़्स किसी मुसलमान का हक़ नाजाइज़ तौर पर क़सम खाकर हासिल करे तो अल्लाह तआ़ला उस पर जन्नत को हराम फ़रमां देता है और दोज़ख़ उसके लिये वाजिब फ़रमां देता है अ़र्ज़ किया गया वो ज़रा सी चीज़ हो तो आपने फ़रमाया अगरचा वो पीलू की एक मिस्वाक हो (पीलू एक दरख़्त है जिसकी जड़ और शाख़ों की मिस्वाक बनाते हैं) (इब्ने माजा–सुनन–2/185–ह०-2324)

लोगों को नफ़अ़ व खुशी पहुँचाने वाले अ़मल अल्लाह को पसन्द हैं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह अल्लाह तआ़ला को कौन सा शख़्स ज़्यादा पसन्द है और कौन से आअ़माल ज़्यादा पसन्द हैं पस आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला को वो लोग ज़्यादा पसन्द हैं जो लोगों को ज़्यादा नफ़अ़ देने वाले हैं और अल्लाह तआ़ला को वो आअ़माल सबसे ज़्यादा पसन्द हैं जो लोगों को खुशी पहुँचायें और उनकी तकलीफ़ दूर करें या उसका क़र्ज़ अदा करें या भूके को खाना खिलायें या उनकी ज़रुरत पूरी करने के लिये चलें और उनके ये अ़मल मेरी इस मस्जिद में एक माह इअ़्तिकाफ़ करने से ज़्यादा पसंदीदा हैं और जिसने अपने गुस्से को काबू किया तो अल्लाह तआ़ला उसके गुनाहों व उसकी बुराइयों पर पर्दा डाल देगा और जिसने गुस्सा पी लिया अगर वो चाहता तो गुस्सा पूरा कर सकता था तो अल्लाह तआ़ला उसके दिल को क़यामत के दिन अमन से भर देगा और जो

अपने मुसलमान भाई के साथ उसकी ज़रुरत पूरी करने के लिये चला और उसकी ज़रुरत पूरी कर दी तो रब तआ़ला उसके क़दम को पुलसिरात पर साबित क़दम रखेगा जिस दिन क़दम मुताज़लज़िल होंगे।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–12/553–ह०-13646)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/546–ह०-6026)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–3/265, 266–ह०-3985)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों की मदद करो और उन्हें कोई तकलीफ़ न दो और उन्हें बुराई से बचाओ क्योंकि ये तेरा अपनी ज़ात पर सद्क़ा होगा
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/171–ह०-308)

➡ हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स ने किसी को माल क़र्ज़ के तौर पर दिया या किसी को राह बताई तो उसे एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलेगा। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1049–ह०-1957)

किसी को उठाकर खुद उसकी जगह बैठने की मुमानियत

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई शख़्स अपने दूसरे भाई को उठाकर उसकी जगह न बैठे। (बुख़ारी–सहीह–1/559–ह०-911)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/482–ह०-2750)

मुसलमान से बद अ़हदी पर लाअ़नत

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस शख़्स ने किसी मुसलमान से बद अ़हदी (बेवफ़ाई, वाअ़दा ख़िलाफ़ी, दग़ाबाज़ी) की तो उस पर अल्लाह तआ़ाला की और उसके फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की लाअ़नत होगी और उसकी कोई फ़र्ज़ व निफ़िल इ़बादत कुबूल न होगी।
(बुख़ारी–सहीह–3/433–ह०-3179)

धोका देने वाले का रसूलुल्लाह से कोई तआ़ाल्लुक़ नहीं

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) गल्ले के एक ढेर के पास से गुज़रे आपने उस ढेर में अपना हाथ मुबारक डाला तो उंगलियों पर तरी आ गई आपने गल्ले के मालिक से पूछा ये क्या है उसने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ये बारिश की वजह से भीग गया है आपने फ़रमाया कि क्या तुम ये तर हिस्सा ऊपर नहीं कर सकते थे कि लोग इसको देख लेते नीज़ फ़रमाया कि जिसने धोका दिया उसका मुझसे कोई तआ़ाल्लुक़ नहीं। (मुस्लिम–सहीह–01/199–ह०-284)

–: दो मुँह वाले की मज़म्मत :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया लोगों में सबसे बुरा वो शख़्स है जो दो मुँह रखता है जो कुछ लोगों के पास एक मुँह लेकर जाता है और दूसरे लोगों के पास दूसरा मुँह लेकर जाता है यानी इसके मुँह पर इस जैसी और उसके मुँह पर उस जैसी बात करता है।
(मुस्लिम–सहीह–6/219–ह०-6630)
(अबू दाऊद–सुनन–6/680–ह०-4872)

मुसलमान भाई से कीना रखने के सबब मग़फ़िरत से महरुम

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जन्नत के दरवाज़े पीर और जुमेरात के दिन खोले जाते हैं फिर एक बन्दे की मग़फ़िरत होती है जो अल्लाह तआ़ला के साथ शिर्क नहीं करता मगर वो शख़्स जो अपने मुसलमान भाई से कीना रखता है उसकी मग़फ़िरत नहीं होती और हुक्म होता है कि इन दोंनों को देखते रहो और जब ये दोंनों मिल जायें तो इनकी मग़फ़िरत करदो।
(मुस्लिम–सहीह–6/199–ह०-6544)
(अबू दाऊद–सुनन–6/706–ह०-4916)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर हफ़्ते में पीर व जुमेरात के दिन लोगों के आअ़माल पेश किये जाते हैं तो हर मोमिन बन्दे की मग़फ़िरत कर दी जाती है सिवाए उस बन्दे के जो अपने मोमिन भाई के दरमियान कीना रखता हो कहा जाता है कि इनको छोड़ दो और

इन्हें मुहलत दो हत्ता कि ये दोंनों रुजअ़ कर लें यानी दोंनों कीना ख़त्म करके बाहम फिर से मिल जायें। (मुस्लिम–सहीह–6/199–ह०-6547)

मुसलमान की नाहक़ बेइ़ज़्ज़ती करना गुनाहे कबीरा है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक कबीरा गुनाहों में से एक कबीरा गुनाह ये भी है कि कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई की नाहक़ बेइ़ज़्ज़ती और तौहीन करे और कबीरा गुनाहों में से ये भी है कि कोई एक गाली के बदले दो गालियाँ दे।
(अबू दाऊद–सुनन–6/683–ह०-4877)

➡ हज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सबसे बड़ा सूद (सबसे बड़ी ज़्यादती) ये है कि इन्सान नाहक़ किसी की इ़ज़्ज़त से खेले। (अबू दाऊद–सुनन–6/682–ह०-4876)

–: वाअ़दा करें तो पूरा करें :–

इरशादे बारी तआ़ला है:–
और जब कोई वाअ़दा करें तो पूरा करें।
(सूरह–बक़राह–2/177)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अपने मुसलमान भाई से झगड़ा न करो और उससे मिज़ाह (मज़ाक) न करो और न ही उससे ऐसा वाअ़दा करो कि वाअ़दा ख़िलाफ़ी हो जाये। (अदब अल मुफ़रद–1/204–ह०-399)

उज्र की वजह से वाअ़दा ख़िलाफ़ी पर कोई गुनाह नहीं

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई से किसी चीज़ का वाअ़दा करले और उसकी नीयत ये हो कि वो अपना वाअ़दा पूरा करेगा मगर किसी उज्र के सबब से वो वाअ़दा पूरा न कर सके तो उस पर कोई गुनाह नहीं।
(अबू दाऊद–सुनन–6/751–ह०-4995)

रसूलुल्लाह ने वाअ़दे पर तीन दिन इन्तिज़ार किया

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबू हम्सा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान करते हैं कि मैंने नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम से एक सौदा किया और कुछ क़ीमत बाक़ी रह गई तो मैंने रसूलुल्लाह से वाअ़दा कि मैं यहीं आपके पास ले आता हूँ मगर मुझे अपनी ये बात तीन दिन के बाअ़द याद आयी फिर मैं आया तो रसूलुल्लाह वहीं थे फिर आपने फ़रमाया कि ऐ जवान तूने मुझे बहुत अज़्ज़ियत पहुँचाई है मैं यहाँ तीन दिन से इन्तिज़ार कर रहा हूँ।
(अबू दाऊद–सुनन–6/751–ह०-4996)

-: अमानतें अदा करना :-

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
ऐ ईमान वालो तुम अल्लाह व रसूल से (उनके हुकूक़ की अदायगी में) ख़्यानत न किया करो और न आपस में अमानतों में ख़्यानत किया करो (सू०-अनफ़ाल-8/27)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
उसे चाहिये कि अपनी अमानत अदा कर दे और वो अल्लाह से डरता रहे जो उसका पालने वाला है।
(सूरह-बक़राह-2/283)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
बेशक अल्लाह तअ़ाला किसी ख़ाइन (और) नाशुक्रे को पसन्द नहीं करता। (सूरह-हज-22/38)

अल्लाह का बन्दों पर और बन्दों का अल्लाह पर हक़

➡ हज़रत मुअ़ाज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला का बन्दों पर हक़ ये है कि बन्दे सिर्फ़ उसी की इ़बादत करें और उसके साथ किसी को शरीक न ठहरायें और जब बन्दे ये कर लें तो अल्लाह तअ़ाला पर बन्दों का हक़ ये है कि वो उन्हें अ़ज़ाब न दे।
(बुख़ारी-सहीह-5/712-ह०-6267)
(मुस्लिम-सहीह-1/125-ह०-143)
(मुस्नद अहमद-10/331-ह०-22341)

दूसरों के बारे में कही हुई बातें दोज़ख़ में गिरायेंगी

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दूसरों के मुताअ़ल्लिक़ कही हुई बातें मुँह के बल औंधा करके दोज़ख़ में गिरायेंगी। (मुस्नद अहमद–10/355–ह०-22413)

–: फ़ासिक़ की ख़बर की तहक़ीक़ :–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो अगर तुम्हारे पास कोई फ़ासिक़ (शख़्स) ख़बर लाये तो खूब तहक़ीक़ कर लिया करो (ऐसा न हो) कि तुम किसी क़ौम को लाइल्मी में तकलीफ़ पहुँचा बैठो फिर तुम अपने किये पर पछताते रह जाओ। (सूरह–हुजुरात–49/06)

–: ताअ़रीफ़ करने की मुमानियत :–

➡ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला वसल्लम) के सामने एक शख़्स ने दूसरे शख़्स की ताअ़रीफ़ की तो आप ने फ़रमाया तूने अपने भाई की कई बार गर्दन काटी है फिर आपने फ़रमाया जब तुममें से कोई किसी की ताअ़रीफ़ करना चाहे तो यूँ कहे कि मैं फुलां को ऐसा समझता हूँ और असलियत को जानने वाला तो अल्लाह है और मैं दिलों का हाल नहीं जानता कि वो ऐसा है और अगर वो वाक़ई उस

की खूबी को जानता है तो कहे कि वो इस इस तरह की खूबी रखता है और मैं अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म के मुक़ाबले में किसी की खूबी बयान नहीं कर रहा हूँ।
(मुस्लिम–सहीह–5/509–ह०-7501)
(अबू दाऊद–सुनन–6/647–ह०-4805)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/180–ह०-336)

➡ हज़रत अबू मूसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने एक शख़्स को सुना वो किसी आदमी की ताअ़रीफ़ कर रहा था और ताअ़रीफ़ में बहुत बढ़ा चढ़ा रहा था तो आपने फ़रमाया कि तुमने उसको हलाक कर डाला और उसकी कमर तोड़ दी।
(मुस्लिम–सहीह–5/510–ह०-7504)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/180–ह०-337)

➡ हज़रत अबू माअ़मर से रिवायत है कि एक आदमी खड़ा हुआ और वो अमीरों में से एक अमीर शख़्स की ताअ़रीफ़ करने लगा तो हज़रत मिक़दाद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) उस पर मिट्टी डालने लगे और कहा कि हमें हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हुक्म फ़रमाया है कि ताअ़रीफ़ करने वालों के मुँह पर मिट्टी डालो।
(मुस्लिम–सहीह–5/510–ह०-7505)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/227–ह०-2393)
(अबू दाऊद–सुनन–6/646–ह०-4804)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/182–ह०-342)

➡ हज़रत इब्राहीम तयामी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) अपने वालिद से रिवायत करते हैं एक दिन हम हज़रत

उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास बैठे थे कि उनके सामने एक आदमी ने सामने बैठे दूसरे आदमी की ताअ़रीफ़ शुरु कर दी और बहुत बढ़ाया चढ़ाया तो इस पर हज़रत उ़मर ने फ़रमाया कि तूने उसकी कौंचें काट दी अल्लाह तआ़ला तुम्हारी कौंचे काटेगा।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/180–ह०-338)

➡ हज़रत ज़ैद बिन असलम रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से सुना बेफ़ायदा ताअ़रीफ़ ऐसी होती है जैसे किसी को ज़िब्हा कर दिया जाये।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/180–ह०-339)

–: मोमिन धोका खाने वाला होता है :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन धोका खाने वाला और सादा तबीअ़त वाला होता है और फ़ासिक़ व फ़ाजिर इन्सान दग़ाबाज़ और कमीना होता है।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/213–ह०-423)

–: लोगों के दरमियान नफ्रत न डालो :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आसानियाँ पैदा करो मुश्किलात में न डालो और सुकून से रहो और नफ़रत न डालो।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/231–ह०-480)

-: मय्यत के लिये दुआ़ करना :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब तुम किसी मय्यत का जनाज़ा पढ़ो तो उसके लिये इख़लास के साथ दुआ़ किया करो। (इब्ने माजा-सुनन-1/507-ह०-1497)
(अबू दाऊद-सुनन-3/562-ह०-3199)
(इब्ने हिब्बान-सहीह-4/188-ह०-3076)

-: मय्यत को गुस्ल देने का सवाब :-

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स मय्यत को गुस्ल दे और उसकी ऐ़ब पोशी भी करे तो उसकी चालीस मर्तबा मग़फ़िरत कर दी जाती है और जो किसी मय्यत को कफ़न पहनाये अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत का रेशमी लिबास पहनायेगा और जो किसी मय्यत के लिये क़ब्र खोदे और उसको दफ़नाये तो अल्लाह तआ़ला उसको क़यामत तक उस शख़्स के बराबर सवाब देगा कि जिसने मकान बनाकर किसी ज़रुरत मन्द को उसमें ठहराया हो। (हाकिम-अल मुस्तदरक-1/712-ह०-1307)
(बैहक़ी-शुअ़बुल ईमान-7/24-ह०-9265)

-: पाँच बातों पर अ़मल करना :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कौन शख़्स मुझसे पाँच बातें सुनकर याद रखता है और उन पर अ़मल करता है पस मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल वो पाँच बातें बयान फ़रमांयें मैं याद रखूँगा और उन पर अ़मल करूँगा और दूसरों तक पहुँचाऊँगा आपने फ़रमाया कि हराम चीज़ों से बच तू सब लोंगों से ज़्यादा आ़बिद हो जायेगा और अल्लाह तआ़ला की तक़सीम पर राज़ी रह तू सबसे ज़्यादा बेपरवाह हो जायेगा और अपने पड़ोसी पर एहसान कर तू मोमिन हो जायेगा व लोगों के लिये वो ही चीज़ पसन्द कर जो तू अपने लिये पसन्द करता है तो तू मुसलमान हो जायेगा और बहुत ज़्यादा न हंस इसलिये कि बहुत हंसना दिल को मार डालता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/177–ह०-2305)

–: पाँच बातों से इजतिनाब करना :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हमारी तरफ़ मुतावज्जे हुये और फ़रमाया ऐ मुहाजिरीन की जमाअ़त मैं अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगता हूँ उन पाँच चीज़ों से जिनमें तुम जब मुब्तिला हो अव्वल ये जिस क़ौम में बे हयाई ऐलानियाँ होने लगे तो उसमें ताऊन और ऐसी ऐसी बीमारियाँ आ़म हो जाती हैं जो पहले कभी ज़ाहिर न हुईं थीं दूसरी बात ये कि जब लोग नाप तौल में कमी करने लग जाते हैं तो वो क़ह्त और मसाइबो आलाम और बादशाहों (हुक्मरानों) के जुल्मो सितम में मुब्तिला कर दी जाती है तीसरी बात ये कि जब लोग ज़कात की अदायगी छोड़ देते हैं तो बारिश रोक दी जाती है अगर चौपाये न हों तो बारिश कभी न बरसे चौथी बात

ये कि जब लोग अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल के अ़ह्द को तोड़ देते हैं तो अल्लाह तआ़ला ग़ैरों में से दुश्मनों को उन पर मुसल्लत कर देता है जो उस क़ौम से अ़दावत रखते हैं फ़िर वो उनका माल वग़ैराह छीन लेते हैं पाँचवीं बात ये है कि जब मुसलमान हुक्मरान अल्लाह तआ़ला के कानून के मुताबिक़ फ़ैसले नहीं करते बल्कि अल्लाह तआ़ला के निज़ाम में वो अपनी मर्ज़ी के अहकाम इख़्तियार करते हैं तो अल्लाह तआ़ला उनके दरमियान इख़्तिलाफ़ पैदा फ़रमां देता है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/305–ह०-4019)

रसूलुल्लाह ने सात बातों का हुक्म दिया

➡ हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने सात बातों का हुक्म फ़रमाया– 1-जनाज़ों के पीछे चलना 2- बीमारों की अ़यादत करना 3- छींक का जवाब देना यानी जिस वक्त कोई छींकने वाला अल्हम्दु लिल्लाह कहे तो उस वक़्त यरहमूकल्लाह कहे 4-जब कोई शख़्स दाअ़वत करे तो उसकी दाअ़वत को कुबूल करना 5- जिस पर जुल्म हुआ हो या जुल्म हो रहा हो तो हत्तल इमकान उसकी मदद करना 6- और क़समों को सच्चा करना यानी सच्ची क़सम खाना और क़समों को पूरा करना 7- सलाम का जवाब देना।
(नसाई–सुनन–3/57–ह०-3812)

–: जिस्म और आँख का हक़ :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मुझसे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ब्दुल्लाह मुझे ख़बर पहुँची है कि तुम हमेशा दिन को रोज़ा रखते हो और सारी रात जागते हो सो ऐसा न किया करो इसलिये कि तुम्हारे जिस्म का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारी आँख का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक़ है सो तुम रोज़ा रखो और इफ़्तार भी करो और रोज़ा रखो हर माह में तीन दिन सो यही हमेशा का रोज़ा है यानी सवाब की रु से क्योंकि हर नेकी का सवाब दस गुना मिलता है फिर मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझे इससे ज़्यादा कुव्वत है तो आपने फ़रमाया तो तुम दाऊद (अ़लैहिस्सलाम) की तरह रोज़ा रखा करो और वो एक दिन रोज़ा रखते थे और एक दिन इफ़्तार करते थे यानी एक दिन छोड़ कर रोज़ा रखते थे यानी महीने में पन्द्रह रोज़े।
(मुस्लिम–सहीह–3/163–ह०-2743)
(अबू दाऊद–सुनन–2/841–ह०-2427)
(नसाई–सुनन–2/106–ह०-2401)

–: रास्ते का हक़ :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर रास्ते पर बैठो तो उसके हक़ का ख़्याल रखो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह रास्ते का हक़ क्या है तो आपने फ़रमाया कि नज़र नीची रखना और तकलीफ़ देने वाली हर चीज़ हटा देना और सलाम का जवाब देना और भली बात कहना और बुराई से रोकना।
(अबू दाऊद–सुनन–4/652–ह०-4815)

-: ग़ैर मुस्लिमों के हुकूक़ :-

ग़ैर मुस्लिमों से हुस्ने सुलूक और उनके साथ भलाई करना

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
अल्लाह तआ़ला तुम्हें इस बात से मनाअ़ नहीं फ़रमाता कि जिन लोगों ने तुमसे दीन (के बारे) में जंग नहीं की और न तुम्हें तुम्हारे घरों से यानी वतन से निकाला है कि तुम उनसे भलाई का सुलूक करो और उनसे अ़द्ल और इन्साफ़ का बरताव करो बेशक अल्लाह तआ़ला अ़द्ल व इन्साफ़ करने वालों को पसन्द फ़रमाता है।
(सूरह-मुम्तहिना-60/08)

➡ हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाती हैं कि मेरी मुशरिका वालिदा मुझसे कुछ लेने की ख़ातिर मेरे पास आयीं तो मैंने इस बारे में हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से दरयाफ़्त किया कि मैं उनकी ज़रुरत पूरी कर सकती हूँ तो आपने फ़रमाया कि कोई हर्ज नहीं हज़रत इब्ने उ़यैना रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि ये आयत उन्हीं के हक़ में नाज़िल हुई ‘‘ अल्लाह तआ़ला तुम्हें उन लोगों से हुस्ने सुलूक करने से मनाअ़ नहीं करता जो तुमसे दीन की वजह से लड़ाई झगड़ा नहीं करते’’। (सूरह-मुम्तहिना-60/8)
(बुख़ारी-सहीह-5/576-ह०-5978)
(इमाम बुख़ारी-अल अदब अल मुफ़रद-1/61-ह०-)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा)

फरमाते हैं कि सहाबा किराम को अपने ग़ैर मुस्लिम रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक नागवार गुज़रता था तब ये आयत नाज़िल हुई ''उनका हिदायत याफ़्ता हो जाना आपके ज़िम्मे नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला जिसे चाहता है उसे हिदायत से नवाज़ता है और तुम जो भी माल ख़र्च करो सो वो तुम्हारे अपने फ़ायदे के लिये है और अल्लाह तआ़ला की रज़ा जोई के सिवा तुम्हारा माल ख़र्च करना मुनासिब ही नहीं और जो माल तुम ख़र्च करोगे (उसका अज्र) तुम्हें पूरा पूरा दिया जायेगा और तुम पर कोई भी जुल्म नहीं किया जायेगा'' चुनांचा इस आयत की वजह से उनको (यानी अपने ग़ैर मुस्लिम रिश्तेदारों के साथ) हुस्ने सुलूक की रुख़सत दी गई। (हाकिम–अल मुस्तदरक–5/784–ह०-7264)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) बयान करते हैं कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने एक धारीदार रेशम मिला हुआ लिबास देखा तो अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह इसे खरीद लीजिये जुमआ़ के दिन आप पहना कीजिये आपने फ़रमाया इसे वही पहना करता है जिसका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होता फिर उन लिबासों में से कुछ लिबास आपके पास आये तो उनमें से एक लिबास आपने हज़रत उ़मर को भेज दिया तो हज़रत उ़मर ने आपसे अ़र्ज़ किया कि आपने तो मनाअ़ फ़रमां दिया था मैं इसे कैसे पहन लूँ आपने फ़रमाया कि मैंने इसे तुम्हें पहनने के लिये नहीं दिया बल्कि मैंने तुम्हें इसलिये दिया है कि तू इसे बेच ले या किसी हक़दार को देदे चुनांचा हज़रत उ़मर ने वो लिबास अपने भाई को भेज दिया जो कि अभी इस्लाम नहीं लाये थे। (बुख़ारी–सहीह–5/577–ह०-5981)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/61–ह०-26)

ग़ैर मुस्लिम का क़ातिल जन्नत की खुश्बू भी न सूंघ पायेगा

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने किसी मुआ़हिद (जिन ग़ैर मुस्लिमों के साथ इस्लामी हुकूमत का मुआ़हिदा हो) को बग़ैर किसी जुर्म के क़त्ल किया तो वो जन्नत की खुश्बू भी नहीं सूँघेगा हालांकि जन्नत की खुश्बू 40 चालीस बरस की मुसाफ़त तक महसूस होती है।
(बुख़ारी–सहीह–3/424–ह०-3166)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी ज़िम्मी को क़त्ल करेगा वो जन्नत की खुश्बू भी नहीं सूँघेगा हालांकि जन्नत की खुश्बू 40 चालीस बरस की मुसाफ़त तक महसूस होती है।
(बुख़ारी–सहीह–3/424–ह०-3166, 6914)
(इब्ने माजा–सुनन–2/318–ह०-2686, 2687)
(नसाई–सुनन–6/609–ह०-4754)

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी ज़िम्मी को नाहक़ क़त्ल करे तो अल्लाह तआ़ला उस पर जन्नत को हराम फ़रमां देता है।
(नसाई–सुनन–6/607–ह०-4751)
(अबू दाऊद–सुनन–3/231–ह०-2760)

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी ज़िम्मी को ना हक़ क़त्ल करे तो अल्लाह तआ़ला ने जन्नत तो एक तरफ़ जन्नत की खुश्बू भी सूँघना तक हराम कर दिया है। (नसाई–सुनन–6/608–ह०-4752)
यानी ग़ैर मुस्लिम जो हुकूमते इस्लामिया में रहता हो व टैक्स वग़ैराह देता हो उसे ज़िम्मी व मुआ़हिद कहते हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
अ़ाम लोगों से (हुस्ने सुलूक व नरमी और खुश खुल्क़ी के साथ) नेकी की बात कहना। (सूरह–बक़राह–2/83)

–ः मुश्रिका माँ से हुस्ने सुलूक ः–

➡ हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरी माँ आयीं हैं और वो मुश्रिका हैं क्या मैं उनके साथ हुस्ने सुलूक करुँ आपने फ़रमाया अपनी माँ से हुस्ने सुलूक व सिला रहमी करो। (मुस्लिम–सहीह–3/40–ह०-2325)
(बुख़ारी–सहीह–5/576–ह०-5979)
(अबू दाऊद–सुनन–2/323–ह०-1668)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान फ़रमाते हैं कि मेरी बात जिसने भी सुनी वो मेरा दोस्त बन गया ख़्वाह वो यहूदी हो या नसरानी हो और मैं अपनी माँ के इस्लाम लाने का इरादा रखता था लेकिन वो इन्कार कर देती थीं मैंने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ की मेरी वालिदा के लिये दुआ़ फ़रमांदें कि वो इस्लाम ले आयें

फिर आपने दुआ फ़रमाई फिर मैं अपनी वालिदा की ख़िदमत में पहुँचा तो मेरी वालिदा ने कहा ऐ अबू हुरैरा मैं इस्लाम ले आयी हूँ।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/66–ह०-34)

–: ग़ैर मुस्लिम पड़ोसी को अ़तिया देना :–

➡ हज़रत मुजाहिद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) कहते हैं कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा का गुलाम बकरी की खाल उतार रहा था तो उन्होंने गुलाम से कहा कि जब तुम फ़ारिग़ हो जाओ तो हमारे यहूदी पड़ोसी से तक़सीम करना शुरु करना तो क़ौम का एक आदमी बोला यहूदी पहले? अल्लाह आपका भला करे हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने कहा कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को सुना कि आप पड़ोसी के बारे में हिदायात दे रहे थे हमने ख़्याल किया कि आप उसे वारिस क़रार दे देंगे।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/104–ह०-128)

–: यहूदी के जनाज़े के लिये खड़ा होना :–

➡ हज़रत मुहम्मद सीरीन फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम हसन बिन मौला अ़ली (अ़लैहिमस्सलाम) और हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) बैठे हुये थे कि एक यहूदी का जनाज़ा गुज़रा तो हज़रत इमाम हसन खड़े हो गये मगर हज़रत इब्ने अ़ब्बास बैठे रहे हज़रत इमाम हसन ने कहा क्या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) किसी यहूदी या यहूदिया के जनाज़े के लिये खड़े नहीं हुये हैं तो हज़रत इब्ने–

अ़ब्बास ने कहा क्यों नहीं फिर हज़रत इमाम हसन बैठ गये। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/376–ह०-2678)

–: इन्सान को आग में न जलाना :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने एक फौजी दस्ते को र'वाना किया और फ़रमाया कि अगर तुम फुलां फुलां आदमी को पाओ तो उसे क़त्ल कर देना लेकिन उसे आग में न जलाना क्योंकि आग के साथ सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला ही अ़ज़ाब देता है। (बुख़ारी–सहीह–3/327–ह०-3016)

दौराने जंग औ़रतों और बच्चों को न मारने का हुक्म

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है रसूले अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने दौराने जंग औ़रतों और बच्चों को क़त्ल करने से मनाअ़ फ़रमाया।
(बुख़ारी–सहीह–3/326–ह०-3014)

हूज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) तमाम इन्सानों ख़्वाह वो मुस्लिम हों या ग़ैर मुस्लिम हों और तमाम जिन्नों और तमाम जानवरों के लिये रहमत बनाकर भेजे गये हैं।

इरशादे बारी तअ़ाला है:–
ऐ रसूल हमने आप को तमाम जहानों के लिये रहमत बनाकर भेजा है। (सूरह–अम्बिया–21/107)

जानवरों और परिन्दों के हुकूक़

–: जानवरों से अच्छा सुलूक :–

➡ हज़रत शद्दाद बिन औस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हर चीज़ के साथ नेकी व एहसान करने का हुक्म दिया है सो जब तुम किसी शैः का शिकार करो तो अच्छे तरीक़े से शिकार करो और जब ज़िब्हा करो अहसन तरीक़े से ज़िब्हा करो और तुममें से हर शख़्स को चाहिये कि छुरी तेज़ करले और अपने ज़बीहा को राहत दे। (मुस्लिम–सहीह–4/62–ह०-5055)
(इब्ने माजा–सुनन–3/32–ह०-3170)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/781–ह०-1409)
(अबू दाऊद–सुनन–3/274–ह०-2814)
(नसाई–सुनन–3/237–ह०-2411, 2418)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि कुछ लोग एक मुर्गी को बाँधकर उस पर तीर से निशाना लगा रहे थे और वो तीरंदाज़ी की मश्क़ कर रहे थे तो मैंने कहा हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) इस बात से मनाअ़ फ़रमाया है कि जानवर को बाँधकर मारा जाये यानी बाँधकर निशाना बनाना व उनका क़त्ल करना मनाअ़ है। (बुख़ारी–सहीह–5/365–ह०-5513)
(मुस्लिम–सहीह–4/63–ह०-5057)
(अबू दाऊद–सुनन–3/275–ह०-2815)
(नसाई–सुनन–3/246–ह०-4445)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने लाअ़नत फ़रमाई है उस शख़्स पर जो जानदार को बाँधकर उस पर तीर वग़ैराह से निशाना लगाये। (बुख़ारी–सहीह–05/365–ह०-5515)
(मुस्लिम–सहीह–04/64–ह०-5061)
(नसाई–सुनन–03/247–ह०-4447)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने छुरियाँ तेज़ करने और दूसरे जानवर से छिपाकर ज़िब्हा करने का हुक्म दिया है और फ़रमाया कि जब तुममें से कोई ज़िब्हा करे तो जल्दी से ज़िब्हा कर डाले।
(इब्ने माजा–सुनन–3/33–ह०-3172)
(मुस्नद अहमद–3/343–ह०-5864)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/422–ह०-11074)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जानवरों को बाहम लड़ाने से मनाअ़ फ़रमाया है। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/932–ह०-1708)
(अबू दाऊद–सुनन–3/98–ह०-2562)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/744–ह०-2509)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/220–ह०-6539)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम एक शख़्स के पास से गुज़रे जो बकरी का दूध दूह रहा था आपने उससे फ़रमाया कि ऐ फुलां

जब तुम दूध निकालो तो इसके बच्चे के लिये भी छोड़ दिया करो ये जानवरों के साथ सबसे बड़ी नेकी है।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/499–ह०-885)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–8/196)

➡ हज़रत सह्ल बिन हन्जला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) एक ऊँट के पास से गुज़रे जिसका पेट कम खाना मिलने की वजह से उसकी कमर से लग गया था तो आपने फ़रमाया कि इन बे जुबान जानवरों के बारे में अल्लाह से डरो जब इन पर सवारी करो तो भले अन्दाज़ में और खिलाओ तो भी उम्दाह तरीक़े से पेट भरकर खिलाओ।
(अबू दाऊद–सुनन–3/91–ह०-2548)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब तुम चारा और पानी के ज़माने में सफ़र करो तो जानवरों को ज़मीन से अपना हिस्सा लेने दो यानी जानवरों को चारा पानी वग़ैराह रास्ते में खिलाओ और कुछ वक़्त के लिये उन्हें ज़मीन पर चरने दो और जब क़ह्त में सफ़र करो तो उन पर सवार होकर जल्दी चले जाओ ताकि वहाँ से जल्दी निकल जाओ। (मुस्लिम–सहीह–05/182–ह०-4959)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब ज़मीन सरसब्ज़ (हरी भरी) हो तो अपनी सवारी से उतर जाया करो और अपने जानवर को सब्ज़ा खाने का हक़ दिया करो

और जब ज़मीन खुश्क (और बंजर) हो तो जल्दी से वहाँ से अपनी सवारी को जब तक वो ताक़तवर और चुश्त हो (उस खुश्क हिस्से से) गुज़ार लिया करो और रात के पहले हिस्से में सफ़र का आगाज़ किया करो क्योंकि रात को ज़मीन लपेट दी जाती है।
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–6/707–ह०-10342, 10343)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/1028–ह०-3618)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जानवरों पर तब सवार हो जब वो सहीह सालिम हों और उन्हें अपनी कुर्सियाँ न बनालो। (इब्ने हिब्बान–सहीह–6/558–ह०-5619)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–6/705–ह०-10335, 10336)
(दारमी–सुनन–2/436–ह०-2710)

–: जानवरों पर रहम करना :–

➡ हज़रत कुर्रा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि एक आदमी ने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ की कि मैं बकरी ज़िब्हा करते वक़्त रहम नहीं करता तो आपने फ़रमाया कि अगर तू उस पर रहम करेगा तो अल्लाह तअ़ाला तुझ पर रहम करेगा आपने ये दो मर्तबा फ़रमाया।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/197–ह०-378)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैं एक ऊँट पर सवार थी वो बेक़ाबू था मैंने उसे मारना शुरु किया तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि–

नरमी करो क्योंकि जिस चीज़ में नरमी होती है उसमें उ़म्दगी, खूबसूरती होती है और ये जिससे निकल जाती है उसे ऐ़बदार बना देती है।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/232–ह०-482)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो रहम से काम ले अगरचा वो जानवर पर रहम करे तो रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला उस पर रहम फ़रमायेगा।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/199–ह०-386)

जानवरों के मुँह पर दाग़ने की मुमानियत

➡हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास से एक गधा गुज़रा जिसके मुँह को दाग़ा गया था तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की उस पर लाअ़नत हो जिसने इसे दाग़ा है।
(मुस्लिम–सहीह–5/312–ह०-5552)
(अबू दाऊद–सुनन–3/99–ह०-2564)
(मुस्नद अहमद–6/117–ह०-14513)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/122–ह०-175)

जानवरों पर रसूलुल्लाह की शफ़क़त

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाअ़फ़र रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) एक अन्सारी के बाग़ में दाख़िल हुये तो वहाँ एक ऊँट था जब उसने रसूलुल्लाह

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को देखा तो वो रो पड़ा और उसकी आँखों से आँसू बह निकले आप उसके पास तशरीफ़ ले गये और उसके सर पर दस्ते शफ़क़त फेरा तो वो ऊँट खामोश हो गया फिर आपने दरयाफ़्त फ़रमाया कि इस ऊँट का मालिक कौन है तो अन्सार का एक नौजवान हाज़िरे ख़िदमत हुआ और अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह ये मेरा ऊँट है आपने फ़रमाया क्या तुम इस बेजुबान जानवर के मुआ़मले में अल्लाह तआ़ला से नहीं डरते जिसका अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें मालिक बनाया है इसने मुझसे शिकायत की है कि तुम इसे भूका रखते हो और इससे बहुत ज़्यादा काम लेते हो। (अबू दाऊद–सुनन–3/91–ह०-2549)
(मुस्नद अहमद–1/708–ह०-1754)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/1832–ह०-6787)

चार क़िस्म के जानवरों को मारने की मुमानियत

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने 4 चार क़िस्म के जानवरों को मारने से मनाअ़ फ़रमाया है च्यूँटी, शहद की मख्खी, हुदहुद व चिड़िया (अबू दाऊद–सुनन–4/907–ह०-5267)

–: मेढक को मारने की मुमानियत :–

➡ हज़रत अ़ब्दुर्ररहमान बिन उ़स्मान रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मेढक को क़त्ल करने से मना फ़रमाया। (अबू दाऊद–सुनन–4/908–ह०-5269)

–: जानदार को जलाने की मुमानियत :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने चीटियों का एक बिल देखा जिसे हमने जला दिया था तो आपने फ़रमाया कि इसे किसने जलाया है हम अ़र्ज़ गुज़ार हुये ऐ अल्लाह के रसूल हमने जलाया है आपने फ़रमाया कि आग के साथ अ़ज़ाब देना आग के पैदा करने वाले के सिवाए किसी के लिये भी र'वा नहीं है और एक रिवायत में है आपने फ़रमाया कि बन्दे के लिये ज़ैब नहीं देता कि अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब किसी को दे।

(अबू दाऊद–सुनन–3/167–ह०-2675)
(मुस्नद अहमद–2/647–ह०-4018)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अलमुसन्नफ़–5/213–ह०-9414)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि साबिक़ा अम्बिया किराम में से एक नबी को किसी च्यूँटी ने काट लिया तो उनके हुक्म से च्यूँटियों का बिल जला दिया गया फिर अल्लाह तआ़ला ने उन पर वही भेजी कि तुझे तो एक च्यूँटी ने काटा था लेकिन तूने तो उनके पूरे गिरोह को ही जला डाला जो अल्लाह तआ़ला की तस्बीह किया करती थीं।

(बुख़ारी–सहीह–3/329–ह०-3019)
(मुस्लिम–सहीह–5/387–ह०-5849)
(नसाई–सुनन–3/254–ह०-4365)
(अबू दाऊद–सुनन–4/907–ह०-5266)

चिड़ियों को नाहक़ क़त्ल करना बड़ा गुनाह है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने किसी चिड़िया या उससे बड़े किसी जानवर को नाहक़ बिला वजह मार डाला तो वो चिड़िया रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला की बारगाह में फ़रियाद करेगी और अ़र्ज़ करेगी ऐ अल्लाह फुलां शख़्स ने मेरा बिला वजह क़त्ल किया था और क़यामत के दिन उसके क़त्ल की पुरसिश होगी (पस हमें चाहिये कि हम हर जानवर के साथ अच्छा बरताव करें और न किसी को नाहक़ मारें और न ही किसी का नाहक़ क़त्ल करें) (नसाई–6/385–ह०-4452)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/422–ह०-1176)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–6/760–ह०-5894)

–: चिड़ियों के साथ अच्छा सुलूक :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक सफ़र में हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ थे आप कज़ाये हाजत के लिये गये तो हमने एक चिड़िया देखी उसके साथ दो बच्चे भी थे तो हमने उसके दोंनों बच्चे पकड़ लिये तो चिड़िया आयी और अपने दोंनों बच्चों के ऊपर इर्द गिर्द मंडराने लगी कि इतने में रसूलुल्लाह तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कि किसने इस चिड़िया के बच्चों को परेशान किया है इसके बच्चों को छोड़ दो।
(अबू दाऊद–सुनन–3/167–ह०-2675, 5268)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) एक मक़ाम पर तशरीफ़ ले गये तो एक आदमी ने चिड़िया के अन्डे ले लिये वो चिड़िया रसूलुल्लाह के सरे अनवर पर फड़फड़ाने लगी आपने फ़रमाया कि इस चिड़िया के अन्डे लेकर किसने इसको ग़मज़दा किया है एक शख़्स ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह मैंने इसके अन्डे उठाये हैं आपने फ़रमाया कि इस पर रहम करते हुये इसके अन्डे वापस करदो।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/199–ह०-387)

कुत्ते को पानी पिलाने के सबब मग़फिरत कर दी गई

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक कुत्ता कुऐं के गिर्द फिर रहा था क़रीब था कि वो प्यास से मर जाये कि अचानक बनी इसराईल की एक बदकार औ़रत ने उसे देख लिया तो उसने अपना मोजा उतारा और उस मोजे से पानी निकालकर उस कुत्ते को पिला दिया उस के इस अ़मल की वजह से उसकी मग़फ़िरत कर दी गई
(बुख़ारी–सहीह–3/612–ह०-3467)
(मुस्लिम–सहीह–5/389–ह०-5859)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक आदमी रास्ते में चल रहा था उस दौरान में उसे शिद्दत की प्यास लगी उसने एक कुआँ पाया और उसने पानी पिया फिर

उसने एक कुत्ता देखा जो हांप रहा था और प्यास की वजह से तरी चाट रहा था उस शख़्स ने ख़्याल किया इस कुत्ते को प्यास की वजह से वही तकलीफ़ पहुँची होगी जो मुझे पहुँची थी तो उस शख़्स ने अपने जूते में कुऐं से पानी निकाला और कुत्ते को पिला दिया अल्लाह तआ़ला ने उसके अ़मल की क़दर करते हुये उसे बख़्श दिया सहाबा किराम ने अ़र्ज़ की ऐ अल्लाह के रसूल क्या हमे जानवरों के साथ अच्छा बरताव करने का भी अज्र मिलेगा आप ने फ़रमाया हाँ तुम्हे हर तर जिगर रखने वाले से अच्छा बरताव करने का अज्र मिलेगा।
(बुख़ारी–सहीह–5/589–ह०-6009)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/198–ह०-383)

–: बिल्ली की वजह से अ़ज़ाब :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक औ़रत को एक बिल्ली की वजह से अ़ज़ाब दिया गया कि उस औ़रत ने एक बिल्ली को किसी जगह बन्द कर दिया था हत्ता कि वो भूक से मर गई वो औ़रत इस वजह से दोज़ख़ में दाख़िल की गई फिर आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उससे फ़रमायेगा कि तूने उसे बाँधा तो न उसे खिलाया न पिलाया और न ही खुला छोड़ा कि वो खुद खा लिया करती।
(बुख़ारी–सहीह–2/634–ह०-2365)
(मुस्लिम–सहीह–5/388–ह०-5852)
(इब्ने माजा–सुनन–3/387–ह०-4256)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/198–ह०-384)

–: आदाब और अख़लाक़े हसना :–

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
और (याद करो) जब हमने औलादे याअ़कूब से पुख़्ता वाअ़दा लिया कि अल्लाह के सिवा किसी की इ़बादत न करना और माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक करना और क़राबत दारों और यतीमों और मुहताजों के साथ भी भलाई करना और आ़म लोगों से (नरमी, खुश खुल्क़ी के साथ) नेकी की बात कहना और नमाज़ क़ायम रखना और ज़कात देते रहना। (सूरह–बक़राह–2/83)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
(साइल से) नरमी के साथ गुफ़्तगू करना और दरगुज़र करना उस सद्क़े व ख़ैरात से बेहतर है जिसके बाअ़द (साइल को) ईज़ा पहुँचाई जाये और अल्लाह तआ़ाला बे नियाज़ बड़ा हिल्म वाला है। (सूरह–बक़राह–2/263)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
और उस शख़्स से ज़्यादा खुश गुफ़्तार कौन हो सकता है जो अल्लाह की तरफ़ बुलाये और नेक अ़मल करे और कहे कि बेशक मैं (अल्लाह तआ़ाला व उसके रसूल के) फ़रमां बरदारों में से हूँ और नेकी और बदी बराबर नहीं हो सकती और बुराई को बेहतर (तरीक़े) से दूर किया करो सो नतीजा तन वो शख़्स कि तुम्हारे और जिसके दरमियान दुश्मनी थी वो गरम जोश दोस्त हो जायेगा। (सूरह–फुस्सिलत/हामीम सज्दा–41/33, 34)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बिला शुबा मोमिन अपने हुस्ने अख़्लाक़ (उ़म्दाह आदात) की बिना पर रोज़ादार व शब बेदारी करने वालों का दर्जा हासिल कर लेता है।
(अबू दाऊद–सुनन–4/643–ह०-4798)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/600–ह०-480)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–6/217–ह०-7997)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/163–ह०-287)

क़यामत के दिन मीज़ान पर खुल्क़े हसन भारी अ़मल होगा

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मीज़ान में खुल्क़े हसन से ज़्यादा कोई चीज़ भारी नहीं होगी। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1067–ह०-2002)
(अबू दाऊद–सुनन–4/644–ह०-4799)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–06/333–ह०-7919)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/600–ह०-481)

अच्छे अख़्लाक़ रसूलुल्लाह की कुर्बत का बाइस बनेंगे

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तुम में से मेरे नज़दीक और बहुत प्यारे और बहुत क़रीब बैठने वाले वो लोग हैं जिनके अख़्लाक़ अच्छे हैं और तुममें से रोज़े क़यामत मेरे ज़्यादा दुश्मन और दूर तर

बैठने वाले बड़े बातूनी और बढ़ाई मारने वाले बकवास करने वाले बद अख़्लाक़ मुताकब्बिर हैं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1074–ह०-2018)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/603–ह०-485)

–: खुश अख़्लाक़ पर आग हराम है :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या मैं तुम्हें ऐसे आदमी के बारे में न बताऊँ जो आग पर हराम है और आग उस पर हराम है ये वो शख़्स है जो नरम दिल और खुश अख़्लाक़ है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/297–ह०-2489)
(मुस्नद अहमद–1/415–ह०-3938)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–10/231–ह०-562)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/353–ह०-2697)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–2/215–ह०-469)

–: नरमी हर चीज़ को ज़ीनत देती है :–

➡ हज़रत मिक़दाम बिन सुरैह अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि नरमी इख़्तियार करो बिला शुबा जिस चीज़ में नरमी हो तो वो उसे मुज़य्यन और खूबसूरत बना देती है और जिस चीज़ से नरमी निकल जाये वो उसे बदसूरत बना देती है।
(अबू दाऊद–सुनन–4/648–ह०-4808)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु

तआला अन्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब किसी शख़्स में नरमी हो तो वो उसकी ज़ीनत हो जाती है और जब नरमी निकल जाये तो वो ऐ़ब हो जाता है। (मुस्लिम–सहीह–6/213–ह०-6602)

अल्लाह तआला खुद भी नरम है और नरमी को पसन्द फ़रमाता है

➡उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ आयशा अल्लाह तआला खुद भी नरम है और नरमी (व खुश खुल्क़ी) को पसन्द फ़रमाता है और नरमी पर जो अता करता है वो सख़्ती या किसी और चीज़ पर अता नहीं करता।
(बुख़ारी–सहीह–5/594–ह०-6024)
(मुस्लिम–सहीह–6/213–ह०-6601)
(इब्ने माजा–सुनन–3/186–ह०-3688)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/457–ह०-2701)
(अबू दाऊद–सुनन–4/648–ह०-4807)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/843–ह०-3682)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ्फ़ल रज़िअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला नरमी से काम लेता है और नरम रवैया ही पसन्द फ़रमाता है और आदमी को हालते नरमी में वो कुछ देता है जो सख़्त रवैया में नहीं देता।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/231–ह०-478)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस चीज़ में उखड़ पन होता है वो उसे बदनुमा बनाता है और अल्लाह तआ़ला नरम रवैया अपनाना व नरमी वाले को पसन्द फ़रमाता है। (अल अदब अल मुफ़रद-1/229-ह०-472)

अच्छा अख़्लाक़ नबूवत के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अच्छी आदत और इख़राजात में मेयाना र'वी नबूवत के सत्तर हिस्सों में से एक हिस्सा है।
(इमाम बुख़ारी-अल अदब अल मुफ़रद-1/230-ह०-474)

जो नरमी से महरुम वो हर भलाई से महरुम

➡ हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स नरमी से महरुम है वो हर भलाई से महरुम है।
(मुस्लिम-सहीह-6/212-ह०-6598)
(अबू दाऊद-सुनन-4/649-ह०-4809)
(इब्ने माजा-सुनन-3/186-ह०-3687)
(इमाम बुख़ारी-अल अदब अल मुफ़रद-1/228-ह०-468)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसे नरम र'वी में से हिस्सा मिल गया उसे भलाई का हिस्सा मिल गया और जो नरमी से महरुम रहा वो भलाई हासिल करने से भी महरुम रहा रोज़े क़यामत तराजू में सबसे भारी व वज़नी चीज़ हुस्ने खुल्क़ होगा और अल्लाह तआ़ाला फुहश गो और बद कलाम से नाराज़ रहता है।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/229–ह०-370)

अच्छे अख़लाक़ वालों से अल्लाह मुहब्बत करता है

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
ये वो लोग हैं जो फ़राख़ी और तंगी (दोंनों हालतों) में ख़र्च करते हैं और गुस्सा ज़ब्त करने वाले हैं व लोगों से (उनकी ग़लतियों पर) दर गुज़र करने वाले हैं और अल्लाह तआ़ाला एहसान करने वालों से मुहब्बत करता है। (सूरह–आले इमरान–03/134)

अच्छे अख़लाक़ वालों पर अल्लाह तआ़ाला की रहमत

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
ज़मीन में उसके संवर जाने (यानी मुल्क का माहौले हयात दुरस्त हो जाने) के बाअ़द फ़साद अंगेज़ी न करो और (उसके अ़ज़ाब से) डरते हुये और (उसकी रहमत की) उम्मीद रखते हुये उस (अल्लाह) से दुआ़ करते रहा करो बेशक अल्लाह तआ़ाला की रहमत एहसान शिआ़र (यानी नेकोकारों) के क़रीब होती है।
(सूरह–आअ़राफ़–7/56)

सब मोमिनों में बेहतर वो है जिसके अख़लाक़ बेहतर हैं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से एक अन्सारी ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह तमाम मोमिनों में कौन सा मोमिन अफ़ज़ल है तो आपने फ़रमाया जिसके अख़लाक़ सबसे अच्छे हों फिर अ़र्ज़ किया गया कि उनमें से अ़क़्लमंद कौन है आपने फ़रमाया जो मौत को कसरत से याद करता हो और मौत के बाअ़द के लिये अच्छी तैयारी करता हो वही अ़क़्लमंद है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/389–ह०-4259)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से बेहतर वो शख़्स है जो अख़लाक़ के ऐतबार से बेहतर है।
(बुख़ारी–सहीह–5/596–ह०-6029, 6035)
(मुस्लिम–सहीह–4/467–ह०-6033)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सब मोमिनों में कामिल तर ईमान वाले वो हैं जिनके अख़लाक़ अच्छे हैं और सबमें बेहतर वो हैं जो अपनी बीवियों के हक़ में बेहतर हैं। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/640–ह०-1162)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/599–ह०-479)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सबसे बढ़कर कामिल ईमान वाला वो है जो अख़लाक़ में सबसे बढ़कर है।
(अबू दाऊद–सुनन–4/556–ह०-4682)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/400–ह०-2612)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–1/14–ह०-01, 173)

नेक सीरत अच्छी आदात नबूवत के पच्चीस हिस्सों में से एक हिस्सा

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि नेक सीरत अच्छी आदात अपनाना और मेयाना र'वी नबूवत के पच्चीस हिस्सों में से एक हिस्सा है।
(अबू दाऊद–सुनन–4/632–ह०-4776)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/369–ह०-813)

हुस्ने ख़ुल्क़ की वजह से जन्नत और बुरी बातों के सबब दोज़ख़

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया अक्सर लोग किस चीज़ की वजह से जन्नत में जायेंगे तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के डर की वजह से और हुस्ने ख़ुल्क़ की वजह से फिर आपसे अ़र्ज़ किया गया अक्सर लोग किस चीज़ की वजह से दोज़ख़ में जायेंगे आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुँह और शर्मगाह की वजह से मुँह से

बुरी बातें निकालेंगे और शर्मगाह से हराम काम करेंगे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/385–ह०-4246)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1068–ह०-2004)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/579–ह०-476)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/167–ह०-297)

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं ज़िम्मेदार हूँ जन्नत की जानिब में एक महल का उस शख़्स के लिये कि जो झगड़ा छोड़ दे अगरचा वो हक़ पर हो और मैं ज़िम्मेदार हूँ जन्नत के दरमियान में एक महल का उस शख़्स के लिये जो झूट छोड़ दे और मैं ज़िम्मेदार हूँ जन्नत की आअ़ला मनाज़िल में एक महल का उसके के लिये जो अपने अख़लाक़ उ़म्दाह बनाले।
(अबू दाऊद–सुनन–4/644–ह०-4800)

–: बद खुल्क़ जन्नत में नहीं जायेगा :–

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बद खुल्क़ जन्नत में नहीं जायेगा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1045–ह०-1946)

➡ हज़रत हारिसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मरवी है कि हुजूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बद खुल्क़ व तकब्बुर से चलने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।
(अबू दाऊद–सुनन–6/645–ह०-4801)

-: बख़ील और बद खुल्क़ी :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बुख़्ल की आ़दत से बचो क्योंकि तुमसे पहली क़ौमों को इसी ने हलाक किया था उन्होंने क़त्ल व ग़ारत की थी यहाँ का जुल्म क़यामत में अंधेरा बन जायेगा।
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/230–ह०-476)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सख़ी अल्लाह के क़रीब और जन्नत के क़रीब है और दोज़ख़ से दूर है और बख़ील (कंजूस) अल्लाह तआ़ला से दूर है और दोज़ख़ के क़रीब है और अल्लाह तआ़ला को जाहिल सख़ी प्यारा है आ़बिद बख़ील से।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/1051–ह०-1961)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दो ख़सलतें मोमिन में कभी जमाअ़ नहीं हो सकती एक बुख़्ल और दूसरी बद खुल्क़ी। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/1052–ह०-1962)
(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/162–ह०-285)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन भोला भाला

और सख़ी होता है और फ़ाजिर फ़रेबी और बख़ील- होता है। (तिर्मिज़ी-सुनन-1/1052-ह०-1964)

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि फ़रेब करने वाला और बख़ील (कंजूस) और एहसान रखने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा। (तिर्मिज़ी-सुनन-1/1052-ह०-1963)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की ख़ातिर जिहाद में उड़ने वाला गुबार और जहन्नम का धुआँ बन्दे में जमाअ़ नहीं हो सकते यूँ ही कंजूसी और ईमान बन्दे में कभी जमाअ़ नहीं होंगे।
(इमाम बुख़ारी-अल अदब अल मुफ़रद-1/162-ह०-284)

-: बद अख़लाक़ी से लोग दूर होते हैं -:

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
(ऐ हबीब) पस अल्लाह तआ़ला की कैसी रहमत है कि आप उनके लिये नरम दिल हैं और अगर आप तुन्द ख़ू (और) सख़्त दिल होते तो लोग आपके पास से दूर हो जाते सो आप उनसे दर गुज़र फ़रमाया करें और उनके लिये बख़्शिश माँगा करें।
(सूरह-आले इमरान-3/159)

-: लोगों से खुश मिज़ाजी से मिलना :-

➡ हज़रत अबू जुरई जाबिर बिन सुलेम (रज़िअल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी को गाली न दो और किसी नेकी को हक़ीर मत जानो और अपने भाई से बात करो तो हुस्ने खुल्क़ व खुश दिली से बात किया करो बिला शुबाह ये नेकी है और अपनी चादर (यानी सलवार, पाजामा) टखनों तक रखा करो व टखनों से नीचे न रखो बेशक ये तकब्बुर है और अल्लाह तआ़ला तकब्बुर को पसंद नहीं करता और अगर कोई शख़्स तुम्हें बुरा भला कहे और तुम्हें तुम्हारी किसी बात पर आ़र (शर्म) दिलाये तो तुम उस के ऐ़ब पर उसे आ़र न दिलाना क्योंकि बिला शुबा इस का वबाल उसी पर होगा।
(अबू दाऊद–सुनन–4/165–ह०-4084)

अपने मातहत के साथ अच्छा बरताव करना बाइसे बरकत है

➡ हज़रत राफ़ेअ़ बिन मकीस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अपने मातहत व ज़ेरे मिल्कियत के साथ अच्छा बरताव करना बाइसे बरकत है और बद खुल्क़ी नहूसत है।
(अबू दाऊद–सुनन–4/850–ह०-5162)

–: ख़ादिम को मुआ़फ़ करना :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि एक शख़्स हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के

रसूल हम ख़ादिम को किस क़दर मुआ़फ़ करे तो आप ने फ़रमाया कि ख़ादिम को हर रोज़ सत्तर बार मुआ़फ़ करो। (अबू दाऊद–सुनन–4/851–ह०-5164)

–: ख़ादिम के चेहरे पर न मारना :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुममें से कोई अपने ख़ादिम को मारे तो उसके चेहरे पर न मारे। (इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/121–ह०-174)

–: ख़ादिम पर ख़र्च करना सदक़ा है :–

➡ हज़रत मिक्दाम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो कुछ तुम अपने आप पर ख़र्च करते हो वो सद्क़ा है और जो कुछ तुम अपने बीवी बच्चों व ख़ादिम पर ख़र्च करो वो सद्क़ा है। (इमाम बुख़ारी–अदब अल मुफ़रद–1/129–ह०-195)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने सद्क़ा देने का हुक्म दिया तो एक आदमी ने अ़र्ज किया कि मेरे पास एक दीनार है आपने फ़रमाया अपने आप पर ख़र्च करो उसने कहा मेरे पास एक और है तो आपने फ़रमाया अपनी बीवी पर ख़र्च करो फिर उसने कहा मेरे पास एक और भी है आपने फ़रमाया उसे अपने ख़ादिम पर ख़र्च कर दो (इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/130–ह०-197)

-: ख़ादिम को अपने साथ खिलाना :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम्हारा कोई ख़ादिम तुम्हारे लिये खाना लाये तो उसे भी अपने साथ बिठाओ अगर वो साथ खाने से इन्कार भी करे तो भी उसे कुछ न कुछ ज़रुर खिलाओ।

(इमाम बुख़ारी–अल अदब अल मुफ़रद–1/131–ह०-200)

बदतर वो जिसकी बुराई से लोग मुलाक़ात छोड़ दें

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि एक शख़्स ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अन्दर आने की इजाज़त मांगी जब आपने उसे देखा तो फ़रमाया कि ये शख़्स क़बीले का बुरा आदमी और बुरा बेटा है फिर जब वो बैठ गया तो हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) उससे खुश मिज़ाजी और कुशादा चेहरे से मिले जब वो चला गया तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा ने आपसे अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह जब आपने उसे देखा तो उसके मुताअ़ल्लिक़ ऐसा ऐसा फ़रमाया और जब आप उससे मिले तो खुश मिज़ाजी और कुशादा चेहरे से मिले आपने फ़रमाया कि ऐ आयशा तुमने मुझे बद गो कब देखा है नीज़ आपने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला के यहाँ सब लोगों में बदतरीन आदमी वो होगा कि जिसके शर और बुराई की वजह से लोग मेल मुलाक़ात छोड़ देंगे।

(बुख़ारी–सहीह–5/597–ह०-6032, 6131)

रसूलुल्लाह से कुछ मांगा जाये आप कभी मनाअ़ नहीं करते थे

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से मर'वी है कि एक ख़ातून हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में एक लुंगी लेकर आयी जो हाशिये दार थी उसने अ़र्ज़ की कि ये लुंगी आपके पहनने के लिये लायी हूँ रसूलुल्लाह ने वो लुंगी उससे कुबूल करली और उस वक़्त आपको उसकी ज़रुरत भी थी फिर आपने उसे ज़ैबे तन फ़रमाया फिर एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ये बड़ी उ़म्दाह लुंगी है आप मुझे इनायत फ़रमादें आपने फ़रमाया हाँ तुम ले लो जब रसूलल्लाह तशरीफ़ ले गये तो उसके साथियों ने उसे मलामत किया और कहा तुमने अच्छा नहीं किया जब तुमने देख लिया था कि रसूलल्लाह ने उसे कुबूल फ़रमाया और आपको उसकी ज़रुरत भी थी इसके बावुजद भी तुमने वो चादर आपसे मांग ली और तुम्हें ये माअ़लूम था कि आपसे जब कोई चीज़ मांगी जाती तो आप कभी देने से इन्कार नहीं करते तो उस ने कहा मैं तो सिर्फ़ इसकी बरकत का उम्मीद वार हूँ क्योंकि रसूलल्लाह इसे ज़ैबे तन कर चुके हैं मेरी ग़रज़ ये थी कि मुझे इस चादर में कफ़न दिया जाये।
(बुख़ारी–सहीह–5/599–ह०-6036)

रसूलुल्लाह अपने घर के काम करते थे

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अपने घर के काम

काज खुद किया करते थे और जब नमाज़ का वक़्त हो जाता तो नमाज़ के लिये खड़े हो जाते।
(बुख़ारी–सहीह–5/600–ह०-6039)

–: सबसे अच्छी सीरत रसूलुल्लाह की :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं यक़ीनन सबसे अच्छा कलाम अल्लाह तआ़ला की किताब है और सबसे बेहतरीन सीरत हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की है
(बुख़ारी–सहीह–5/626–ह०-6098)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैं दस साल तक रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में रहा हूँ लेकिन आपने कभी उफ़ तक नहीं कहा और न ही कभी ये कहा कि तुमने फुलां काम क्यों किया और फुलां काम क्यों नहीं किया।
(बुख़ारी–सहीह–5/600–ह०-6038)

दूसरे के घरों में दाख़िल होने के अहकाम व आदाब

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो अपने घरों के सिवा दूसरे घरों मे दाख़िल न हुआ करो यहाँ तक कि तुम उनसे इजाज़त ले लो और उनके रहने वालों को (दाख़िल होते ही) सलाम कहा करो ये तुम्हारे लिये बेहतर नसीहत है ताकि तुम (उसकी हिकमतों में) ग़ौर व फ़िक्र करो फिर अगर तुम उन (घरों में) किसी शख़्स को मौजूद न पाओ तो तुम

उनके अन्दर मत जाया करो यहाँ तक कि तुम्हें (इस बात की) इजाज़त दी जाये और अगर तुमसे कहा जाये कि वापस चले जाओ तो तुम वापस पलट जाया करो ये तुम्हारे हक़ में बड़ी ही पाकीज़ा बात है और अल्लाह तआला उन कामों से खूब आगाह है जो तुम करते हो (सूरह–नूर–24/27, 28)

➡ हज़रत हुज़ैल (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) से मर‘वी है कि हज़रत साअद (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) आये और हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) के दर‘वाज़े के ऐन सामने खड़े हो गये और अन्दर आने की इजाज़त तलब की तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इस तरफ़ हटकर खड़े हो या उस तरफ़ खड़े हो और इजाज़त लेने का हुक्म नज़र की वजह से है। (कि कोई शख़्स अन्दर न झांके यानी दर‘वाज़े के बाँयी या दाँयी जानिब इस तरह खड़ा हो कि नज़र घर के अन्दर न पड़े फिर आवाज़ देकर अन्दर आने की इजाज़त तलब करे। (अबू दाऊद–सुनन–4/856–ह०-5174)

➡ हज़रत रिबई से रिवायत है कि एक शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम के घर के अन्दर आने की इजाज़त चाही जबकि आप घर के अन्दर थे उसने कहा क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिही वसल्लम) ने अपने ख़ादिम से फ़रमाया कि तुम उसके पास जाओ और उसे इजाज़त तलब करने का अदब सिखाओ तो ख़ादिम ने उससे कहा कि इस तरह कहे कि अस्सलामु अलैकुम क्या मैं घर के अन्दर आ सकता हूँ फिर उस शख़्स ने कहा अस्सलामु अलैकुम क्या मैं घर के अन्दर

आ सकता हूँ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिही वसल्लम ने उस शख़्स को घर के अन्दर आने की इजाज़त दे दी (अबू दाऊद–सुनन–4/858–ह०-5177)

–: इजाज़त तीन बार तलब करना :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब कोई शख़्स तीन बार इजाज़त माँगे और उसे इजाज़त न मिले तो उसे चाहिये कि वो वापस लौट जाये।
(अबू दाऊद–सुनन–4/859–ह०-5180)

तीन बार इजाज़त तलब करना चाहिये इससे ज़्यादा ख़िलाफ़े अदब है कि न माअ़लूम घर वाला किसी ख़ास काम में मशगूल हो या बीमार हो या आराम कर रहा हो तो उसे परेशान नहीं करना चाहिये इसके अ़लावा बार बार दस्तक देना या घन्टी बजाने में भी बेअदबी या बत्तमीज़ी का मुज़ाहरा न किया जाये बाअ़ज़ लोगों को देखा गया गया है कि वो इतनी ज़ोर से दस्तक देते हैं कि अड़ोस पड़ोस के लोगों का सुकून भी बर्बाद हो जाता है और बाअ़ज़ लोग घन्टी इस तरह तसलसुल से बजाते हैं जैसे उन्हें मुर्दों या बहरों को सुनाना है।

दर‘वाज़े पर पूछा जाये कौन तो मैं कहने की मुमानियत

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से बयान करते हैं कि मैं अपने वालिद के कर्ज़े के सिलसिले में हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम)

के यहाँ हाज़िर हुआ तो मैंने दरवाज़े पर दस्तक दी तो आपने पूछा कौन है मैंने जवाब में कहा मैं हूँ तो आप ने फ़रमाया कि मैं हूँ मैं हूँ गोया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इस अंदाज़ को नापसंद फरमाया। (अबू दाऊद–सुनन–4/864–ह०-5187)

–: तीन औक़ात पर्दे के हैं :–

इरशादे बारी तआ़ला है:–
ऐ ईमान वालो जो गुलाम लौंडियाँ जो तुम्हारी मिल्कियत में हैं और तुममें से वो बच्चे जो अभी बालिग़ नहीं हुये उनको चाहिये कि वो तीन वक़्तों में (तुम्हारे पास आने के लिये) तुमसे इजाज़त लिया करें फ़जिर की नमाज़ से पहले और दोपहर के वक़्त जब तुम अपने कपड़े उतार कर रखा करते हो और नमाज़े इशां के बाअ़द ये तीन वक़्त तुम्हारे पर्दे के औक़ात हैं इन औक़ात के अ़लावा न तुम पर कोई गुनाह है और न उन पर (क्योंकि उन का बक़िया औक़ात में) तुम्हारे पास आना जाना लगा रहता है और तुम्हारा भी एक दूसरे के पास इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिये आयतें वाज़ेह फ़रमाता है और अल्लाह तआ़ला खूब जानने वाला हिकमत वाला है। (सूरह–नूर–24/58)

➡ हज़रत इकरिमा से मर'वी है कि इराक़ के कुछ लोगों ने कहा ऐ इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) आप इस आयते करीमा के बारे में क्या फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान 'ऐ ईमान वालो जो गुलाम लौंडियाँ जो तुम्हारी मिल्कियत में हैं और तुममें से वो बच्चे जो अभी बालिग़ नहीं हुये उनको चाहिये कि वो तीन वक़्तों में तुम्हारे पास आने के लिये तुमसे इजाज़त

लिया करें' तो हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने फ़रमाया बिला शुबा अल्लाह तआ़ला हलीम और मुसलमानों पर रहम करने वाला है और पर्दे को पसन्द फ़रमाता है जब ये आयत उतरी उस वक़्त लोगों के घरों में पर्दे होते थे ओटें नहीं होती थीं और बाअ़ज़ औक़ात आदमी अपनी अहलिया से सुहबत कर रहा होता तो कोई ख़ादिम आ जाता या बच्चा या बच्ची आ जाती तो अल्लाह तआ़ला ने उन्हें पर्दे के औक़ात में इजाज़त लेने का हुक्म दिया है। (अबू दाऊद–सुनन–4/867–ह०-5192)

–: सबसे उ़म्दाह अख़लाक़ :–

➡ हज़रत उ़क़बा बिन आ़मिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ उ़क़बा क्या मैं तुम्हें दुनिया और आख़िरत में सबसे अच्छे अख़लाक़ के बारे में न बताऊँ फिर फ़रमाया कि जो तुझसे क़तअ़ तआ़ल्लुक़ी करे तू उससे मिल और तआ़ल्लुक़ जोड़े रख और जो तुझे महरुम करे तू उसे अ़ता कर और जो तुझ पर जुल्म करे तू उसे मुआ़फ़ कर और जो शख़्स ये चाहता हो कि उसकी उ़म्र में इज़ाफ़ा और रिज़्क़ में बरकत हो तो उसे चाहिये कि रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक करे। (हाकिम–अल मुस्तदरक–5/794–ह०-7285)

दोस्त बनाने से पहले उसके दीनी मुआ़मलात पर ग़ौर करना

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया आदमी अपने दोस्त–

के दीन पर होता है इसलिये दोस्ती करने से पहले उस के दीनी मुआ़मलात ज़रुर देख लेना चाहिये और उन पर ग़ौर कर लेना चाहिये।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/812–ह०-7319, 7320)

–: हर जोड़ पर सदक़ा वाजिब है :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर दिन जिसमें सूरज तुलूअ़ होता है आदमी के हर जोड़ पर सद्क़ा वाजिब होता है तो दो आदमियों में इन्साफ़ कर देना ये भी एक सद्क़ा है किसी की मदद कर देना इतनी कि उसे सवारी पर चढ़ा दिया या उसका माल लाद दिया ये भी एक सद्क़ा है और उ़म्दाह बात कहना ये भी एक सद्क़ा है हर वो क़दम जो नमाज़ के लिये मस्जिद जाने में रखता है वो भी एक सद्क़ा है और तकलीफ़ ज़दा चीज़ रास्ते से हटा देना भी एक सद्क़ा है।
(बुख़ारी–सहीह–3/313–ह०-2989)
(मुस्लिम–सहीह–2/51–ह०-2335)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की औलाद में तीन सौ साठ हड्डियाँ और जोड़ हैं हर एक की तरफ़ से रोज़ाना सद्क़ा देना लाज़िम होता है हर अच्छी बात सद्क़ा होती है कोई अपने भाई की मदद करे तो ये सद्क़ा होगा किसी को पानी पिलाना सद्क़ा है और रास्ते से रुकावट हटा देना भी सद्क़ा है (अल अदब अल मुफ़रद–1/214–ह०-427)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया आदमी के जिस्म में तीन सौ साठ जोड़ हैं सो जिसने अल्लाह तआ़ला हम्दो सना बयान की और लाइलाहा इल्लल्लाह कहा और अस्तग़फ़िरुल्लाह कहा और लोगों की राह से तकलीफ़ ज़दा चीज़ हटा दी या अच्छी बात सिखाई या बुरी बात से रोका उन तीन सौ साठ जोड़ों की ताअ़दाद के बराबर (इस तरह के अ़मल किये) तो वो उस दिन इस तरह चलेगा कि वो खुद को दोज़ख़ की आग से दूर कर चुका होगा। (मुस्लिम–सहीह–2/350–ह०-2330)

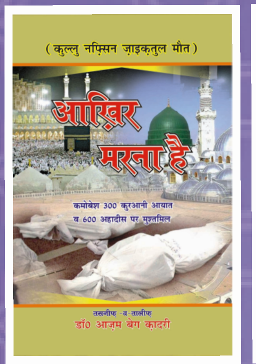
➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सुबह होती है और इन्सान के जोड़ जोड़ पर सद्क़ा वाजिब हो चुका होता है उसका अपने मिलने वाले को सलाम कहना सद्क़ा है किसी को नेकी की बात बताना सद्क़ा है बुराई से मना करना सद्क़ा है रास्ते से तकललीफ़ ज़दा चीज़ हटाना सद्क़ा है बीवी से सुहवत करना सद्क़ा है सहाबा ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह वो अपनी शहवत पूरी कर ले और वो उसके लिये सद्क़ा बने ये क्योंकर है आपने फ़रमाया कि बताओ अगर वो ये काम हराम से करे तो क्या वो गुनाहगार न होगा इसके बिल मुक़ाबिल हलाल से अपनी ख़्वाहिश पूरी करना सवाब और सद्क़ा है। (अबू दाऊद–सुनन–4/896–ह०-5243)

★★★★★

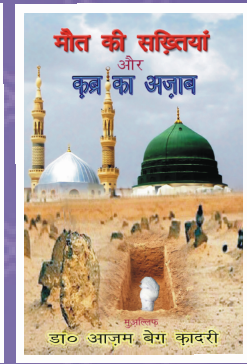
अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन अल्लाह तआ़ला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ से और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इ़नायत और रहमो करम और अह्ले बैत अत्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलियाकिराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से इस फ़क़ीर ने इस किताब की तालीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था अल्लाह तआ़ला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसाँ रखे और मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अ़ता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर और मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये– **आमीन**

और इस किताब को बराये ईसाले सवाब मुअ़ल्लिफ़ के वालिदे गिरामी मरहूम जनाब ईद मुहम्मद वारसी साहब की रुह को अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाये व अपने हबीब के सद्क़े उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये–**आमीन**

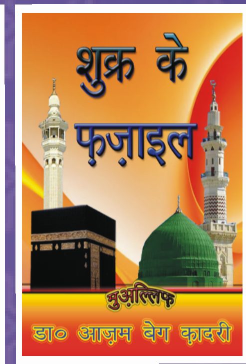
नोट– जो हज़रात अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब या अपने वालिदैन के ईसाले सवाब या दीनी तबलीग़ या सवाब पाने की नीयत से इस किताब को छपवाकर लोगों में तक़सीम करना चाहते हैं वो बराहे रास्त हम से राब्ता क़ायम करें। 9897626182, 9045442223

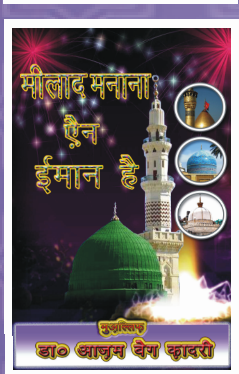


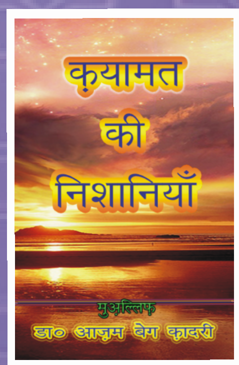














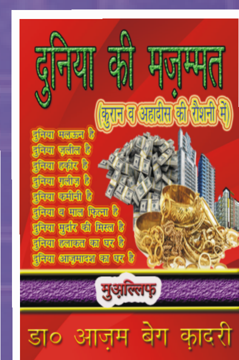




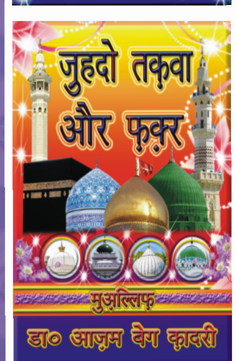




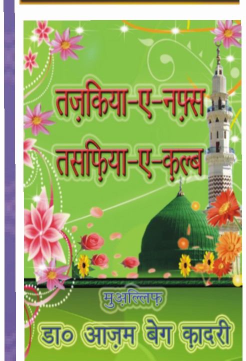


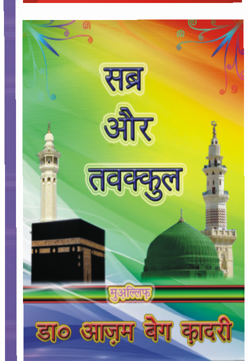


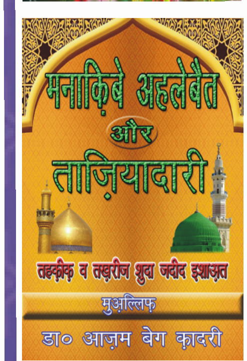














डा० आज़म बेग क़ादरी

Mob-09897626182

